राष्ट्रीय विचारों से ओतप्रोत युवा जागरण का अग्रदूत
RNI no. UPHIN45193/24/1/2014

उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्निबोधत

जय विजय
मासिक

वेबसाइट : www.jayvijay.co ई-मेल : jayvijaymail@gmail.com

वर्ष-४, अंक-२ लखनऊ नवम्बर २०१७ विक्रमी सं. २०७४ युगाब्द ५११७ पृष्ठ-३२ निःशुल्क

अयोध्या में ऐतिहासिक दिवाली, हेलीकॉप्टर से आई राम की सवारी
मुख्यमंत्री योगी ने उतारी आरती

अयोध्या। इस वर्ष अयोध्या में इतिहास की सबसे बड़ी दीवाली मनाई गयी. भगवान राम के आगमन पर अयोध्या में भव्य तैयारी की गयी और पूरे शहर को दुल्हन की तरह सजाया गया। सरयू नदी पर राम की पैड़ी में दीप उत्सव मनाया गया जिसमें लाखों दीप एक साथ जलाये गये।

अयोध्या में तैयारी ठीक वैसी ही की गयी थी, जैसी युगों पहले भगवान राम के वनवास से लौटने के बाद यहां दिवाली मनाई गई थी. यहाँ पुष्पक विमान की जगह हेलीकॉप्टर के द्वारा भगवान राम की सवारी अयोध्या में उतरी, जिसका स्वागत करते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने भगवान राम को तिलक लगाया और फिर आरती उतारी.

इस मौके पर सरयू घाट पर करीब दो लाख दिए भी जलाए गये, जिससे एक विश्व रिकार्ड ही बन गया। इसके अलावा लेजर शो के अलावा रामलीला का मंचन का कार्यक्रम भी हुआ, जिसके लिए थाईलैंड और श्रीलंका से भी कलाकार यहां पहुंचे थे।

इस मौके पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ अयोध्या के लिए कई योजनाओं की भी शुरुआत की. माना जाता है कि त्रेता युग में १४ साल का वनवास काटकर और लंका विजय करके अयोध्या लौटे भगवान राम का जोरदार स्वागत किया गया था और राम की नगरी को दीपों से सजाया गया था। ■

प्रधानमंत्री मोदी की 'मन की बात': हमारे जवान दुनिया भर में शांति स्थापित कर रहे हैं

नई दिल्ली। 'मन की बात' के ३७वें संस्करण में पीएम मोदी ने छठ पर्व पर शुभकामनाएं दीं और कहा कि छठ पर्व शुद्धि का पर्व है. उन्होंने 'खादी फॉर ट्रांसफोर्मेशन' का नया नारा दिया.

पीएम ने सुरक्षा बलों के साथ दिवाली बनाने को लेकर कहा कि यह अविस्मरणीय रहा. जब भी हमें अवसर मिले, हमें उनके अनुभव जानने चाहिए. हममें से कई लोगों को पता नहीं होगा कि हमारे जवान न सिर्फ सीमा पर बल्कि विश्व भर में शांति स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं. उन्होंने कहा कि हमारे जवान दुर्गम इलाकों में जाते हैं और कई जवानों ने जान गंवाई है.

सिस्टर निवेदिता को याद करते हुए उन्होंने कहा कि उन्होंने दुनिया भर में देश का नाम रोशन किया. १८९९ में जब प्लेग हुआ तब उन्होंने सफाई का काम किया. उन्होंने अपने स्वास्थ्य की चिंता किए बिना काम किया. वे आरामदायक जीवन जी सकती थीं लेकिन उन्होंने सेवा का रास्ता चुना.

एक सवाल के उत्तर में उन्होंने कहा कि आज बड़ा आश्चर्य होता है जब सुनते हैं कि बच्चों को भी डायबिटीज होता है. पहले ऐसे रोगों को राजरोग कहा जाता था क्योंकि ये संपन्न और ऐशोआराम वालों को हुआ करती थीं. लेकिन युवा उम्र में ये बीमारियां होने की वजह खान-पान के तरीकों में बदलाव और जीवन शैली में बदलाव के चलते हैं. हमें अपनी आदतें बदलने की जरूरत है. उन्होंने चिल्ड्रन्स डे पर बच्चों की शुभकामनाएं दीं. उन्होंने कहा कि आयुर्वेद और योग को केवल उपचार के तौर पर न देखें, बल्कि जीवन का हिस्सा बनाएं.

भारत ने एशिया कप हॉकी का खिताब जीता है और पिछले दिनों खेल जगत से अच्छी खबरें आई हैं. बैडमिंटन स्टार किंदाबी श्रीकांत ने डेनमार्क ओपन खिताब जीतकर हर भारतीय को गौरव से भर दिया. फीफा यू १७ का आयोजन हुआ. मैं भी इस इवेंट में शामिल हुआ. मैं इसमें खिलाड़ियों के जज्बे को देखकर दंग रह गया था. सबने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया.

पीएम मोदी ने कहा कि हम ४ नवंबर को गुरु नानक जयंती मनाएंगे. ३१ अक्टूबर को सरदार पटेल जयंती है. पटेल ने आधुनिक भारत की नींव रखी. पटेल ने देशवासियों को एक नयी शक्ति दी. जहां जरूरी हुआ वहां बल प्रयोग भी किया. ■

लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे पर लड़ाकू विमानों का कौशल

लखनऊ। लखनऊ-आगरा एक्सप्रेस-वे २२ अक्तूबर को कुछ देर के लिए रणक्षेत्र में बदल गया। यहां वायु सेना के बेड़े की रीढ़ माने जाने वाले प्रमुख विमानों और विशालकाय हरक्यूलिस विमान ने अपने आश्चर्यजनक कौशल का नमूना प्रस्तुत किया। हरक्यूलिस ने देशवासियों को आश्वस्त करते हुए बताया कि वे युद्ध तथा शांति के समय में किसी भी तरह की आपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

वहीं वायुसेना के जगुआर, मिराज और सुखोई जैसे लड़ाकू विमानों तथा विशाल मालवाहक विमान सी-१३० ने एक्सप्रेस-वे पर जलवा बिखेरा। ३ किमी हिस्से का हवाई पट्टी के तौर पर इस्तेमाल करते हुए विमानों ने वायु सेना की तैयारियों का नमूना पेश किया।

प्रदेश सरकार और वायु सेना के इस संयुक्त अभियान के तहत १५ लड़ाकू विमानों तथा एक

हरक्यूलिस विमान ने अपने करतब दिखाए, जिससे एक्सप्रेस-वे का यह हिस्सा जमीन से लेकर आसमान तक थर्रा उठा। एक्सप्रेस-वे के ३.३ किमी लम्बे तथा ३३ मीटर चौड़े हिस्से को विशेष रूप से इस अभ्यास के लिए तैयार किया गया था। ■

सुप्रीम कोर्ट : एससी-एसटी आरक्षण में क्रीमी लेयर क्यों नहीं?

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति (एससी/एसटी) आरक्षण में क्रीमी लेयर न होने पर सवाल उठाया है। कोर्ट ने पूछा कि क्या एससी/एसटी के सामाजिक, आर्थिक और शैक्षणिक रूप से ऊपर उठ चुके लोग अपने ही वर्ग के पिछड़े लोगों का हक नहीं मार रहे हैं? इस मामले पर लगभग आधा घंटे चली गरमागरम बहस के बीच में अदालत ने इसे संविधान पीठ को विचार के लिए भेजे जाने के भी संकेत दिये।

वास्तव में सुप्रीम कोर्ट एससी/एसटी को प्रोन्नति में आरक्षण का मुद्दा संविधानपीठ को भेजे जाने की याचिका पर सुनवाई कर रहा है। इसी सुनवाई के दौरान कोर्ट का ध्यान एससी/एसटी आरक्षण में क्रीमी लेयर लागू न होने की ओर गया।

जस्टिस कुरियन जोसेफ ने मामले में बहस कर रहीं वरिष्ठ वकील इंद्रा जयसिंह से सवाल किया कि एससी/एसटी वर्ग में आरक्षण के सहारे अब ऊपर उठ चुके लोगों को इसका लाभ क्यों मिलना चाहिए? एससी एसटी की क्रीमी लेयर को आरक्षण के लाभ से बाहर क्यों नहीं किया जाना चाहिए? ■

कार्टून यह रिश्ता क्या कहलाता है? -- मनोज कुरील

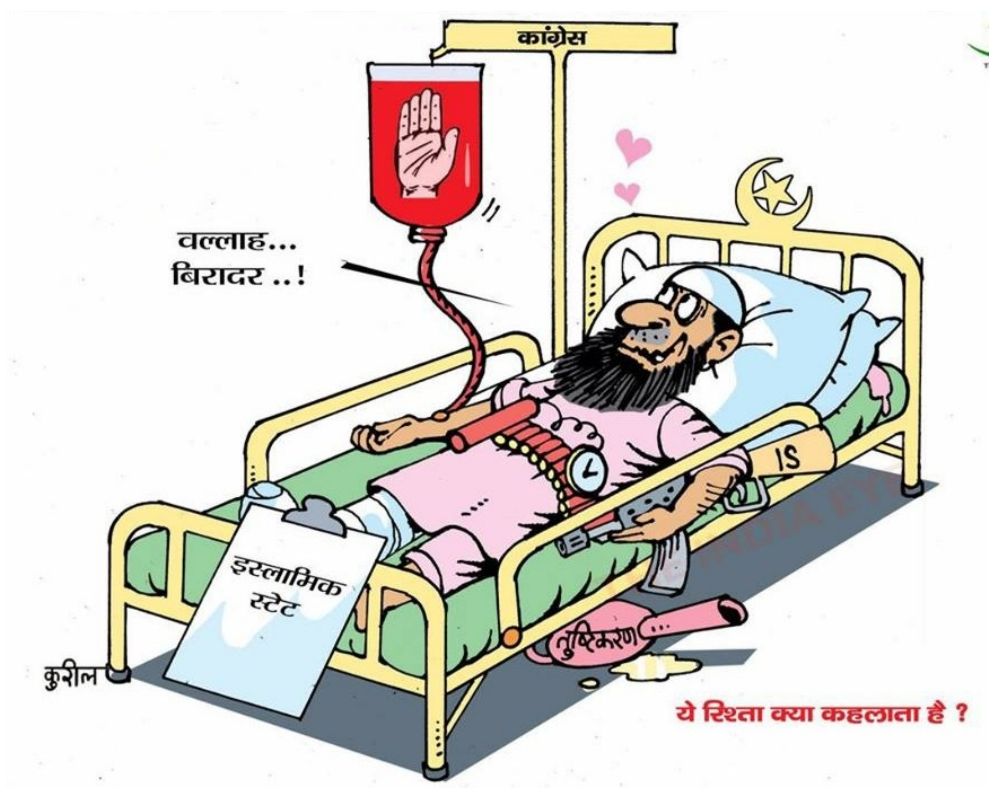

हिमाचल प्रदेश और गुजरात में विधानसभा चुनाव घोषित

नई दिल्ली। चुनाव आयोग ने हिमाचल प्रदेश की ६८ और गुजरात में विधानसभा की १८२ सीटों पर चुनावों के लिए तारीखों की घोषणा कर दी। हिमाचल प्रदेश में एक चरण में चुनाव होना है और यहां मतदान ६ नवंबर को होगा। गुजरात विधानसभा चुनाव दो चरणों में कराए जाएंगे। पहले चरण का चुनाव ६ दिसंबर (८६ विधानसभा सीटों के लिए), जबकि दूसरे चरण का चुनाव १४ दिसंबर (९३ विधानसभा सीटों के लिए) को होगा। गुजरात और हिमाचल प्रदेश, दोनों जगह वोटों की गिनती १८ दिसंबर को होगी। गोवा के बाद हिमाचल और गुजरात ऐसे राज्य होंगे जहां चुनावों में शतप्रतिशत वीवीपैट मशीनों का इस्तेमाल किया जाएगा।

मुख्य चुनाव आयुक्त एके जोती ने गुजरात चुनावों की तारीखों की घोषणा करते हुए कहा कि प्रदेश में शतप्रतिशत स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव कराए जाएंगे। वीवीपैट के अलावा गुजरात चुनावों में कुछ खास कदम उठाए जा रहे हैं। ■

पाकिस्तानी हिन्दुओं को मिले दीर्घ अवधि के वीजा

नई दिल्ली। भारत-पाक के तनावपूर्ण संबंधों के बावजूद नरेंद्र मोदी की सरकार ने ४३१ पाकिस्तानी हिंदुओं को लंबी अवधि के वीजा जारी किए हैं। ये लोग पेन व आधार कार्ड हासिल करने के साथ संपत्ति भी खरीद सकते हैं। संवेदनशील जगहों जैसे सैन्य ठिकानों के आसपास अचल संपत्ति की खरीद बिक्री की अनुमति इन लोगों को सरकार ने नहीं दी है।

गृह मंत्रालय के प्रवक्ता ने बताया कि केंद्र की नीति के अनुसार पाकिस्तान के अलावा अफगानिस्तान, बांग्लादेश में रहने वाले हिंदू, सिख, बौद्ध, जैन, पारसी व ईसाई समुदाय के लोगों को भी लंबी अवधि के वीजा जारी किए गए हैं। सरकार ने इन लोगों को काम धंधा करने के लिए अन्य राज्य में जाने की अनुमति दी है। ये लोग ड्राइविंग लाइसेंस भी बनवा सकते हैं। रिजर्व बैंक की पूर्व अनुमति के बिना भी ये लोग बैंक खाते खुलवा सकते हैं। गृह मंत्रालय ने अहमदिया समुदाय के १८ सौ पाकिस्तानी नागरिकों को भारत में आने की अनुमति जारी की है। ये लोग पंजाब के गुरदासपुर जिले में होने वाले वार्षिक समारोह में शामिल होने आ रहे हैं। ■

सुभाषित

मूर्खाश्चिरायुर्जातोऽपि तस्माज्जातमृतोवर।
मृतश्च स्वल्पदु:खाय यावज्जीवं जड़ो दहेत्।। (चाणक्य नीति)

अर्थ- मूर्ख पुत्र से तो अच्छा वह है जो पैदा होते ही मर जाता है, क्योंकि पैदा होते ही जो मर जाता है उससे तो थोड़ा दु:ख होता है, परन्तु मूर्ख पुत्र तो जीवनभर दु:ख ही देता है।

पद्यार्थ- अच्छा है वह सुत सुनो, जन्म लेत मर जाय।
चिरजीवी मूरख वृथा, जीवन नरक बनाय।। (आचार्य स्वदेश)

सम्पादकीय

हिन्दुत्व से द्वेष क्यों?

पूर्व राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी की आत्मकथा 'गठबन्धन के वर्ष' के कुछ अंश जो मीडिया में सामने आये हैं, वे हम सबकी आँखें खोल देने वाले हैं। उन्होंने स्पष्ट लिखा है कि सोनिया गाँधी हिन्दुओं से घृणा करती हैं। इसके प्रमुख उदाहरण के रूप में उन्होंने कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य स्वामी जयेन्द्र सरस्वती की ठीक दीपावली के दिन हुई गिरफ्तारी का उल्लेख किया है, जिस पर उन्होंने स्वयं भी सोनिया से असहमति और नाराजगी व्यक्त की थी, परन्तु इसका कोई प्रभाव नहीं हुआ।

पूर्व राष्ट्रपति की बात अपने आप में बहुत गम्भीर है और जब यह बात प्रणव मुखर्जी जैसे अति प्रतिष्ठित और जिम्मेदार व्यक्ति की कलम से निकली है, तो कहीं अधिक गम्भीर हो जाती है। अभी तक यह माना जाता था कि तमिलनाडु की तत्कालीन मुख्यमंत्री जयाललिता ने व्यक्तिगत कारणों से शंकराचार्य को गिरफ्तार कराया था। परन्तु प्रणव मुखर्जी की पुस्तक से यह स्पष्ट हो गया है कि यह गिरफ्तारी स्वयं सोनिया के संकेत पर की गयी थी और आंध्रप्रदेश की तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने यह कार्यवाही की थी। यदि इसमें जयाललिता का कोई हाथ या सहमति होगी भी तो वह अधिक महत्वपूर्ण नहीं थी।

पूज्य शंकराचार्य जी की गिरफ्तारी का कारण यह था कि उन्होंनें तमिलनाडु और आस-पास के क्षेत्रों में अपने आश्रम की कुछ गतिविधियों के द्वारा वहाँ गरीब हिन्दुओं के धर्मांतरण के कार्य में लगे देशी-विदेशी ईसाई मिशनरियों के कार्यों पर लगाम लगा दी थी। यही बात पूर्व इटालियन बार बाला को सहन नहीं हुई, जो उस समय तक भारतीय जनता की मूर्खता के कारण बहुत शक्तिशाली हो गयी थी। इसलिए शंकराचार्य के विरुद्ध हत्या का झूठा आरोप लगाया गया और उनको ठीक हिन्दुओं के सबसे बड़े पर्व दीपावली के दिन बन्दी बना लिया गया। प्रणव मुखर्जी ने सही सवाल उठाया है कि क्या सरकार किसी मुल्ला को ईद के दिन या ईसाई पादरी को क्रिसमस के दिन गिरफ्तार करने की हिम्मत कर सकती है?

शंकराचार्य जी के विरुद्ध लगाये गये सारे आरोप झूठे थे इसलिए न्यायालय में नहीं टिक पाये और उनको ससम्मान मुक्त कर दिया गया। इसी से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि शंकराचार्य जी की गिरफ्तारी वास्तव में अनुचित थी और अपनी शक्ति का घोर दुरुपयोग थी। हिन्दुत्व के प्रति कांग्रेस नेतृत्व के द्वेषभाव का यह न तो पहला उदाहरण है और न अकेला या अंतिम ही। ऐसे अनेक उदाहरणों की अन्तहीन शृंखला है, जिससे कांग्रेसियों का हिन्दू द्वेष प्रकट हो जाता है। हिन्दुओं का नरसंहार करने वाले टीपू सुल्तान की जन्मतिथि मनाना इसका एक और उदाहरण है।

यह देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि हिन्दुत्व से ऐसी घृणा रखने वाले व्यक्ति और दल लम्बे समय तक देश पर शासन करते रहे हैं, जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू समाज की बहुत हानि हुई है और इसका पूरा लाभ तथाकथित अल्पसंख्यक मुसलमानों ने उठाया है, जो एक वोट बैंक के रूप से संगठित रूप से इस या उस पार्टी के लिए थोक में मतदान करते रहे हैं। सौभाग्य से अब वह समय बीत गया है और हिन्दू समाज में पर्याप्त जाग्रति आ गयी है, जो अपना भला-बुरा अच्छी तरह समझकर चुनावों में राष्ट्रवादी पार्टी को वोट देने लगा है। लेकिन यह प्रश्न अपनी जगह विद्यमान है कि कांग्रेस के हिन्दू द्वेष का मूल कारण क्या है? इसका उत्तर कौन देगा? ■

आपके पत्र

सराहनीय प्रयास है शुभकामनायें। **-- रेखा डिमरी**

जय विजय का अंक मिला। सदैव की भांति लेखों रचनाओं से भरपूर। बधाई। **-- डॉ पूनम माटिया**

अक्टूबर महीने का जय विजय का अंक मिला। हमेशा की तरह आकर्षक साजसज्जा व धुरंधर रचनाकारों की अनुपम कृतियों ने पत्रिका में चार चांद लगा दिए हैं। मेरी भी एक रचना को आपने इसमें शामिल करने के लायक समझा इसके लिए व पत्रिका प्रेषित करने के लिए आपका हृदय से आभार! **-- राजकुमार कांदु**

मेरी तो कोई रचना प्रकाशित नहीं हुई। **-- राज सिंह रघुवंशी**

मेरी रचना को स्थान देने के लिए हार्दिक आभार। **-- उषा भदौरिया**

हास्य-व्यंग्य शीर्षक के अंतरगत छपी 'जॉनी जॉनी यस पापा' में हँसने लायक क्या था और व्यंग्य किस पर था मालूम नहीं हुआ। **-- मनोज पांडेय**

बहुत बेहतरीन रचनायें। **-- रवि शुक्ला**

हमेशा की तरह खूबसूरत अंक। हार्दिक बधाई। **-- अंजु गुप्ता**

शानदार और खूबसूरत अंक के लिये हार्दिक बधाई और बहुत-बहुत धन्यवाद आपका मेरी रचना को स्थान देने के लिए। **-- जय कृष्ण चांडक**

बहुत-बहुत धन्यवाद। अति सुसज्जित अंक आज सुबह देखने को मिला जिसमें मेरी एक गजल को स्थान मिला। हृदय से आभारी हूँ। **-- महातम मिश्र**

जयविजय मासिक का अक्टूबर २०१७ अंक कल पढ़ा, प्रसन्नता हुई। सभी रचनाकारों व संपादकीय परिवार को बधाई। **-- शशांक मिश्र भारती**

धन्यवाद। **-- डॉ कमलेश द्विवेदी, डॉ डी.एम. मिश्र, आशीष कुमार त्रिवेदी, जय प्रकाश भाटिया, विनय कुमार तिवारी, नन्दिता तनूजा, मृदुल कुमार शरण, सैयद ताहिर, प्रीति श्रीवास्तव, अवधेश कुमार अवध, अल्पना हर्ष, सतीश बंसल, राजकुमार कांदु, राजेश कुमार सिंह,**

अति सुंदर अंक के लिए बधाई। **-- उपानंद ब्रह्मचारी, निपुण आलम्बायन, नवीन कुमार जैन, ज्योति पांडेय, राजीव रंजन तिवारी, अशोक दर्द**

(सभी कृपालु पत्र-लेखकों का हार्दिक आभार! - सम्पादक)

लक्ष्मी पूजन का मर्म

भरत मल्होत्रा

दीपावली के दिन जो पूजा होती है उसे लक्ष्मी पूजन कहा जाता है। आज ज्यादातर लोग समझते हैं कि लक्ष्मी का अर्थ है धन की देवी। यह लक्ष्मी शब्द का बहुत संकुचित अर्थ हो गया है। वास्तव में इस शब्द का अर्थ बहुत विशाल है। लक्ष्मी शब्द की उत्पत्ति संस्कृत की लक्ष धातु से हुई है। लक्ष का शाब्दिक अर्थ है ध्यान लगाना, ध्येय बनाना, ध्यानपूर्वक निरीक्षण करना इत्यादि। इसका अर्थ ये है कि जब हम एकाग्रचित्त होकर कोई कार्य या साधना करते हैं, तो उसका जो फल प्राप्त होता है उसे लक्ष्मी कहते हैं।

हमारे प्राचीन ऋषियों का प्रत्येक कार्य तप, ध्यान इत्यादि का उद्देश्य हमेशा शुभ एवं आध्यात्मिक समृद्धि के लिए होता था। तब लक्ष्मी का अर्थ जीवन के चार आयामों धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के समन्वय से जीवन को दिव्यता के मार्ग पर ले जाना था। हमारी सबसे प्राचीन पुस्तक ऋग्वेद में भी लक्ष्मी देवी का उल्लेख आता है परंतु वहां लक्ष्मी का अर्थ धन की देवी नहीं, शुभता एवं सौभाग्य की देवी है। धन की उपयोगिता सीमित है। इस संसार में आप धन से सब कुछ नहीं प्राप्त कर सकते। धन से न आप माता-पिता खरीद सकते हैं, न दोस्त, न ज्ञान। ऐसा बहुत कुछ है, जो धन से नहीं खरीदा जा सकता। परंतु सौभाग्य से आप जो चाहें वो प्राप्त कर सकते हैं।

अथर्ववेद में भी लक्ष्मी को शुभता, सौभाग्य, संपत्ति, समृद्धि, सफलता एवं सुख का समन्वय बताया गया है। पुराणों में लक्ष्मी के आठ प्रकार बताए गए हैं जिन्हें अष्ट

(शेष पृष्ठ २५ पर)

हिन्दू समाज और कांग्रेस

डॉ विवेक आर्य

उमा भारती ने बयान दिया है कि गांधी की हत्या का सबसे ज्यादा फायदा कांग्रेस को हुआ। इस पर नेता लोग अपनी अपनी सुविधा के अनुसार बयान देंगे। मगर मैं ऐतिहासिक दृष्टीकोण से इस पर अपने विचार देना चाहूंगा। १९४७ का विभाजन धर्म के आधार पर हुआ था। जिन्ना मुसलमानों के हितैषी बनकर अलग इस्लामी देश की मांग कर रहे थे। हिन्दू समाज का उस काल में व्यवस्थित राजनैतिक प्रतिनिधि नहीं था। हिन्दू महासभा अभी प्रारंभिक अवस्था में थी। इसलिए हिन्दुओं ने कांग्रेस पर आंख बंदकर विश्वास कर लिया। कांग्रेस में केवल सरदार पटेल हिन्दुओं के समर्थक थे। वहीं गाँधी, नेहरू और मौलाना कलाम दूसरे छोर पर खड़े थे।

१९४७ से पहले पाकिस्तान के शेखुपुरा और रावलपिंडी में हिन्दुओं का नरसंहार देखकर सरदार पटेल को आभास हो चुका था कि हिन्दू-मुस्लिम जनता की अदला-बदली शांतिपूर्वक तो कभी नहीं होगी। हिन्दुओं की रक्षा में वीर सावरकर, भाई परमानन्द और मदन मोहन मालवीय प्रभावशाली रूप से सक्रिय थे। जस्टिस मेहरचंद महाजन ने लाहौर को भारत में मिलाने का प्रस्ताव नेहरू से किया था। जिस पर नेहरू ने ध्यान नहीं दिया। ८५% हिन्दू बहुलता वाले लाहौर में धर्म के नाम पर ऐसा नंगा नाच हुआ। जिसे देखकर लोगों का मानवता से विश्वास उठ जाये। जिन्ना ने जिस प्रकार से कश्मीर में कबायली लड़ाके भेजे थे। वैसे ही थरपारकर जो सिंध का हिन्दू बहुल जिला था, उसमें भी भेजे थे। वहां के हिन्दू राजपूत राजा ने जिन्ना से समझौता कर हिन्दू बहुल जिले को पाकिस्तान में मिला दिया, जिसका परिणाम आज भी वहां की हिन्दू जनता भुगत रही है।

मुसलमानों के अत्याचारों से सरदार पटेल का कांग्रेस पर विस्थापित हिन्दुओं की सहायता करने का दवाब बढ़ता गया। निरपराध हिन्दुओं को भूखे इस्लामी कातिलों के समक्ष मरने, लूटने के लिए फेंक देने का दोष हिन्दुओं ने गाँधी, नेहरू और कांग्रेस को दिया। जो गाँधी कहते थे कि भारत का विभाजन मेरी लाश के ऊपर होगा, जो नेहरू यह कहते थे कि हिन्दुओं आराम से लाहौर में रहो, लाहौर भारत का भाग बनेगा। वहां न केवल हिन्दुओं की व्यापक हानि हुई, बल्कि सामूहिक बलात्कार तो आम बात थी। हिन्दू कन्याओं को नंगा कर सड़कों पर घुमाया गया। हिन्दुओं का पीढ़ियों से नमक खाने वाले मुस्लिम नौकरों ने खोज खोजकर छुपाई गई हिन्दू लड़कियों के पते मुस्लिम दंगाइयों को बताये। हिन्दू लुटते पीटते जाने कैसे दिल्ली आने वाली रेलगाड़ियों में चढ़े तो उन्हें भी लुटा गया।

इस नंगे नाच का परिणाम यह निकला कि गाँधी जी की लोकप्रियता उस काल में उनके जीवन के निम्न स्तर पर आ गई। कांग्रेस को लगने लगा था कि उसका जनाधार खिसकता जा रहा है। देश की राजधानी दिल्ली शरणार्थियों के अस्थायी टेंटों के शहर में परिवर्तित हो गई। गाँधी जी ने हिन्दुओं के घावों पर नमक लगाने के लिए पाकिस्तान को ५६ करोड़ रुपये की सहायता देने का प्रण ले लिया। इससे रोषित होकर नाथूराम गोडसे ने ३० जनवरी, १९४८ को गाँधी जी की हत्या कर दी।

इस घटना से कांग्रेस को मानो मुंह-मांगी मुराद मिल गई। कांग्रेस ने अप्रासंगिक हो चुके गाँधी को शहीद घोषित कर दिया। विभाजित भारत में जहां हिन्दुओं को राजनीतिक वरीयता मिलनी थी, उसे हिन्दुओं से छीन लिया गया। जो सरदार पटेल पीड़ित हिन्दुओं की सहायता करने, उनके पुनर्वास के लिए प्रेरित थे, उन पर गाँधी की हत्या को लेकर नेहरू ने दबाव बनाया। विस्थापित और पीड़ित हिन्दू समाज की सहायता करने के बजाय हिन्दू समाज को गाँधी का हत्यारा बता दिया गया। वीर सावरकर जैसे नेताओं को पकड़कर जेल में डाला गया और संघ पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

कांग्रेस का उद्देश्य हिन्दुओं को आतंकित करना था। हिन्दुओं को उनके अधिकारों के बजाय गाँधी की हत्या का दोषी करार देना था। इस अवसर का कांग्रेस ने खूब लाभ उठाया। भारत को हिन्दू राज्य के बजाय सेक्युलर घोषित कर दिया। जिन मुसलमानों ने भारत का विभाजन करवाया था, उन्हें अल्पसंख्यक के नाम पर विशेष सुविधाएँ दीं। कश्मीर मामले को यूएनओ में ले जाकर नासूर बना दिया। मुसलमानों को पाकिस्तान में धकेलने के स्थान पर मिन्नतें करके रोका।

स्वतंत्र भारत में अंग्रेजों की फूट डालो, राज करो की नीति को बनाये रखने के लिए मुसलमानों को प्रोत्साहित किया गया। हिन्दू कोड बिल बनाकर हिन्दुओं की जनसंख्या पर रोक लगाई, मगर मुसलमानों को जनसंख्या बढ़ाने का पूरा अवसर प्रदान किया। इतिहास का पाठयक्रम ऐसा बनाया गया जैसे हिन्दू सदा इस्लामी महान आक्रांताओं से पिटते आये। हिन्दू राजा सदा आपस में लड़ते रहते थे। हिन्दू समाज अन्धविश्वास और छुआछूत से पीड़ित था। इस शिक्षाप्रणाली से हिन्दू समाज न केवल यह भूल गया कि उसके साथ पिछले १२०० वर्षों से क्या-क्या अत्याचार हुआ, अपितु अत्याचार का विरोध करना भी भूल गया।

अभी भी कांग्रेस का हिन्दुओं पर पीछे से घात करने का खेल जारी है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह मुसलमानों का भारत के संसाधनों पर पहला हक बताते हैं। पूर्व गृहमंत्री शिंदे हिन्दुओं को भगवा आतंकवादी बताते हैं। दो करोड़ बंगलादेशी मुसलमानों को देश में अवैध रूप से बसाकर हिन्दुओं का जनसंख्या समीकरण बिगाड़ दिया। केरल, बंगाल, असम, कश्मीर में हिन्दुओं को अल्पसंख्यक बना दिया। अब भी अगर उमा भारती का बयान सही नहीं है तो कब होगा? ■

व्रत और उपवास

जय प्रकाश भाटिया

व्रत या उपवास हम बचपन से सुनते और देखते आये हैं। हनुमान जी का व्रत, फिर करवा चौथ, शुक्रवार को संतोषी माता का व्रत, नवरात्र का व्रत आदि। सभी व्रत हमारी धार्मिक आस्था से जुड़े हैं। ये सभी व्रत परम्परागत धारणाओं के आधीन सम्पन्न होते थे। व्रत में व्यक्ति तन, मन और खानपान की शुद्धता का विशेष ध्यान रखते थे और पूजा पाठ को विशेष महत्त्व देते थे, मेरे विचार से व्रत और उपवास के विशेष लाभ ये हैं-

१. पाचन क्रिया को आराम
२. बार-बार और अनियमित कुछ भी खाने की मनाही
३. वक्त जरुरत अगर यात्रा या व्यस्तता के कारण भोजन न मिल पाए तो सहनशक्ति
४. केवल शुद्ध और निर्धारित आहार का सेवन
५. खाना खाने की पाबंदी रहते हुए भूख लगने पर इस बात का अहसास कि जो गरीब दो वक्त की रोटी नहीं जुटा पाते उन्हें कैसा अनुभव रोज होता है
६. धर्म के प्रति आस्था में वृद्धि

लेकिन मेरे विचार से व्रत के साथ किसी भी प्रकार की शर्त नहीं होनी चाहिए, जैसे परीक्षा में पास होने की मन्नत मानकर व्रत रखना आदि।

हालांकि आज समय बदल गया है, पर बीते नवरात्र के अवसर पर भी देखने को मिला कि बहुत से लोग विशेषकर महिलाएं सच्ची आस्था से व्रत रखते हैं। पर कुछ लोगों में यह व्रत रखना भी एक फैशन का रूप ले चुका है। नवरात्र शुरू होते ही बाजार में व्रत में खाने के नमकीन, मेवे, मिठाई आदि की भरमार और होटल में जाकर व्रत की थाली खाने का चलन शुरू हो गया है. व्रत में 'यह भी खा सकते हैं' जोर पकड़ रहा है। कुछ व्रत रखने वालों का मुँह दिनभर चलता ही रहता है। घरों में भी व्रत के खाने के नाम पर इतने व्यंजन आदि बन जाते हैं कि लगता है व्रत नहीं दावत हो रही है।

मेरा सभी व्रत रखने वालों से अनुरोध है कि व्रत में पूरी आस्था रखें, कम से कम जरूरत के अनुसार अल्प मात्रा में निश्चित आहार लें। आहार केवल दिन में एक या दो बार ले और पूजा पाठ में मन लगाएं। करवा चौथ के दिन समय बिताने के नाम पर कुछ रईस महिलाएं ताश ही दिन भर खेलती हैं। ऐसे किसी भी काम से, किसी की बुराई करने से, लड़ाई झगड़ा करने से भी ऐसे अवसरों पर दूर रहना चाहिए।

आओ हम सब मिल कर यह निश्चित करें कि व्रत और उपवास सदा ही मर्यादा में रहकर ही करेंगे और इनसे जुड़ी धार्मिक आस्थाओं का पालन करेंगे। ■

जागरूक जनता ही करेगी स्वच्छ भारत का निर्माण

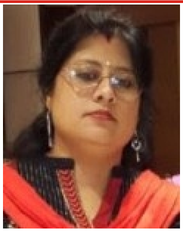

डॉ नीलम महेन्द्र

२ अक्टूबर २०१४ को प्रधानमंत्री मोदी द्वारा शुरू किए गए स्वच्छ भारत अभियान को २०१७ में तीन वर्ष पूर्ण हो रहे हैं। इस अभियान के दो उद्देश्य हैं- एक, सड़कों और सार्वजनिक स्थलों पर सफाई तथा दूसरा, भारत के गाँवों को खुले में शौच से मुक्त करना। यह जानना रोचक होगा कि यह अभियान इन ७० सालों में भारत सरकार का देश में सफाई और उसे खुले में शौच से मुक्त करने का कोई पहला कदम हो या फिर प्रधानमंत्री की कोई अनूठी पहल हो ऐसा भी नहीं है।

१९५४ से ही भारत सरकार द्वारा ग्रामीण भारत में स्वच्छता के लिए कोई न कोई कार्यक्रम हमेशा से ही अस्तित्व में रहा है लेकिन इस दिशा में ठोस कदम उठाया गया १९९९ में। खुले में मल त्याग की पारंपरिक प्रथा को पूरी तरह समाप्त करने के उद्देश्य से 'निर्मल भारत अभियान' की शुरुआत की गई, जिसका प्रारंभिक नाम 'सम्पूर्ण स्वच्छता अभियान' रखा गया था। इसके बावजूद २०१४ में यूएनओ की रिपोर्ट में कहा गया था कि भारत की करीब ६०% आबादी खुले में शौच करती है और इसी रिपोर्ट के आधार पर प्रधानमंत्री मोदी ने स्वच्छ भारत मिशन की शुरुआत की।

अब एक बार फिर हमारे देश के नेता अभिनेता और विभिन्न क्षेत्रों के सेलिब्रिटी हाथों में झाड़ू लेकर फोटो सेशन करवाएंगे। ट्विटर और फेसबुक पर स्वच्छ भारत अभियान हैश टैग के साथ स्टेटस अपडेट होगा, अखबारों के पन्ने मुख्यमंत्रियों नेताओं व अभिनेताओं के झाड़ू लगाते फोटो से भरे होंगे और ब्यूरोक्रेटों द्वारा फाइलों में ओडीएफ (खुले में शौच मुक्त) गाँवों की संख्या निरंतर बढ़ रही होगी, लेकिन क्या वास्तव में हमारा देश साफ दिखाई देने लगा है? क्या हम धीरे-धीरे ओडीएफ होते जा रहे हैं? गांव तो छोड़िये क्या हमारे शहरों के स्लम एरिया भी खुले में शौच से मुक्त हो पाएँ हैं? शौच छोड़िये क्या हम कचरे की समस्या का हल ढूँढ पाए हैं?

एक तरफ हम स्मार्ट सिटी बनाने की बात कर रहे हैं तो दूसरी तरफ हमारे देश की राजधानी दिल्ली जैसे महानगर तक कचरे की बदबू और गंदगी से फैलने वाली मौसमी बीमारियों जैसे डेंगू चिकनगुनिया आदि को झेलने के लिए मजबूर हैं। अभी हाल ही में दिल्ली के गाजीपुर में कचरे के पहाड़ का एक हिस्सा धंस जाने से दो लोगों की मौत हो गई। इन हालातों में क्या २०१९ में गांधी की १५०वीं जयंती तक प्रधानमंत्री मोदी की यह महत्वाकांक्षी योजना सफल हो पाएगी? इसे इस देश का दुर्भाग्य कहा जाए या अज्ञानता कि ७० सालों में हम मंगल ग्रह पर पहुंच गए, परमाणु ऊर्जा संयंत्र बना लिए, हर हाथ में मोबाइल फोन पकड़ा दिए, लेकिन हर घर में शौचालय बनाने के लिए आज भी संघर्ष कर रहे हैं?

स्वच्छता २१वीं सदी के आजाद भारत में एक मुद्दा है, यह दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन २०१९ में भी अगर यह एक मुद्दा रहा, तो अधिक दुर्भाग्यपूर्ण होगा। देश को स्वच्छ करने का सरकार का यह कदम वैसे तो सराहनीय है लेकिन इसको लागू करने में जल्दबाजी की गई और तैयारी भी अधूरी रही। अगर हम चाहते हैं कि निर्मल भारत और स्वच्छता के लिए चलाए गए अन्य अभियानों की तरह यह भी असफल योजना सिद्ध न हो तो जमीनी स्तर पर ठोस उपाय करने होंगे।

भारत एक ऐसा विशाल देश है जहां ग्रामीण जनसंख्या अधिक है और जो शहरी पढ़ी लिखी तथाकथित सभ्य जनसंख्या है, उसमें भी सिविक सेन्स का अभाव है। उस देश में एक ऐसे अभियान की शुरुआत जिसकी सफलता जनभागीदारी के बिना असंभव हो, बिना जनजागरण के करना ठीक ऐसा ही है जैसे किसी युद्ध को केवल इसलिए हार जाना क्योंकि हमने अपने सैनिकों को प्रशिक्षण नहीं दिया था। इस देश का हर नागरिक एक योद्धा है उसे प्रशिक्षण तो दीजिए।

स्वच्छ भारत अभियान का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है देश के नागरिकों को चाहे गांव के हों या शहरों के, उन्हें सफाई के प्रति उनके सामाजिक दायित्वों के प्रति जागरूक करना, क्योंकि जब तक वे जागरूक नहीं होंगे हमारे निगम के कर्मचारी भले ही सड़कों पर झाड़ू लगाकर और कूड़ा उठाकर उसे साफ करते रहें लेकिन हम नागरिकों के रूप में यहाँ-वहाँ कचरा डालकर उन्हें गंदा करते ही रहेंगे। इसलिए जिस प्रकार कुछ वर्ष पूर्व पूरे देश में साक्षरता अभियान चलाया गया था, उसी तरह देश में युद्ध स्तर पर पहले स्वच्छता जागरूकता अभियान चलाया जाना चाहिए।

यह अभियान उस दिन अपने आप सफल हो जाएगा जिस दिन इस देश का हर नागरिक केला या चिप्स खाकर कचरा फेंकने के लिए डस्टबिन ढूँढेगा, भले ही उसे आधा किमी चलना ही क्यों न पड़े, और यह सब किसी जुर्माने के डर से नहीं, बल्कि देश को स्वच्छ रखने में अपना योगदान देने के लिए करेगा।

दूसरा, हम गांवों में शौचालयों की संख्या पर जोर देने की बजाय उनके 'उपयोग करने योग्य' होने पर जोर दें क्योंकि जिस तरह की खबरें आ रही हैं उसमें कहीं शौचालयों में पानी की व्यवस्था नहीं है, तो कहीं शौचालय के नाम पर मात्र एक गड्ढा है। तीसरा, स्वच्छ भारत अभियान केवल शौचालय निर्माण तक सीमित न हो उसमें कचरे के प्रबंधन पर भी जोर देना होगा। कचरे से ऊर्जा और बिजली उत्पादन के क्षेत्र में रिसर्च, नई तकनीक और स्टार्ट अप को प्रोत्साहन दिया जाए। प्लास्टिक और पोलीथीन का उपयोग प्रतिबंधित हो और इलेक्ट्रौनिक कचरे के लिए एक निश्चित स्थान हो।

जब देश को अस्वच्छ करने वाले हर क्षेत्र पर सुनियोजित आक्रमण किया जाएगा तो वह दिन दूर नहीं जब प्रधानमंत्री मोदी का स्वच्छ भारत का स्वप्न यथार्थ में बदल जाएगा। ■

एक हृदयरोग विशेषज्ञ की खरी बातें

विजय कुमार सिंघल

प्रसिद्ध हृदयरोग विशेषज्ञ डॉ बी.एम. हेगड़े ने एक बातचीत में हृदयरोगों की चिकित्सा और उत्तम स्वास्थ्य के बारे में अनेक भ्रामक धारणाओं का खंडन किया। गर्म पानी के गिलास में नीबू निचोड़ते हुए डॉ हेगड़े ने कहा- 'यह अम्लीय पेट के लिए सबसे अच्छी दवा है। हर रोग के लिए आपको अस्पताल भागने की आवश्यकता नहीं है। यदि आपके हृदय में रुकावट हो तब भी नहीं, क्योंकि धमनियों में रुकावट आना सामान्य बात है।'

इस प्रमुख हृदयरोग विशेषज्ञ ने यह भी ध्यान दिया है कि वास्तव में हृदयाघात की दर में एक प्रतिशत की भी निरपेक्ष वृद्धि नहीं हुई है। इसका केवल भय फैलाया गया है और यह रोग का नामकरण करने की गलती है। डॉ हेगड़े कहते हैं- 'दुर्भाग्य से, सीने के हर दर्द को एंजाइना बता दिया जाता है और हर रुकावट को हृदय की धमनी का रोग कह दिया जाता है।'

'कोई भी व्यक्ति जो सीने में दर्द की शिकायत लेकर अस्पताल आता है उसको एंजियोग्राम कराने के लिए बाध्य किया जाता है, जबकि हृदय की रुकावटों के समझने की आवश्यकता होती है।' वे कहते हैं। 'रुकावटें तब भी होती हैं जब आप छोटी उम्र में होते हैं और जैसे ही वे बढ़ती हैं वैसे ही प्रेंति संपार्श्विक रक्तवाहिनियों के माध्यम से बाईपास उपलब्ध कराती है। इसको हृदय की पूर्व-चिकित्सा कहा जाता है।'

डॉ हेगड़े का मानना है कि कोई भी व्यक्ति जो चिकित्सा सहायता के लिए किसी डॉक्टर के पास जाता है रोगी बन जाता है। 'एक बार इस बवंडर में फँस जाने के बाद आप हमेशा रोगी बने रहते हैं।' ये अनुभवी हृदयरोग विशेषज्ञ अपने बेबाक बयानों के लिए जाने जाते रहे हैं। वे कहते हैं- 'जब मैं विद्यार्थी था, तो मैं पूछता था कि यदि कोलेस्ट्रॉल हमारे शरीर द्वारा बनाया जाता है, तो यह बुरा कैसे हो सकता है? चालीस वर्ष पहले, मैंने लिखा था कि कोलेस्ट्रॉल हमारे तनाव का स्तर बढ़ने पर शरीर द्वारा निकाली गयी काट है। काफी समय पहले अमेरिकन कॉलेज ऑफ कार्डियोलॉ' के सम्मेलन में मैंने कहा था कि नारियल का तेल हृदय के लिए सबसे अच्छा तेल है।'

'आजकल की चिकित्सा विधि में कमी यह है कि यह मानव शरीर को एक कार जैसी मशीन के रूप में देखती है, जिसकी मरम्मत अलग-अलग पुर्जों की तरह

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

मेहनत करोगे तो तुम्हें क्योंकर न मिलेगा
कहीं माँगने से तुमको मुकद्दर न मिलेगा
टूटे हुए दिल में ना प्यार ढूँढ पाओगे
इस रेत के सहरा में समंदर न मिलेगा
तलाश करनी पड़ती हैं खुद मंजिलें अपनी
ये राह-ए-इश्क है तुम्हें रहबर न मिलेगा
लफ्जों के तीर करने लगे लोगों को जख्मी
अब किसी के हाथ में पत्थर ना मिलेगा
सर पे कफन बांध के निकला हो जो घर से
उस शख्स की आँखों में तुम्हें डर न मिलेगा

-- भरत मल्होत्रा

कर्म पर जब से मुझे विश्वास करना आ गया
हार में भी जीत का आभास करना आ गया
जिन्दगी भी जिन्दगी जैसी लगी मुझको तभी
जब किसी के दर्द का अहसास करना आ गया
तीरगी मन की मिटी तो ये हुआ उसका असर
जिन्दगी के हर लम्हे को खास करना आ गया
नोट देकर जब खरीदे वोट पायी कुर्सियाँ
जाहिलों को और फिर बकवास करना आ गया
आ गया जबसे हसीनों को मनाने का हुनर
पतझरों को प्यार का मधुमास करना आ गया
तुम मिले तो जिन्दगी फिर जिन्दगी लगने लगी
जिन्दगी को जिन्दगी से रास करना आ गया
तीर अपनो ने चलाये जब हुआ छलनी जिगर
दुश्मनों की बात पर विश्वास करना आ गया

-- सतीश बंसल

मौन जब इस शोर को दमखम दिखा के जाएगा
देख लेना उस समय फिर काफिला रह जाएगा
आप के रहमो करम पर रुक नही सकता दीवाना
बोलने का शौक किसको साहिबा रह जाएगा
भूलकर जज्बात को मत रोकना चिग्घाड़कर
गर मुड़ा अपनी जगह फिर आइना रह जाएगा
करकसी आवाज है तकते अपने महल आना
शेष क्या मिलता भला निज खंडरा रह जाएगा
क्यों बना डाला ऊँचाई पर मकाँ पूछा किससे
राह में रोड़ा बहुत चढ़ हाँफता रह जाएगा
शेर सी दाहाड हो तो मोह लेती जाने मन
सुन यहाँ बस मेमने का चीखना रह जाएगा
मान जा 'गौतम' गरजता है नहीं बस बरसता
हो सके तो जा यहाँ से मापता रह जाएगा

-- महातम मिश्र, गौतम गोरखपुरी

बड़े अजीब मकाँ उम्र भी दिखाती है
कभी नसीब, कभी जिंदगी रुलाती है
खड़े दरख्त मगर घूमती हुई छाया
कभी करीब, कभी दूर-दूर जाती है
कभी सफर न रुका साथ के लिए फिर भी
कभी उम्मीद, कभी दोस्ती रुलाती है
सुबह से शाम तलक सिर्फ खोजता फिरता
फिर भी मंजिल मेरी कहीं न नजर आती है
कभी गुनाह लगे तो कभी सवाब लगे
एक पानी पे नदी कौन ठहर पाती है

-- डॉ डी एम मिश्र

चीज छोटी सी है लेकिन जनाब दे जाओ
मेरे टूटे हुए दिल का हिसाब दे जाओ
सिर्फ तन्हाई है बस दूर तक अंधेरा है
उदास रात है कोई तो ख्वाब दे जाओ
जिंदगी काली रात, चाँद सा चेहरा तेरा
तुम चली आओ या कि माहताब दे जाओ
मुस्करा करके जा रहे हो इसे क्या समझूँ
सवाले इश्क का मुझको जवाब दे जाओ
सजा के रक्खूँगा ताउम्र मैं किताबों में
प्यार मत करना, लेकिन गुलाब दे जाओ

-- डा. दिवाकर दत्त त्रिपाठी

उद्योग हो, भरोसा भी बेहद, अथाह हो
मंजिल मिले उसी को सबल जिनमें चाह हो
इंसान की स्वतन्त्र, इबादत की राह हो
इंसान के प्रकाश, ज्यों उजली निगाह हो
इंसान है समान, खुदा की निगाह में
धनवान हो, गरीब हो, या बादशाह हो
हर काम में सलाह लिया सब रकीब से
जनता अगर सलाह दे तो क्या गुनाह हो
कानून तोड़कर कोई बचते नहीं मगर
पोलिश वही गुनाह का पुख्ता गवाह हो
हाकिम जहाँ बेदर्द हो इन्साफ क्या मिले
सबको सजा-ए-मौत, भले बेगुनाह हो

-- कालीपद 'प्रसाद'

सारे किस्से अब पुराने हो गये
बुलबुलों के अब जमाने हो गये
उल्लू मिलकर खा गये हरियालियाँ
खुश्क मौसम के बहाने हो गये
वोट को है सारी जनता देश की
सियासतों को कुछ घराने हो गये
मूक सारे तर्क उनके हो गये
भाषणों के जो दीवाने हो गये
रेत बजरी पेड़ पत्थर तस्करी
पैसों के यूं कारखाने हो गये
स्वार्थ की अंधी नदी में डूब कर
प्यार के सब गुम तराने हो गये
खेत को ही खा रहे हैं बाड़ जो
उनके पहरों में खजाने हो गये

-- अशोक दर्द

तुम्हारी याद जब आती तो मिल जाती खुशी हमको
तुमको पास पायेंगे तो मेरा हाल क्या होगा
तुमसे दूर रहकर के तुम्हारी याद आती है
मेरे पास तुम होंगे तो यादों का फिर क्या होगा
तुम्हारी मोहनी सूरत तो हर पल आँख में रहती
दिल में जो बसी सूरत फिर उसका क्या होगा
अपनी हर खुशी हमको अकेली ही लगा करती
तुम्हारा साथ जब होगा नजारा ही नया होगा
दिल में जो बसी सूरत सजायेंगे उसे हम यूँ
तुमने उस तरीके से संवारा भी नहीं होगा

-- मदन मोहन सक्सेना

तसव्वुर का नशा गहरा हुआ है
दिवाना बिन पिए ही झूमता है
नहीं मुमकिन मिलन अब दोस्तों से
महब्बत में बशर तनहा हुआ है
करूँ क्या जिक्र मैं खामोशियों का
यहाँ तो वक्त भी थम-सा गया है
भले ही खूबसूरत है हकीकत
तसव्वुर का नशा लेकिन जुदा है
अभी तक दूरियाँ हैं बीच अपने
भले ही मुझसे अब वो आशना है
हमेशा क्यों गलत कहते सही को
'जमाने में यही होता रहा है'
गुजर अब साथ भी मुमकिन कहाँ था
मैं उसको वो मुझे पहचानता है
गिरी बिजली नशेमन पर हमारे
न रोया कोई कैसा हादिसा है
बुलन्दी नाचती है सर पे चढ़के
कहाँ वो मेरी जानिब देखता है
हमेशा गुनगुनाता हूँ बहर में
गजल का शौक बचपन से रहा है
जिसे कल गैर समझे थे वही अब
रगे-जां में हमारी आ बसा है

-- महावीर उत्तरांचली

उग आये शैवाल गाँव के तालों में
पेंच फँसे हैं उलझे हुए सवालों में
करूँ समर्पित कैसे गंगा जल को अब
नकली सूरज हँसता खूब उजालों में
गोशालाएँ सिसक-सिसक दम तोड़ रहीं
भरा हुआ है दोष हमारे ग्वालों में
दूध-दही, गेहूँ-चावल में जहर भरा
स्वाद कहाँ से लायें आज निवालों में
लोकतन्त्र का 'रूप' घिनौना है अब तो
लिप्त हुआ जनसेवक कुटिल कुचालों में

-- डॉ रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'

(पहली किस्त)

टाई और धोती

नीतू सिंह

वह बालों में तीसरी बार कंघी फेर रही थी, मगर फिर भी संतुष्ट नहीं थी। एक ओर के बाल उसे उठे-उठे लग रहे थे। उसने बालों में लगा छोटा सा क्लिप फिर खोल दिया। सिर के बीचों-बीच बंधे चुटकी भर बाल फिर छूट कर कानों के पास आ गिरे। उसने शीशे में ताकती अपनी ही आँखों से सवाल किया कि पिछली बार भी इतनी ही तन्मयता से तैयार हुई थी, और क्या हुआ?

उसके नथुने फूल गए और उसने कंघी को हवा में छड़ी की तरह दिखाते हुए आईने के उस पार बैठी सुप्रिया को दाँत कटकटाते हुए कहा- 'मुँह बंद नहीं रख सकती थी? अपने गुस्से पर जरा भी काबू नहीं है तेरा!'

उसने देखा यह सुनकर उसकी आँखें पिछले हफ्ते का वाकया याद कर उदास हो आईं। सामने रखी नग जड़ित छोटी-सी क्लिप चमचमा रही थी। सुप्रिया ने उसे देखा और याद किया कि उसने यह पिछले हफ्ते ही खरीदी थी ताकि जब उसे लड़के वाले देखने आएँ तो वह अपनी मेहरूनी अनारकली पर इसे पहन सके। उसके पापा को लगता था कि बैंक में पी.ओ. बनने के बाद उसके लिए रिश्तों के लिए लाइन लग जाएगी। मगर जल्द ही यह भ्रम टूट गया।

उस दिन एक और भ्रम टूटा। पापा तो पापा बिटिया को भी लगता था कि दहेज जैसी चीज अब दकियानूसी हो चुकी है। टी.वी. पर ये जो दहेज के नाम पर हाय-तौबा मची रहती है सब बकवास है। पापा का तो यहाँ तक सोचना था कि हर महीने कमानेवाली बहू के लिए भला कोई दहेज जैसी राशि की माँग क्यूँ करेगा।

एक बड़े ट्रे में महकते समोसे और चाय लेकर जब सुप्रिया ने बैठक में कदम रखा, तो उसने महसूस किया कि लड़के की माँ की नजर समोसों पर और लड़के की उस पर थी, बाकी लड़के के पिताजी तो अभी भी पापा से अपने लड़के का बखान करते नहीं थक रहे थे।

सुप्रिया ने तुरंत नजरें नीची कर लीं थी और किसी स्लोमोशन पिक्चर की तरह चलने लगी थी। दिल में ऐसे नगाड़े तो तब भी नहीं बजे थे जब उसने अपने बैंक के बड़े-बड़े दिग्गजों के सामने अपना पर्चा पढ़ा था। मौद्रिक नीति पर उसके ज्ञान की कितनी वाह-वाही हुई थी। वह उपलब्धि और ही थी, यह उपलब्धि कुछ और ही होगी।

वह बैठी रही, बैठी रही। क्या हो रहा था उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था। लड़के की माँ के आधे सवाल समझ आ रहे थे, बाकी दिमाग के किसी तल में जाकर खो से जा रहे थे। जाने क्या समझ रही थी और जाने क्या जवाब दे रही थी। चाय खत्म हुई। समोसा खत्म हुआ। होने वाली सासु माँ के सवाल भी खत्म हो गए। अब? अब क्या? अब तो असली बातें होंगी।

'अब ऐसा है जनाब कि हमने अपने लड़के की पढ़ाई पर बहुत खर्चा किया है। वैसे तो मुझे पूरा भरोसा है कि आप जो देंगे, अपनी बेटी को देंगे, सोच समझकर ही देंगे...।'

सुप्रिया ने जरा सा नजर उठाकर उन अंगूठियों से भरी उँगलियों को देखा जो सोफे के हाथ पर ताल दे रही थीं मगर नजर और ऊपर उठाकर उस चेहरे को देखने की हिम्मत नहीं, जो ये हिकारत भरे शब्द कह रहे थे।

चाय की खाली प्याली पर टिकाई हुई सुप्रिया की निगाहें एकदम फैल गईं जब उसने अपने सिर झुकाए पापा को धीरे से 'हूँ' कहते हुए सुना।

उसकी आँखों के सामने अब प्याली नहीं थी, बल्कि वे सारे पल घूम रहे थे जब अपने रिश्तेदारों के मना करने के बावजूद उसके पापा उसे पढ़ाते चले गए थे। वे सारे पल जब घर की जरूरतों में कटौती करके उसके ट्यूशन और बैंक पी.ओ. की कोचिंग के लिए पैसे इकठ्ठे किए गए थे।

'वैसे तो आप काफी समझदार हैं रवि बाबू, मैं तो बस आपकी जानकारी के लिए बता रहा था कि अब अफसर की शादी तो अफसर की तरह होनी चाहिए न।'

सुप्रिया ने इस बार नजर उठाकर देखा। भरा-भरा चेहरा, इतना भरा कि गाल गालों के लिए बनी हड्डी से बाहर लटकने लगे थे। गर्दन कहाँ खत्म होती थी और कंधा कहाँ शुरू, कुछ पता ही न लगता था। उस पर तलवार कट मूँछों को ताव देते हुए पापा की आँखों में बड़ी ही उपेक्षा से देख रहा था।

अगले ही पल सुप्रिया के अंदर आवाज गूँजी- 'ससुर लगते हैं बेवकूफ, नजर नीची कर।' लज्जावश नजर तुरंत नीची हो गई। सुप्रिया के सामने वे सारे टी. वी. सीरियल घूमने लगे जिसमें दहेज की कहानियाँ देखकर वह हँस दिया करती थी और सोचती थी कि जमाना कहाँ से कहाँ बढ़ गया है और ये टी.वी. वाले हैं कि पिछड़ी हुई बातों पर किस्से बना-बनाकर दिखा रहे हैं। अब कहाँ कोई दहेज लेता या देता है। सब बकवास की बातें हैं।

सुप्रिया जानती न थी कि जिन्दगी हमें इसी प्रकार बड़ा करती है। एकदम सी मामूली या रूढ़ि दिखने वाली बातें अपने विकराल रूप में सामने आकर खड़ी हो जाती हैं और हम भौंचक्के से अपने अबतक के ज्ञान को ठगा-सा, ठिगना-सा पाते हैं।

पीठ पीछे सोफे पर टिकाते और सीना आगे की ओर तानते हुए फिर अम्ल वर्षा की- 'ऐसा है रवि बाबू, कि आजकल का तो आपको पता ही है। कोई भी सरकारी नौकरी इतनी आसानी से तो मिलती नहीं है। हाथ गरम करना ही पड़ता है। वह भी सरकारी अफसर तो, बात ही क्या पूछिए। फिर आप बड़े भाग्यवान है सरकारी दामाद...'

इस अम्ल वर्षा से दग्ध सुप्रिया की इस बार त्यौरियाँ चढ़ गईं। लाख न चाहते हुए भी उसने अपनी आँखें उन जनाब की आँखों पर थोप दीं। और दाँत पीसती हुई, तने हुए जबड़ों के साथ उसने एसिड की पूरी नदी बहा दी- 'आपने अपना लड़का क्या मेरे पापा के भरोसे पैदा किया था?'

लड़के का पिता किसी चोट खाए हुए साँप की तरह फुँफकारने लगा। मगर लड़की के मुँह लगना वह अपनी शान के खिलाफ समझता था। उसने सुप्रिया के पिता की ओर मुखातिब होकर अपनी भड़ास निकाली- 'यही शिक्षा दी है आपने अपने बच्चों को? यही संस्कार हैं इस घर के?'

इस बार पापा ने 'हूँ' नहीं कहा? क्यों, पता नहीं। बल्कि खड़े होकर हाथ जोड़ लिए और फिर बाहर का रास्ता दिखा दिया। मगर बोले कुछ नहीं। सुप्रिया के कंधे पर हाथ रखे जाते हुए लड़के वालों को देखते रहे। सुप्रिया ने नजर गढ़ाकर पहली बार लड़के और उसकी माँ को देखा। दोनों के मुँह सूजे हुए थे और हिकारत भरी नजरों से उसे देखते हुए बाहर निकल गए।

सुप्रिया ने सामने रखी क्लिप फिर से लगाई और क्लिप से नीचे के बालों पर चौथी बार कंघी फेरी। कंघी फेरती-फेरती वह फिर खो गई। उस दिन जो हुआ उसके लिए किसी फिल्मी ड्रामा से कम न था। मगर असली फिल्मी ड्रामा तो उसके बाद हुआ।

उस समय तो पापा कंधे पर हाथ रखकर लड़के-वालों को बड़ा घूर-घूर के देख रहे थे। साथ में मम्मी भी उनको आँखें तरेरकर दिखा रही थीं। मगर बाद में तो सबने सुप्रिया की ही बैंड बजा डाली।

रात में ही माँ पिल पड़ी। 'लड़की को ऐसे नहीं बोलना चाहिए। जो बोलना होता वह पापा बोलते।' सुप्रिया ने मन ही मन मुँह बनाया कि अच्छी तरह देख लिया कि क्या बोलते। 'लड़की हो लड़की की तरह रहना चाहिए। बड़ों के बीच में बातें हो रही थीं तो बीच में बोलने की क्या जरूरत थी?'

किचन से समोसे तलने की खूश्बू आ रही थी। मतलब मम्मी ने लड़केवालों के लिए नाश्ता लगभग तैयार ही कर लिया है। सुप्रिया ने ड्रेसिंग टेबल का ड्राअर खींचा और वहाँ रखे बिंदी के पत्तों को एक-एक कर ऊँगली से अलग करती गई। सब चमकदार नग वाली डिजाइनर बिंदियों को छोड़ उसने एक बहुत ही छोटी, सादी सी रंगीन बिंदियोंवाला पत्ता निकाल लिया। एक मेहरूनी बिंदी माथे पर लगाते हुए उसने अपनी लाल आँखें देखीं।

कल रात की तरह उस रात भी कोई नहीं सोया था। जब माँ शिष्टाचार का पोथा पढ़ा रही थी तो पास टहल रहे पापा ने अपनी चिंता व्यक्त करनी जरूरी समझी- 'ऐसी बातें आग की तरह फैलती हैं। इससे पहले कि सबको इस बात का पता चल जाए, अब जल्दी से जल्दी नया लड़का ढूँढना पड़ेगा। पहले ही पढ़े-लिखे-कमाऊ लड़कों का अकाल है।'

(शेष अगले अंक में)

प्लास्टिक कचरे से मुक्ति कब तक

सुरेश हिन्दुस्तानी

वर्तमान में प्लास्टिक कचरा बढ़ने से जिस प्रकार से प्राकृतिक हवाओं में प्रदूषण बढ़ रहा है, वह मानव जीवन के लिए तो अहितकर है ही, साथ ही हमारे स्वच्छ पर्यावरण के लिए भी विपरीत स्थितियां पैदा कर रहा है। हालांकि इसके लिए समय-समय पर सरकारी सहयोग लेकर गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा जागरण अभियान भी चलाए जाते हैं, परंतु परिणाम उस गति से मिलता दिखाई नहीं देता। ऐसे में प्रश्न यह आता है कि गैर सरकारी संस्थाओं के अभियान अपेक्षित परिणाम क्यों नहीं दे पा रहे हैं? इसके पीछे कहीं केवल कागजी काम तो नहीं हैं? भारत में कागजों में काम होने की बीमारी लगातार बढ़ रही है। वास्तविक धरातल पर कहीं भी काम दिखाई नहीं देता। प्लास्टिक मुक्ति का अभियान गैर सरकारी संस्थाओं ने बलि चढ़ा दिया। यह चिंतन का विषय है कि हमारी सामाजिक चेतना कम होने के कारण हम चैतन्यता के नाम पर शून्य की ओर ही बढ़ रहे हैं। यदि प्लास्टिक प्रदूषण बढ़ने की यही गति बनी रही, तो एक दिन हमें शुद्ध हवा से वंचित होना पड़ सकता है।

हम जानते हैं कि वर्तमान में वायु प्रदूषण के चलते हमारे शरीर में कई प्रकार के विषैले कीटाणु प्रवेश कर रहे हैं, जो हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव डाल रहे हैं और नई-नई बीमारियां जन्म ले रही हैं। भारत में कई बीमारियां केवल गंदगी के कारण हो रही हैं, चाहे वह प्लास्टिक कचरे से उत्पन्न गंदगी हो या फिर इसके कारण जाम नालियों के गंदे पानी से प्रदूषण से पैदा होने वाले वातावरण से पैदा होने वाली गंदगी हो। प्लास्टिक पॉलीथिन में बहुत से लोग घर का कचरा भरकर बाहर फैंक रहे हैं, जिसे हमारी गौमाता खाती है और हम जाने-अनजाने में गौहत्या का पाप कर रहे हैं। इसके साथ ही प्लास्टिक, पॉलीथिन और खाद्य सामग्री में उपयोग आने वाले प्लास्टिक के सामान रासायनिक पदार्थों के इस्तेमाल के कारण हमें जहर भरे खाद्य खाने के लिए विवश कर रहे हैं। इसके कारण हमारा स्वास्थ्य विकरालता की ओर जा रहा है। इसमें प्लास्टिक कचरे का बहुत बड़ा योगदान है। हालांकि हमारे देश में स्वच्छ भारत अभियान चलाया जा रहा है, लेकिन क्या हम जानते हैं कि प्लास्टिक कचरा स्वच्छ भारत अभियान की दिशा में बहुत बड़ा अवरोधक बन रहा है।

प्लास्टिक कचरे से मुक्ति पाने के लिए भाजपा की छत्तीसगढ़ सरकार ने एक सराहनीय कदम उठाया है। पहले २०१४ में छत्तीसगढ़ की सरकार ने पॉलीथिन पर प्रतिबंध लगाकर इससे मुक्ति का सूत्रपात किया था और अब प्लास्टिक से निर्मित प्रचार सामग्री और खाद्य पदार्थों के लिए उपयोग में लाई जाने वाली डिस्पोजल वस्तुओं पर भी पूरी तरह से प्रतिबंध लगाने का निर्णय लिया है। छत्तीसगढ़ सरकार का यह कदम सभी राज्यों के लिए एक पाथेय है। हम जानते हैं कि छत्तीसगढ़ क्षेत्र लम्बे समय से पिछड़ा हुआ क्षेत्र माना जाता था, लेकिन अब ऐसा नहीं है, छत्तीसगढ़ से यह पिछड़ेपन का ठप्पा धीरे-धीरे हटने लगा है। सरकार द्वारा चलाए जा रहे अभियानों के कारण वहां की जनता में चेतना जगी है। जिसका असर दिखाई देने लगा है।

प्लास्टिक कचरे के बारे में यह सबसे बड़ा सच है कि यह वास्तव में आयातित कचरा है। हमारे देश में कागज और कपड़े के बैग ही प्रचलन में रहते थे, लेकिन विदेशियों की नकल करने के कारण हम भी प्लास्टिक का उपयोग करने की ओर प्रवृत होते चले गए। यही प्रवृति आज हमारे देश की सबसे विकराल समस्या बनकर उभर रही है। हमने एक कहावत भी सुनी है कि 'अपना काम बनता, भाड़ में जाए जनता', यह सोच किसी तरह भी भारतीय संस्कृति का संवाहक नहीं हो सकती। यह सोच विदेशों की नकल है। आज प्लास्टिक कचरे का उपयोग भी कुछ इसी तर्ज पर किया जा रहा है। लोग अपना काम बनाने के लिए प्लास्टिक के सामानों का प्रयोग कर रहे हैं, और बाद में यही सामान कचरा बन जाता है, जो देश की जनता के लिए गंभीर समस्याओं को पैदा कर रहा है।

इस स्थिति को और आगे बढ़ने से रोकने के लिए छत्तीसगढ़ की सरकार ने अभूतपूर्व कदम उठाया है, लेकिन क्या सरकार के कदम उठाने मात्र से यह सफल हो सकेगा? नहीं। इसके लिए जनता की भागीदारी भी बहुत मायने रखती है। वास्तव में जिस देश की जनता अपने देश के प्रति तादात्म्य स्थापित करते हुए कार्य करती है, वह देश बहुत सुंदर और स्वच्छ होता है। हम भारत देश के निवासी हैं। इसलिए हमारे आचरण और कार्य में भारतीय संस्कृति का प्रदर्शन होना चाहिए। हमारी संस्कृति यही कहती है कि 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' अर्थात सभी सुखी हों, लेकिन आज के दौर में हमें यह चिंतन करना होगा कि क्या हमारे कार्यों से जनता को सुख की अनुभूति होती है, हम देश को स्वस्थ बनाने में अपनी ओर से कितना योगदान दे रहे हैं? यदि इसका उत्तर नहीं में है तो हम में भारतीयता का अभाव है।

आज हम देख रहे हैं कि हम भारत के नागरिक ही जाने-अनजाने में एक दूसरे के लिए समस्याओं का निर्माण करते जा रहे हैं। यह गति लगातार बढ़ रही है। देश में वातावरणीय समस्याओं का प्रादुर्भाव हमारी अपनी देन है, जो जाने-अनजाने में हमने ही पैदा की हैं। हम यह भी जानते हैं कि प्लास्टिक कचरे के कारण जिन बस्तियों में पानी भर जाता है, उसका एक मात्र कारण भी हम ही हैं। नालियां जाम होने से ही ऐसे हालात बनते हैं। स्वच्छ हवा प्रदान करने वाले पेड़ पौधे भी प्रदूषण का शिकार हो रहे हैं। ऐसे में हमें ताजी हवा

(शेष पृष्ठ ३२ पर)

खट्टा-मीठा

नये धर्म की तलाश

बीजू ब्रजवासी

'मैं अब हिन्दू धर्म छोड़ दूँगी!' अचानक बैठे-बैठे सोच में डूबे हुए उनके दिमाग का कोई कीड़ा कुलबुलाया और उन्होंने उठकर ऊँचे स्वर में यह घोषणा कर डाली। बगल के कमरे में बैठे हुए चन्द चमचे यह घोषणा सुनकर डर गये और उनके कमरे में घुस आये।

'क्या हुआ भैनजी?' सबसे मुँह लगे चमचे ने हिम्मत करके पूछ डाला।

'अब यह धर्म रहने लायक नहीं रहा। कोई मुझे वोट नहीं देता। न सवर्ण, न अवर्ण, न पिछड़े, न दलित! एक तो वैसे ही इस ससुरे धर्म से मेरा कोई लगाव नहीं था, अब तो एकदम ही मन उचट गया है। मैं इसे छोड़ दूँगी।' चमचों ने सामूहिक रूप से 'हूँ' का उच्चारण किया और सोचने लगे।

'आप किस धर्म में जायेंगी, भैनजी?' वरिष्ठ चमचे ने पूछ लिया।

'यही तो सोच रही हूँ। अभी तय नहीं किया।' वे निराशा के स्वर में बोलीं।

'इस्लाम कबूल लो। आजकल हिन्दू धर्म वाले सब मुसलमान बन जाने की धमकी देते हैं।'

'नहींऽऽ!' वे चीखीं, 'उसमें तो मूर्तिपूजा हराम है। मेरी सारी मूर्तियाँ तुड़वा देंगे।'

'यह बात तो सही है।' दूसरे चमचे ने हाँ में हाँ मिलायी।

'अगर कठमुल्लों ने बुर्का पहना दिया, तो मेरी सारी खूबसूरती बुर्के में रखी रह जाएगी।' वे फिर निराशा में डूब गयीं।

'ईसाई बन जाइए। उसमें बुर्के का कोई झंझट नहीं है।' तीसरे चमचे ने अपना ज्ञान बघारा।

'उनके पास तो वोट ही नहीं हैं। मेरी पार्टी का क्या होगा?' उनकी हताशा खत्म नहीं हो रही थी।

'और वहाँ आरक्षण भी नहीं मिलता।' पहला चमचा बोला।

'फिर तो हिन्दू धर्म में ही रहिए।' दूसरे चमचे ने निराशा से कहा।

'नहीं, हिन्दू धर्म तो छोड़ना ही है। सोच रही हूँ बौद्ध बन जाऊँ।'

'हाँ यह ठीक रहेगा, भैनजी!' पहला चमचा बोला। अन्य चमचों ने उसके समर्थन में सिर हिलाया।

इस तरह अन्त में यही तय हुआ कि वे बौद्ध बनेंगे। इससे कोई अधिक अन्तर भी नहीं पड़ेगा और आरक्षण भी मिलता रहेगा। यानी 'रिन्द के रिन्द रहे, हाथ से जन्नत न गयी।' ■

कविता कुंज

दूर हूं तुमसे, ये सच है/पर फिर भी, विश्वास है
तुम जरूर/महसूस करते होंगे मुझे
हाँ ! क्योंकि सुना है मैंने/लोगों को ये कहते हुए
प्रेम सच्चा हो तो/दो दिल जुड़ जाते हैं
और धड़कनें आपस में/तरंगित होने लगती है
फिर एक रूहानी एहसास/दोनों के बीच
जज्बातों की कड़ियाँ पिरोती है

सुनो ! मेरे हृदय में व्याप्त प्रेम
मन का संवाद, तन की इच्छा
सब तुममें समाहित हो गई है
मैं नहीं अब खुद में
निर्जीव तन मेरा
संवेदनाओं से परे/बस एक आकार मात्र है
प्रेम जिस्म छोड़ देता है/ये बात जान चुकी हूँ मैं
जैसे चिता से उठता धुँआ
और राख में तब्दील जिस्म का सच

-- बबली सिन्हा

हाँ मैं जीना चाहती हूँ/किन्तु तुम्हारे अधीन रहकर नहीं
स्वतंत्र होकर/सभी बंधनों से मुक्त होकर
आखिर मेरे लिए ही सभी बंधन बने हैं
तुम्हारे लिए कुछ नहीं/तो आज सुन लो
अब से मैं भी नहीं बंधने वाली/किसी बंधन में
हाँ मैं नारी हूँ/विभिन्न रूपों में पायी जाती हूँ
माँ, बेटी, बहन, बहू न जाने कितने ऐसे रूपों में
और रखती हूँ सबका हमेशा ख्याल
बिना किसी खिच-खिच और रूसवाइयों के
इतना करने के बाद भी

सभी नियम कानून
मुझ पर ही लागू होते हैं
यहाँ न जाओ वहाँ न जाओ
ये न करो वो न करो
मेरा भी अधिकार है स्वाभिमान के साथ जीना
कुछ अस्तित्व है मेरा कहीं तुमसे बढकर
तुम भी तो हो एक पिता, भाई, पति, बेटा
तो तुम पर क्यों नहीं लागू होते सभी नियम
जो मुझ पर लागू हैं।

-- निवेदिता चतुर्वेदी 'निव्या'

किसी ऋषि ने/जाने किस युग में रोष में दिया होगा
सूरज को महाशाप/नियमित, अनवरत, बेशर्त
जलते रहने का/दूसरों को उजाला देने का
बेचारा सूरज/अवश्य होता होगा निढाल
थककर बैठने का/करता होगा प्रयास

बिना जले/बस कुछ पल
बहुत चाहता होगा उसका मन,
पर शापमुक्त होने का उपाय
ऋषि से बताया न होगा,
युग सदी बीते, बदले
पर वह फर्ज से नही भटका
न कभी अटका/हमें जीवन और ज्योति दे रहा है
अपना शाप जी रहा है। कभी-कभी किसी का
शाप दूसरों का जीवन होता है

-- डॉ जेन्नी शबनम

हाय रे गरीबी!
कैसा ये जुल्म है/कोई खाकर मरे
तो किसी को/अन्न नही खाने को
क्या कुदरत की माया है
किसी को दिए महल अटारी
किसी का झोपडी निवास बना
किसी को वस्त्र ही वस्त्र/तो किसी को निर्वस्त्र बना दिया
क्या कुदरत की माया है/क्यो जुल्म सहते ये बच्चें
क्या सोचते विधाता/ये करम क्यों दिखाये ये कली को!

-- बिजया लक्ष्मी

मेरे प्रियतम ! तुम्हारे प्यार से
खुद को सजाना मुझे अच्छा लगता है
सुहाग की निशानियों से
अपना प्यार जतलाना
मुझे अच्छा लगता है
तुम्हारी समृद्धि के लिए
भवों के बीच कुमकुम की बिंदी लगाना
मुझे अच्छा लगता है
तुम्हारे प्यार को दर्शाती हाथों में मेहंदी का
गहरा लाल रंग रचाना मुझे अच्छा लगता है
तुम्हारी लंबी उम्र के लिए
और प्रेम की मर्यादा बनाये रखने के लिए
मांग में सिंदूर सजाना
और मांग टीका लगाना मुझे अच्छा लगता है।

-- नीरजा मेहता

मुश्किलें लाख सही/डगर कठिन ही सही
आसान भले ना हो चलना/लेकिन चलना पड़ेगा ही
दर्द भी होगा, जख्म मिलेगें
समय समय पर तानों के बाण चलेंगे
आसान भले ना हो सहना/लेकिन चलना पडेगा ही

चित भी उनकी, पट भी उनकी
जीवन जीने की आशा उनकी
आसान भले ना हो रहना
लेकिन चलना पडेगा ही
बचने की कोई उम्मीद नहीं
थकने की कोई रीत नहीं
आसान भले ना हो रुकना/लेकिन चलना पडेगा ही
मझधार में भले ही नाव हो/साहिल की उम्मीद ना हो
आसान भले ना हो तरना/लेकिन चलना पडेगा ही!

-- जयति जैन (नूतन)

क्षणिका

त्रासदी है...
घबरा के.../छुप-छुप के,
किताबों में घुस के
जूझते देखा/नादान बचपन को
जानने शब्दों का अर्थ,
जो सुने थे उसने/पहली बार
विद्यामंदिर के बाहर
मनचलों के मुख से

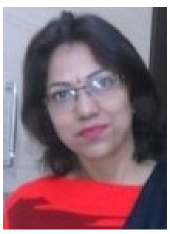

-- अंजु गुप्ता

मुझे याद है वो शाम/जब तुम पहली बार
मेरे पास आई थीं/आंखें नीचे किये थोड़ा मुस्कुराई थी
तुम्हारी यूं शर्माती नजरों से

मेरे मन में एक बात आई थी
जो कह दी थी मैंने तुम्हें
और तुम कैसे सकपकाई थी
चाहता तो मैं भी था
थोड़ा सा और पास आऊं
खींच कर अपनी ओर/अपने गले से लगाऊं
पर जाने क्यूँ मेरी अंतरात्मा ने/मुझे वो झाड़ लगाई थी
कि न छू पाया तुम्हें/जो मैंने आस लगायी थी
पर शायद इसी वजह से/तुम आज तक मेरे साथ हो
दूर हो तो क्या हुआ/मेरे अहसासों में तो पास हो
गर छू लिया होता तुम्हे उस दिन
तो आज ये प्यार जीवित न होता
मन का मन से रिश्ता/यूं प्रेरित न होता

-- महेश कुमार माटा

ठहरी हुई इक झील में, हलचल मचा गया कोई
सोए से थे अरमां मेरे, ख्वाब जगा गया कोई
उसकी गहरी सी आंखों में,

धारा सी उतर जाती हूं मैं
उसकी सांसों की गर्मी से,
शमा सी पिघल जाती हूं मैं
उसके करीब आकर जैसे,
छुईमुई सी सिमट जाती हूं मैं
वो प्राण मेरा मैं काया हूं, वो दर्पण है मैं साया हूं
उसमें बसी सांसें मेरी, मैं तो उसका हमसाया हूं
वो चंदन है मैं पानी हूं, ये सच है मैं दीवानी हूं
वो सुंदर स्वप्न सलोना है, मैं सपनों की रानी हूं

-- लीना खत्री

एक जमीन थी हरियाली/पशु पक्षियों का बसेरा
जीव-जंतुओं का डेरा/वहाँ शांति थी सुकून था
लोग वहाँ आते थे घूमने/देखने सौंदर्य प्रकृति का
एक दिन अचानक वहाँ/मशीनों से होने लगी खुदाई
उस धरती को खोदा जाने लगा

जंतुओं के घरों को रोंदा जाने लगा
क्योंकि वहाँ फैक्ट्री लगनी थी
काम पूरा हुआ फैक्ट्री बन गई
उद्घाटन के समय उसके मालिक ने
एक-एक फूल दिया अतिथियों को
फूल मुरझा गया वो जल्द ही
सोचकर कि मेरा संसार तो/उजड़ ही गया है
इसी तरह तुम्हारा उजड़ेगा
प्रकृति का नियम है परिवर्तन
कभी यहाँ साँस लेने के लिए/लगाए जाएँगे वन शायद
क्योंकि मर रहे होगे तुम सब/बिना ऑक्सीजन के
या कभी यहाँ प्रकृति के प्रकोप से
नष्ट हो जाएगा तुम्हारा तामझाम
फिर हम उगेंगे यहाँ/बिखेरेंगे अपनी खुशबू पुनः

-- नवीन कुमार जैन

स्वाभिमान

घर में अजीब सा सन्नाटा छाया हुआ था। शाम जब से पिताजी ने पांडे जी से फोन पर बात की तभी से पिताजी बेचैन और माँ उदास दिखीं। मीनू दी को शायद वजह पता चल चुकी थी,उनकी तरफ इना ने प्रश्नवाचक नजरों से देख जानना चाहा तो दीदी नजरें चुरा आंसू पोंछ रही थीं। शायद पांडे परिवार ने पसंद की मोहर नहीं लगाई।

कल सुबह से ही घर में हलचल मची थी। लड़के वालों की आवभगत में कोई कमी ना रहे, सो घर को दुल्हन सा सजाया गया था। वैसे इरादा तो होटल में जाकर दिखाने का था, किन्तु दादी माँ भी लड़के को एक नजर देखना चाहती थीं और वो होटल जाने को तैयार नहीं थीं। लड़का फौज में मेजर है, इना की हिंदी टीचर का बेटा, गोरा-चिट्टा, छप्पन इंची चौड़ी छाती का सुदर्शन, मृदुभाषी।

पांडे जी सपरिवार आये, तो दी हलके मेकअप और गुलाबी साड़ी में सजी चाय लेकर कमरे में गयीं। थोड़ी औपचारिक बातों के बाद उन्हें वापिस अन्दर भेज दिया क्योंकि वो सबके सामने सहज नहीं हो पा रही थीं। लेकिन इना तो अपनी मैडम से निस्संकोच बतियाये जा रही थी, उसे किस बात का संकोच होता? एक घंटा पूरा परिवार यहाँ वहां की बात कर वापिस चला गया था और इना डूब गयी दीदी की शादी की तैयारी के सपनों में। अब समझ नहीं आ रहा था यह सन्नाटा क्यों है?

वो सोच में डूबी बैठी थी तभी माँ कमरे में आयीं। 'इना, तुम्हारी मैडम और उनके परिवार को मीनू की जगह तुम पसंद हो। वैसे हमने उनसे कह दिया है कि शादी हम पहले मीनू की ही करेंगे वो इना से छह साल बड़ी है और इना की पढाई अभी पूरी नहीं हुई। लेकिन रिश्ता पक्का करने से पहले तुम्हारी मंशा जान लेना जरूरी है तो सोच के बताओ क्या तुम्हें रिश्ता पसंद है?'

इना पर गाज सी गिर गयी। यह क्या बात हुई भला? वैसे मैडम के बेटे में कोई बुराई नहीं थी लेकिन दीदी की भावनाओं का क्या? वो जब भी उनसे मिलेंगी तो दिमाग में यही बात होगी कि इनका रिश्ता मेरे लिए आया था। क्या खुद इना के मन से ग्लानि जायेगी कभी?

'माँ हम लड़कियां कोई सब्जी-भाजी थोड़े ही हैं

कि यह नहीं वह? मेरी तरफ से साफ ना है, आप मना कर दो। आखिर उन्हें भी तो पता चले कि अस्वीकार करने का दुःख कैसा होता है।'

-- पूर्णिमा शर्मा

सिफारिशी पत्र

रमण भारती एक कंपनी में ऊंचे ओहदे पर कार्यरत था। कई साल बाद एक बार फिर उसका तबादला उसके गृहनगर में ही हो गया था। घर लौटते हुए रास्ते में एक रेहड़ीवाले को देखकर रमण रुक गया। चेहरा कुछ जाना पहचाना सा लग रहा था लेकिन ठीक से याद नहीं आ रहा था कि तभी रेहड़ी वाले ने उसे देखा और फिर मुस्कुराते हुए उसकी तरफ बढ़ते हुए बोला 'यार रमण! कैसा है तू? बहुत दिनों बाद तुझे देखकर बहुत अच्छा लग रहा है।'

अब रमण भी अपने मित्र सुरेश को पहचान चुका था। सुरेश जो कि प्राथमिक शाला से ही उसका सहपाठी और सबसे अच्छा मित्र था। कक्षा में अक्सर प्रथम आता, जबकि रमण पढ़ाई में औसत था। उसे याद आया कि कालेज में भी अंतिम वर्ष की परीक्षा उसने प्रथम श्रेणी से पास की थी। परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद रमण नौकरी के सिलसिले में दूसरे शहर में रहने लगा था और अपने प्रिय मित्र से उसका संपर्क टूट गया था। आज अचानक उसे और वह भी एक साधारण सी रेहड़ी लगाए देखकर उसे आश्चर्य हुआ। बोला 'सुरेश ! तुम तो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुए थे न? और फिर भी...'

सुरेश उसका आशय समझ गया था। बोला 'क्या करता रमण? मैं प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण तो हुआ था

लेकिन मेरे पास डिग्री से भी बड़ी चीज 'जाति प्रमाणपत्र' जो नहीं था और न ही था किसी बड़े आदमी का सिफारिशी पत्र।'

-- राजकुमार कांदु

पराजय

संध्या और विशाल के बीच जमकर आरोप प्रत्यारोप का दौर चल रहा था।

'तुम्हें हर चीज का दोष मुझ पर मढ़ने की आदत है। क्योंकी तुम तो किसी चीज की जिम्मेदारी लेना जानते नहीं हो।' संध्या ने चिढ़कर कहा।

'तो तुम मुझे जिम्मेदारी का पाठ पढ़ाओगी। पहले खुद तो सीख लो।' 'कौन सी जिम्मेदारी नहीं निभाई मैंने आज तक।' 'कहाँ तक गिनाऊं। रहने दो।' 'कहने को तुम्हारे पास कुछ है नहीं, सो रहने ही दो।'

बहस बढ़ती गई। दोनों ही अपने जुमलों को पहले से और धारदार बनाकर एक-दूसरे पर उछालने लगे। दिल खोलकर भड़ास निकाल लेने के बाद दोनों एक दूसरे को नीचा दिखाने में सफल रहने की तसल्ली के

साथ शांत हो गए। तभी उनकी नजर कमरे में सहमी बैठी अपनी बेटी पर पड़ी। अचानक ही विजय का भाव पराजय में बदल गया।

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

आक थू...

रात के दस बज रहे थे। अनुपम का विदेशी नस्ल का कुत्ता जोर-जोर से भौंक रहा था, शायद घर में हो रहे शोर-शराबे व अनजान चेहरों के जमावड़े को देखकर वो ऐसा कर रहा था।

अनुपम की शादी की यह पाँचवीं सालगिरह पार्टी थी। मेहमानों के साथ पीने-पिलाने का दौर चल रहा था पर कुत्ता भौंक-भौंककर सभी के कान फाड़े दे रहा था। अनुपम अपने नौकर चंदू पर चिल्लाया- 'कहाँ मर गया रे चंदू... इस कुत्ते को बाहर बगीचे में ले जा।' इतना सुनते ही चंदू कुत्ते को ले गया और बगीचे में बांध आया, आकर मेहमानों की सेवा में पुनः लग गया।

अनुपम को अब शांति मिल चुकी थी, तभी उसके बॉस शर्मा जी ने उसके कंधे पर हाथ रखते हुए पूछ लिया- 'अनुपम! तुम्हारे पिताजी दिखाई नहीं दे रहे, वो बीमार हैं क्या?'

अनुपम अपने बॉस की बात सुनकर सकपका गया, उससे कोई जवाब नहीं बना। वहाँ खड़ा चंदू बोल पड़ा- 'साबजी! दादाजी तो आश्रम चले गये, उनकी जगह वह विदेशी नस्ल का कुत्ता साबजी ले आये हैं।'

शर्मा जी अनुपम को देखते हुए बोले- 'कौन से आश्रम में गये हैं अनुपम तुम्हारे पिताजी।'

'जी... जी... वो! वो! पास के ही वृध्दाश्रम में हैं।' अनुपम हकलाता हुआ बोला।

शर्मा जी- 'वाह! अनुपम कितना अच्छा काम किया है। आज पार्टी में हजारों खर्च कर रहे हो, घर में विदेशी नस्ल का कुत्ता ले आये। क्या तुम्हारे पिताजी का खर्च उस विदेशी नस्ल के कुत्ते के रखरखाव से भी ज्यादा हो गया। लानत है ऐसे कुपुत्र पर! आक थू...'

शर्मा जी अनुपम को खरी-खोटी सुनाकर पार्टी छोड़कर चले गये और अनुपम नीचे जमीन पर नजरें गढ़ाये बुत बना खड़ा रहा।

-- मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

चुगली

विनीता परेशान थी। अभी अभी बेटे के बोर्डिंग स्कूल के प्रिंसिपल का फोन आया था। वही शिकायत 'अनुशासनहीन है, अध्यापकों का कहना नहीं मानता।'

कितना प्रयास किया था उसने कि पिता के दुर्गुण उसमें ना आएं। उसे सबसे महंगे बोर्डिंग स्कूल में भेजा था। लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ।

बाहर अपनी समस्या लेकर आए लोगों की भीड़ सभासद महोदया का इंतजार कर रही थी।

विनीता ने खुद को आइने में देखा। चेहरे पर एक मुस्कान चिपकाई। लेकिन आँखें चुगली कर रही थीं।

उसने मंहगे सनग्लास आँखों पर चढ़ाए और बाहर निकल गई।

-- आशीष कुमार त्रिवेदी

(तीसरी किस्त)

शान्ति

मनमोहन भाटिया

'मशीन भी तो खराब हो जाती है?'

'नई मशीन खरीद लो, यही नुस्खा अपनाया जाता है। मनुष्य की कोई औकात नहीं है, मशीन से भी खराब हैसियत है। काम में जरा सी देरी हुई नहीं, फौरन आर्डर हो जाते हैं, निकालो सालों को, नई भरती कर लो।' विमल के इस तर्क पर वृन्दा चुप होकर रसोई के कार्यों में जुट गई।

लगभग बीस दिनों के बाद विमल का काम रूटीन पर आया। शनिवार के हाफ डे पर ठीक दोपहर के दो बजे विमल ने ब्रीफकेस उठाया, घर की ओर रवानगी की। जैसे ही गली में प्रवेश किया, शान्ति अपने घर के दरवाजे पर खडी थी। विमल को देखकर मुस्कुराकर बोली, 'भाई साहब नमस्ते।' शिष्टाचार के कारण विमल ने कुछ पल के लिए रुककर शान्ति की नमस्ते का जवाब दिया। शान्ति और विमल का वार्तालाप दस मिनटों तक चलता रहा। आफिस और फिर सुबह के समाचारपत्र की सुर्खियों के बाद टीवी सीरियल पर बातें हो गई। दस मिनट बाद कुछ झेंपकर शान्ति बोली। 'अंदर आईये, भाई साहब, मैं भी कितनी पागल हूं, कि आप आफिस से थके आए हैं, आपको बैठने को भी नहीं कहा।'

'नहीं शान्ति, बहुत दिनों बाद आज दोपहर का भोजन वृन्दा के साथ करने का मौका मिला है, रुकूंगा नही।' कहकर विमल ने घर की ओर प्रस्थान किया।

'ओके बाइ, भाई साहब।' कहकर शान्ति भी घर के अंदर चली गई।

घर के दरवाजे पर वृन्दा विमल का इंतजार कर रही थी, हंसते हुए बोली, 'सहेली से गपशप कर आए।'

थोडा झिझकते हुए विमल हैरानी से बोला, 'सहेली, कौन सहेली? सीधा आफिस से आ रहा हूं।'

'मैं तो दस मिनटों तक यहां दरवाजे पर इंतजार करते हुए शान्ति के साथ आपका मधुर वार्तालाप देख रही थी, अफसोस है कि बातें सुन नहीं सकी।'

'ओ शान्ति! उसने तो पकड ही लिया, शिष्टाचार वश वार्तालाप हो गया।'

'ठीक है मैं कुछ कह थोड़े रही हूं, अंदर चलो। कितने समय बाद आज मौका मिला है साथ-साथ खाना खाने का, समय व्यर्थ गवाना नहीं है।' कहकर वृन्दा ने विमल के हाथ से ब्रीफकेस लिया। हाथ-मुंह धोकर विमल ने खाना खाते हुए वृन्दा से पूछा, 'आखिर क्या बात है कि लोग शान्ति को पागल कहते हैं? आज दस मिनट के वार्तालाप में वह मुझे समझदार, अकलमंद लगी। हर विषय पर बात कर सकती है। राजनीति, खेलकूद, सिनेमा, टीवी, कोई विषय नहीं छोडा उसने। फर्राटेदार अंग्रेजी भी बोलती है। लोग पागल क्यों कहते हैं उसको?'

खाना खाने के बाद सर्दी की धूप सेंकते हुए वृन्दा ने कहा, 'शान्ति मेरे पास हर रोज आती है, जो उसके बारे में तुम्हारी राय है, ठीक वही राय मैं रखती हूं उसके बारे में। कई बार जब उसका मन विचलित होता है तो अपना दुखड़ा सुनाती है। उसकी बातों में सच्चाई है। शान्ति नाम उसका अवश्य है, लेकिन दुनिया ने उसका जीवन अशान्त बना रखा है। शान्ति ने दिल्ली विश्वविद्यालय के मिरांडा कालेज से अंग्रेजी में एम.ए. किया है। एक तो अमीर मां-बाप की संतान और फिर उस समय लड़कियां नौकरी में कम ही जाती थीं। कम से कम अमीर घराने की लडकियों का तो नौकरी करने का कोई मतलब ही नहीं होता था।

एक संपन्न घराने में विवाह हो गया। पूरी गृहस्थन बन गई शान्ति। लेकिन नियति को कुछ और मंजूर था। तीसरे बच्चे की डिलीवरी के समय शान्ति का स्वास्थ्य बिगड गया, नौबत यहां तक आ गई कि मां या बच्चे में से कोई एक बच सकता था। डाक्टरों के प्रयास से शान्ति तो बच गई, लेकिन बच्चे को बचाया नहीं जा सका। दो साल तक शान्ति बिस्तर के हवाले थी। छोटे बच्चों के लालन-पालन के साथ शान्ति का बिस्तर पर पडा शरीर ससुराल के साथ पति को भी एक बोझ लगने लगा। ससुराल वालों ने शान्ति को मायके भेज दिया। शारीरिक रूप में असमर्थ शान्ति ने पति को दूसरे विवाह की अनुमति इस आधार पर दी कि कम से कम उसके बच्चों का लालन-पालन सही हो सकेगा।

छोटे बच्चे अपनी मां को भूल गए, सौतेली मां को अपना समझने लगे। अपने बच्चों से मिलने की आशा ने शान्ति को नया जीवनदान दिया। प्रबल इच्छा शक्ति के कारण बिस्तर से उठकर अपने पैरों पर खडी हो गई, लेकिन लम्बी बीमारी ने उसका यौवन खींच लिया था। एक थके हुए शरीर को पति ने स्वीकार नहीं किया। बच्चों को यह कहकर दूर कर दिया कि वह तो पागल है। बच्चों के नाजुक मन पर एक ऐसी छाप छोडी कि बच्चे शान्ति के कंकाल जैसे शरीर को देखकर सहम जाते। पति एक असहाय, लाचार, टूटे-फूटे शरीर, अस्वस्थ पत्नी से पीछा छुडाना चाहता था। यदि बच्चे उसके साथ घुलमिल जाते तो दूसरा विवाह मुश्किल था। उससे छुटकारा पाने के लिए पागलखाने में डाल दिया। पति और बच्चों से जुदाई जब भी शान्ति याद करती तो बेतहाशा रोने लगती। अपने अंदर की अग्नि को शांत करने के लिए चिल्लाने लगती।

उसके मांबाप यही समझते कि शान्ति सचमुच में पागल हो गई है। उसको पागलखाने भी रखा गया। बिजली के झटके भी लगाए जाते। वह बच्चों की जुदाई में रोती रहती और दुनिया उसे पागल कहती। उसका दर्द कोई नहीं समझ सका। आखिर थककर शांत हो गई तो पागलखाने से छुट्टी मिल गई। तबसे वह अपने बूढे मांबाप के संग रह रही है। किसी ने उसकी वेदना नहीं समझी। अकेले में जब तड़पती, तो सभी उसे पागल समझते। मुझे तो लगता है कि जो शान्ति को पागल समझता है, वह खुद सबसे बडा पागल है। एक अस्वस्थ स्त्री को पागल बनाकर छुटकारा पाना सबसे बडी मूर्खता है लेकिन हर व्यक्ति सिर्फ अपना स्वार्थ ही देखता है। दूसरा जाए चाहे भाड में। वह पागल नहीं थी।

एकान्त में बातों को याद करके रोया करती। उसका रोना सबको पागलपन लगता। बच्चे छेड़ते तो गुस्सा आ जाता। वह क्या कोई भी ऐसे मौके पर अपना आपा खो देगा। इसमें शान्ति का कोई कसूर नहीं। विमल और वृन्दा की नजरों में शान्ति एक आम इंसान थी। पडोसी, गली में हर व्यक्ति यहां तक कि उस खुद के मां-बाप भी पागल ही कहते। हर कोई उन्हें सलाह देता कि शान्ति से दूर रहें। क्यों एक पागल के साथ दोस्ती बना रहे हो? लेकिन उनका दिल नहीं मानता था। शान्ति उनके घर का एक हिस्सा बन गई थी। विमल के साथ समाचारपत्र पढ़ते हुए सामयिक विषयों पर चर्चा करती शान्ति विमल को एक दार्शनिक प्रतीत होने लगी।

रविवार को विमल घर के आंगन में बैठकर गमलों में लगे पौधों की देखभाल कर रहा था। तभी शान्ति आई। मिट्टी से सने कपडों में विमल को देखकर वह हंस दी, 'भाईसाहब आप कभी खाली नहीं बैठते। रविवार को छुट्टी का दिन है। आप पौधों की देखभाल में जुट गए।'

'शान्ति पौधों में भी जान होती है। बिना देखभाल के मुरझा जाएंगे। देखो यह तुलसी का पौधा है, तुलसी में औषधीय गुण हैं। यं गुलाब के पौधे।' इतना सुनकर शान्ति बोल उठी, 'गुलाब की महक ही अलग है। तभी भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू अपनी अचकन में गुलाब का फूल लगाते थे।'

वृन्दा दोनों की बातें सुन रही थी, उसने शान्ति को संबोधित करते हुए कहा, 'नेहरू जी, कभी-कभी तुम्हारे भैया फंसते हैं घर के कामकाज में हाथ बंटाने के लिए। उनको काम करने दे और तू अंदर रसोई में आकर मेरा हाथ बँटा।' इतना सुनते ही शान्ति खिलखिलाते हुए लंबे डग भरते हुए वृन्दा के साथ रसोई में जुट गई।

जैसे जैसे समय बीतता गया। शान्ति की विमल, वृन्दा के साथ घनिष्ठता बढती गई। शाम को जब विमल आफिस से घर पहुंचता तो अक्सर वृन्दा के साथ शान्ति भी घर के दरवाजे पर स्वागत के लिए मिलती।

रविवार की दोपहर विमल और वृन्दा शापिंग करके घर वापिस आ रहे थे। शान्ति के घर शोर सुनकर दोनों के कदम ठिठके। शान्ति दीवारों से सिर पटक पटककर कह रही थी, 'मुझे जाने दो'। सिर से खून बह रहा था। उसके बुजुर्ग मां-बाप उसे संभालने में असफल थे। विमल और वृन्दा ने शान्ति को पकडा। उन दोनों को देखकर शान्ति को कुछ हौसला हुआ कि वे दोनों उसकी बात समझेंगे। उसका उग्र विरोध शान्त हुआ। सबसे पहले नर्सिंग होम ले जाकर पट्टी करवाई।

(अगले अंक में समाप्त)

देखो-देखो यह खिला चाँद, किस्मत से मुझको मिला चाँद
पहले चाहों में साथ रहा, मेरी राहों में साथ रहा
जब खिड़की खोली कमरे की, घंटों बाँहों में साथ रहा
मन झील सरीखा है अब भी, है जहाँ रहा झिलमिला चाँद
फिर पड़ी अमावस दूर गया, पर खुशियाँ दे भरपूर गया
मैं तन से मन तक दमक उठा, वो इतना देकर नूर गया
जब भी नभ में देखूँ, लगता है वहाँ रहा खिलखिला चाँद
माना उससे अब दूरी है,
लेकिन उसकी मजबूरी है
फिर भी वो मिलने आयेगा,
उम्मीद मुझे यह पूरी है
है दूर भले ही मुझसे पर,
रखता अब भी सिलसिला चाँद

-- डॉ. कमलेश द्विवेदी

अंधकार की छाती पर, कोई एक दिया तो जला डाले
जिनके घर फाके पड़ते, कोई उनकी दिवाली मना डाले
कहीं पे दीपक जलेंगे बेशक, कहीं जलेगा घर द्वारा
तुम खुशियों की रोशनी करोगे, वो दूर करेंगे अंधियारा
तुम खुशियों से जब झूमोगे, वो मां का दामन खीचेंगे
सब तिजारत फूंकेंगे, कोई उनकी मुफलिसी जला डाले
पकवान भी फेंके जायेंगे, कुछ लोग तरसकर रह जायेंगे
जब दुनिया दीप जलायेगी, वो छुपकर अश्क बहायेंगे
कहीं पिता मजबूर मिलेगा, कहीं पे मां लाचार मिलेगी
मासूमों के अरमान वो सारे, कोई तो पूरे कर डाले
ऐ कैसी दिवाली आई है, नई मुसीबतें लाई है
कोई भूख से लड़ रहा है, सीमा पे होती लड़ाई है
कई ठहाके गूंजेंगे तो, कई सिसकियां भी होंगी
अडचनों की बड़ी दीवारें, कोई यहां गिरा डाले
जिनकी शबें अंधेरी हैं, उनको नया शबाब मिले
बहे हुए अश्कों का उनको,
आज नया हिसाब मिले
खुशियों का कायम 'राज' रहे
कोई ना मोहताज रहे
बस यही हमारी आरजू है,
खुदा मुसीबत ना डाले

-- राजकुमार तिवारी 'राज'

अँधियारे से लड़कर हमको, उजियारे को गढ़ना होगा
डगर भरी हो काँटों से पर, आगे को नित बढ़ना होगा
पीड़ा, गम है, व्यथा-वेदना, दर्द नित्य मुस्काता
जो सच्चा है, जो अच्छा है, वह अब नित दुख पाता
किंचित भी ना शेष कलुषता, शुचिता को अब वरना होगा
झूठ, कपट, चालों का मौसम, अंतर्मन अकुलाता
हुआ आज बेदर्द जमाना, अश्रु नयन में आता
जीवन बने सुवासित सबका, पुष्प-सा हमको खिलना होगा
कुछ तुम सुधरो, कुछ हम सुधरें, नव आगत मुस्काए
सब विकार, दुर्गुण मिट जाएं,
अपनापन छा जाए
औरों की पीड़ा हरने को,
खुद दीपक बन जलना होगा
डगर भरी हो काँटों से पर,
आगे को नित बढ़ना होगा

-- प्रो. शरद नारायण खरे

श्वेत, धवल, उजले आंगन पर मैंने,
इक कलम कुछ स्याही लेकर,
अन्तर्मन के अंतर्द्वंद की भावनाऐं उकेरी हैं
फिर भी कैसे कह दूं लोगो ये कविता मेरी है
दो शब्द मां ने लिखवाऐ, दो अक्षर मेरे बाबा के
कुछ अक्षर मिले मुझे मथुरा, काशी, काबा के
कितने ही रूपों में मिली, ये शब्दों की हेराफेरी है
इन शब्दों से शायद कोई, मसला हल हो जाए
मैं सफल हो जाऊं, मेरी कलम सफल हो जाए
कुछ प्रतिफल मिल जाए, अब इतनी सी तो देरी है
लिये कारवां संग मुझको, दूर बहुत अब जाना है
मातृभूमि के लिए जीने की,
अलख मुझे जगाना है
दूर बहुत सवेरा अब भी,
ये रात बडी अंधेरी है
फिर भी कैसे कह दूं
लोगो ये कविता मेरी है

-- जयकृष्ण चांडक 'जय'

एक युग बीता एक युग आया, युग आयेंगे जायेंगे
जो कर जाते काम सुनहरे, युग-युग गाये जायेंगे
जी कर भी जो जी ना पाये
नाकामी में दिवस गंवायें
बने रहे जो आये-जाये
बैठ किनारे सोचा करते, वो मोती कैसे पायेंगे
तुमसे आश जगत करता है
मन की गागर वो भरता है
गत इतिहास से डरता है
रीती रह गयी अगर कहीं जो, फिर से वो पछतायेंगे
अमिट बनो हस्ताक्षर ऐसा
जो समय से मिटे ना वैसा
राह कठिन घबराना कैसा
लगातार चलने वाले ही, एक दिन मजिल पायेंगे
बात है ये सीधी साधी
ना करनी समय बरवादी
अब तो तीर-कमान हैं साधी
मीनचक्षु लक्ष्य है जिनका,
वो द्रोपदि वर के लायेंगे

-- विश्वम्भर पाण्डेय 'व्यग्र'

बहुत नाचे, बहुत खेले, वो कांटे भी बहुत झेले
वो सरसों का खेत पिला, अब मुझे बुलाता है
वो बचपन का था इतराना, मुझे अब याद आता है
सभी की बात होती थी, गजब की रात होती थी
ढूंढा करते थे सब जुगनूँ, महफिलें आबाद होती थी
यह दिलकश नजारा ही, मुझे गांव में खींच लाता है
सभी बैठकर साथ खाते थे,
बड़ा ही ऊधम मचाते थे
कोई जानता रागिनी दो,
किसी से पांच गवाते थे
वह मटका जो टीप बांधे
मुझे अब भी बहुत भाता है

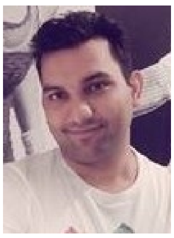

-- परवीन माटी

सुबह से शाम तक सब पर बड़े एहसान करती है
हमेशा अपने मायके का स्वयं गुणगान करती है
बड़ी अच्छी मेरी बहनें बड़े प्यारे मेरे भाई
मेरा घर खूब था जब तक न आई थी ये भौजाई
ये जब से आ गई घर में बहुत हलकान करती है
हमेशा अपने मायके का स्वयं गुणगान करती है
बिगड़ जाये अगर रिश्ता बनाना मुझको आता है
इधर का हो उधर का हो निभाना मुझको आता है
नजर में खुद की हर रिश्ते का पूरा मान करती है
हमेशा अपने मायके का स्वयं गुणगान करती है
कमाते हो अगरचे तुम तो मैं भी तो कमाती हूँ
अगर तुम जाते हो दफ्तर तो मैं भी रोज जाती हूँ
ये नारी आज की जारी यही फरमान करती है
हमेशा अपने मायके का स्वयं गुणगान करती है
मेरा खाना बहुत सात्विक न आयें जायके वाले
अगर आना है बस आयें
मेरे ही मायके वाले
वो अपनी मुट्ठियों में
बंद हर तूफान करती है
हमेशा अपने मायके का
स्वयं गुणगान करती है

-- मनोज श्रीवास्तव

लघुकथा

परिवर्तन

'मम्मी! ऑन लाइन आर्डर कर दूँगा, या चलिए मॉल से दिला दूँगा, वह भी बहुत खूबसूरत-बढ़िया दीये। चलिए यहाँ से। इन गँवारो की भाषा समझ नहीं आती, ऊपर से रिरियाते हुए पीछे ही पड़ जाते हैं।'

मम्मी उस दूकान से आगे फुटपाथ पर बैठी एक बुढ़िया की ओर बढ़ी, उसके दीये खरीदने को। जमीन पर बैठकर ही चुनने लगीं।

'क्या मम्मी, आपने तो मेरी बेइज्जती करा दी, मैं हाईकोर्ट का जज और मेरी माँ जमींन पर बैठी दीये खरीद रही है। जानती हो कैसे-कैसे बोल बोलेंगे लोग?'

'जज साहब!' बीच में ही माँ आहत हो बोली, 'इसी जमीन पर बैठकर ही दस साल तक सब्जी बेची है, और कई तेरे जैसों की मम्मियों ने ही खरीदी है मुझसे सब्जी, तब जाके आज तू बोल पा रहा है।' संदीप विस्फारित आंखों से माँ को बस देखता रह गया।

'वह दिन तू भले भूल गया बेटा, पर मैं कैसे भुलूँ भला! तेरे मॉल से या ऑनलाइन दीये तो मिल जायेंगे, पर दिल कैसे मिलेंगे भला?'

दीये बेचने वाली बुढ़िया नम आँखों से बोली, 'हमार पोता भी इही छोट मोट काम भरोसे पढ़ी रहा है। बेटवा मूरति की रेहड़ी लगाए बा उहा।' कहकर उँगली दिखा दी। मम्मी उस दुकान की ओर बढ़ी, तो संदीप तिलमिलाया, लेकिन उस गरीब बुढ़िया की आँखों के आँसू मोती से चमक उठे।

-- सविता मिश्रा

(सत्रहवीं कड़ी)

शान्तिदूत

विजय कुमार सिंघल

इसके साथ ही धौम्य ने यह भी कह दिया कि पांडव नहीं चाहते कि राज्य के लिए उन्हें अपने ही सगे चचेरे भाइयों से युद्ध करना पड़े। लेकिन यदि उनका न्यायपूर्ण अधिकार नहीं दिया गया, तो वे युद्ध से पीछे नहीं हटेंगे, क्योंकि उनका पक्ष न्याय और धर्म का है। उन्होंने पांडवों की ओर से पितामह भीष्म, गुरु द्रोणाचार्य और स्वयं महाराज धृतराष्ट्र से भी व्यक्तिगत निवेदन किया कि वे पांडवों को उनका न्यायपूर्ण अधिकार अर्थात् इन्द्रप्रस्थ का राज्य दिलवाना सुनिश्चित करें।

जब धौम्य अपनी बात कह चुके, तो पितामह भीष्म, महात्मा विदुर, द्रोणाचार्य और कृपाचार्य सभी ने उनकी बात का समर्थन किया और यह मत व्यक्त किया कि पांडवों ने द्यूत की सभी शर्तों को पूर्ण कर दिया है और अब उनको उनका राज्य वापस दे देना चाहिए। यहां तक कि अंधे महाराज धृतराष्ट्र ने भी दुर्योधन को यह सलाह दी कि पुत्र तुम मान जाओ और पांडवों को उनका राज्य दे दो। लेकिन दुर्योधन ने स्पष्ट तौर पर मना कर दिया। उसका कहना था कि पांडवों ने अज्ञातवास पूर्ण नहीं किया है और उससे पहले ही उनको पहचान लिया गया है, इसलिए उनको फिर से १२ वर्ष के वनवास और १ वर्ष के अज्ञातवास पर चले जाना चाहिए।

इतना ही नहीं उसने भीष्म, विदुर, द्रोण और कृप सभी पर यह आरोप लगा दिया कि 'आप सब खाते कौरवों का हैं और गाते पांडवों का। आप सब प्रारम्भ से ही मेरे प्रति द्वेष और पांडवों से प्रेम रखते हैं, इसलिए उनके पक्ष का समर्थन कर रहे हैं।' यह अनुचित आरोप सुनकर वे सभी क्रोध से उबल रहे थे, परन्तु अपने रोष को पीकर वे चुप होकर बैठ गये। हालांकि भीष्म ने स्पष्ट शब्दों में कह दिया कि इस तरह की बातें करके तुम अपने सर्वनाश को आमंत्रित कर रहे हो। अब तुम्हें विनाश से कोई नहीं बचा सकता।

विदुर ने भी दुर्योधन को बहुत समझाया, परन्तु वह अपने मित्र कर्ण के बल पर बहुत विश्वास करता था। उसका मानना था कि अकेला कर्ण ही सभी पांडवों और उनके साथियों को मार डालेगा। इसलिए उसे युद्ध का भय बिल्कुल नहीं था। अपने अंधे पिता को उसने कठपुतली की तरह नचा रखा था, वृद्धावस्था में जिनकी स्थिति और भी अधिक दयनीय हो गयी थी। इसलिए दुर्योधन की अपमानजनक बातों पर रिरियाने के अलावा वे कुछ नहीं कर सके।

कौरव राजसभा में इस बात पर बहुत चर्चा हुई। काफी कहने योग्य और न कहने योग्य बातें भी कही गयीं। लेकिन उनका कोई परिणाम नहीं निकला। अन्ततः पांडवों के दूत और पुरोहित धौम्य से कह दिया गया कि वे पांडवों के सन्देश का उत्तर अपने दूत के द्वारा ही भेज देंगे।

यह उत्तर पाकर धौम्य उपप्लव्य नगर लौट आये और सारा हाल पांडवों की राजसभा में सुना दिया। सभी को वैसे भी किसी सकारात्मक परिणाम की आशा नहीं थी। अतः अब सब लोग कौरवों का दूत आने की प्रतीक्षा करने लगे।

कृष्ण को अच्छी तरह याद था कि उस दिन राजसभा में कौरवों के सन्देशवाहक के आने पर क्या-क्या बातें हुई थीं। पुरोहित धौम्य के हस्तिनापुर से लौटने के अगले ही दिन कौरवों का दूत उपप्लव्य नगर में आ पहुँचा था। कौरवों ने महाराज धृतराष्ट्र के सारथी संजय को अपना दूत बनाकर भेजा था। आवश्यक सत्कार करने के बाद दूत को पांडवों की राजसभा में बुलाया गया और उससे कहा गया कि तुम हस्तिनापुर से जो संदेश लाये हो, वह सुना दो।

कौरवों का सन्देश सुनाने से पहले दूत संजय संकोच और लज्जा से गढ़ा जा रहा था। उसने हाथ जोड़कर क्षमायाचना करते हुए कहा था- 'मैं जो सन्देश आपको सुनाने वाला हूँ, उसमें मेरा कोई शब्द नहीं है। यह सारा संदेश युवराज दुर्योधन ने सुनाने के लिए कहा है। इसलिए यदि आपको इस सन्देश से कोई मानसिक कष्ट होता है, तो उसके लिए मैं दोषी नहीं हूँ। कृपया मुझे क्षमा करें।'

युधिष्ठिर ने उसको आश्वस्त करते हुए कहा- 'दूत, तुम किंचित भी चिन्ता न करो। हमें पता है कि तुम केवल संदेशवाहक हो। इसलिए संदेश जैसा भी हो सुना दो। इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं होगा।'

यह स्पष्ट आदेश और आश्वासन पाकर संजय ने कौरवों का सन्देश सुनाना प्रारम्भ किया। सन्देश क्या था, केवल भर्त्सना थी। उसमें क्रमशः युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन को अनेक कहने-न कहने योग्य शब्दों से पुकारा गया था और उनको डराया-धमकाया गया था कि राज्य पाने की आशा छोड़कर अपने प्राण लेकर वापस वन में चले जायें। संजय ने एक यंत्रचालित कठपुतली की तरह सारा सन्देश सुना डाला और फिर क्षमायाचना करने लगा।

कौरवों के उस सन्देश को सुनते हुए भीम, अर्जुन आदि सभी योद्धा क्रोध से उबल रहे थे। संजय ने कौरवों अथवा दुर्योधन की ओर से महाराज युधिष्ठिर के प्रति जैसे अपशब्द कहे थे, यदि वैसे शब्द किसी अन्य व्यक्ति ने कहीं भी कहे होते, तो भीम ने तत्काल ही उसका वध कर दिया होता। लेकिन दूत अवध्य होता है और वैसे भी उसका कोई दोष नहीं था। वह तो कौरवों का सन्देश-वाहक था और अपने कर्तव्य का पालन कर रहा था।

वास्तव में कौरवों ने जो सन्देश भेजा था, वह सन्देश नहीं बल्कि धमकी थी। उसका उद्देश्य पांडवों का मनोबल तोड़ना था, ताकि वे डर जायें और युद्ध करने का साहस न करें। उसमें संधि का कोई प्रस्ताव होने का कोई प्रश्न ही नहीं था। वह तो युद्ध का खुला आमंत्रण था। यदि पांडवों और कौरवों में सन्धि की कोई संभावना कभी थी भी, तो वह इस तथाकथित सन्देश के बाद पूरी तरह समाप्त हो गयी थी।

इस असभ्यतापूर्ण सन्देश का कोई उत्तर देने का प्रश्न ही नहीं था। इसलिए दूत को यह कहकर विदा कर दिया गया कि हमने कौरवों का सन्देश सुन लिया है और अब उसका उत्तर युद्धभूमि में ही दिया जाएगा।

दूत के जाने के बाद राजसभा में देर तक इसकी चर्चा हुई। लगभग सभी इस बात पर सहमत थे कि अब शान्तिपूर्वक राज्य मिलने की सभी संभावनायें समाप्त हो चुकी हैं, इसलिए हमें युद्ध की तिथि निश्चित करके युद्ध क्षेत्र की ओर प्रस्थान कर देना चाहिए।

हस्तिनापुर से कुछ दूर उत्तर में कुरुक्षेत्र को युद्ध स्थल के रूप में चुना गया था, जहां बहुत विस्तृत स्थान खाली पड़ा हुआ था। जिन राजाओं को युद्ध में सहायता के लिए सन्देश भेजे गये थे, उनमें से अधिकांश के उत्तर आ गये थे और उन्होंने अपनी-अपनी सेनाओं को युद्धक्षेत्र की ओर भेज दिया था। निकटस्थ राजाओं की सेनायें आ भी चुकी थीं और शेष मार्ग में थीं।

इधर युद्ध होने की संभावना जानकर भगवान वेदव्यास उपप्लव्य नगर में आ गये थे। युधिष्ठिर सहित सभी पांडवों ने उनका यथोचित सत्कार किया और आशीर्वाद माँगा। वेदव्यास ने अपना कर्तव्य जानकर उनको युद्ध से विरत करने का प्रयास किया। उन्होंने युद्ध में होने वाले विनाश का भयावह चित्र खींचा और इससे बचने का उपदेश दिया। परन्तु महाराज युधिष्ठिर ने उनसे स्पष्ट कह दिया कि युद्ध के लिए हम किसी भी प्रकार से दोषी नहीं हैं, हम तो केवल अपना राज्य चाहते हैं, जो दुर्योधन ने छलपूर्वक हमसे छीन लिया है और जिसको लौटाने से वह मना कर रहा है।

भगवान वेदव्यास इस बात से सहमत थे कि पांडवों ने द्यूत की सभी शर्तें पूर्ण कर दी हैं, इसलिए अब उनके राज्य को न लौटाने का कोई कारण नहीं है।

पांडवों से मिलने के बाद वे हस्तिनापुर भी गये और वहाँ भी उन्होंने कौरवों की राज्य सभा में युद्ध से होने वाली संभावित विनाशलीला की विस्तृत चर्चा की और उनसे कहा कि इस विनाश से किसी भी तरह बचना चाहिए। भीष्म, द्रोण आदि ने उनका समर्थन भी किया और पांडवों को इन्द्रप्रस्थ का राज्य लौटाने के लिए दुर्योधन को सहमत करने का प्रयास किया, लेकिन दुर्योधन ने भगवान वेदव्यास के सामने ही स्पष्ट रूप से इसे नकार दिया। अन्ततः वेदव्यास पूरी तरह निराश होकर लौट गये। दोनों ओर से युद्ध की तैयारियां की जा रही थीं। यह स्पष्ट हो चुका था कि अब वह भयंकर क्षण आ पहुंचा है जिससे बचने के लिए भगवान वेदव्यास सहित सभी ने सभी प्रकार के प्रयास किये थे।

(अगले अंक में जारी)

भागवत जी का विजयादशमी सम्बोधन

जवाहर लाल सिंह

विजय दशमी के दिन संघ के स्थापना दिवस पर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने अपने भाषण में मोदी सरकार की खूब तारीफ तो की, लेकिन राष्ट्रवादी नीतियों पर. संघ प्रमुख ने जहां मोदी सरकार की राष्ट्रवादी नीतियों की जमकर सराहना की, वहीं आर्थिक नीतियों पर संदेह जताया. साथ ही सरकार को आर्थिक नीतियों पर फिर से विचार करने की सलाह भी दे डाली. भागवत जी ने सबसे पहले मुंबई हादसे का जिक्र किया और संवेदना व्यक्त की.

कश्मीर को लेकर भी भागवत ने मोदी सरकार की तारीफ की. उन्होंने कहा कि सरकार ने मजबूती के साथ अलगाववादियों और उग्रवादियों का बंदोबस्त किया है. पुलिस और सेना को काम करने की पूरी छूट देकर राष्ट्रविरोधी ताकतों को मिलने वाली ताकत का रास्ता बंद किया है. साथ ही सरकार को सीख भी दी कि कश्मीर में विकास के लिए चुस्ती दिखाए. विस्थापितों की दिक्कतों का उल्लेख करते हुए उन्होंने कश्मीरी पंडितों की समस्याओं को भी बयान किया. साथ ही कहा कि अलगाववादियों और उग्रवादियों पर कड़ाई जारी रखते हुए ऐसे कदम उठाने चाहिए जिससे जम्मू-कश्मीर के लोगों को आत्मीयता का अनुभव हो. इसके लिए अगर नए प्रावधान बनाने पड़ें या पुराने प्रावधान हटाने पड़ें, तो वह करना चाहिए. नए और पुराने प्रावधान की बात करना भागवत का धारा ३७० की तरफ इशारा है.

धारा-३७० हटाना बीजेपी और संघ का प्रमुख एजेंडा रहा है. लेकिन जम्मू-कश्मीर में पीडीपी के साथ सरकार बनाने के बाद से बीजेपी इस मसले पर ज्यादा कुछ नहीं बोल रही है. संघ परिवार के कई संगठन इसके लिए लगातार दबाव बना रहे हैं और भागवत का यह कहना संघ के लोगों की भावना को प्रकट करना है.

भागवत जी ने कहा कि बांग्लादेशी घुसपैठियों की समस्या अभी पूरी तरह निपटी भी नहीं कि म्यांमार से खदेड़े गए रोहिंग्या आ गए. अगर उन्हें आश्रय दिया तो वे हमारे रोजगार पर तो भार डालेंगे ही, साथ ही देश की सुरक्षा के लिए भी संकट बनेंगे. उनका इस देश से नाता क्या है? मानवता की बात ठीक है, पर उसके अधीन होकर अपने मानवत्व को समाप्त करें, यह ठीक नहीं. भागवत ने सीमा पर तैनात सैनिकों को ज्यादा सुविधा देने पर भी जोर दिया. रोहिंग्या पर संघ शुरू से ही मोदी सरकार के साथ है. एक सैनिक का खराब खाने की शिकायत का विडियो आने के बाद ये सवाल उठने लगे थे कि देशभक्ति की बात करने वाली सरकार सैनिकों को सही से खाना तक नहीं दे सकती.

जहां राष्ट्रवादी नीतियों पर भागवत ने मोदी सरकार को पूरा समर्थन दिया वहीं आर्थिक नीतियों पर सवाल भी खड़े कर दिए. मोदी सरकार की कई योजनाओं का जिक्र करते हुए भागवत ने कहा कि भ्रष्टाचार खत्म करने और आर्थिक प्रगति के लिए कई योजनाएं चलीं. कई साहसपूर्ण फैसले भी लिये. लेकिन यह देखना होगा कि अर्थनीति से सबका भला हो रहा है या नहीं. उन्होंने कहा कि हमें दुनिया की घिसी-पिटी अर्थनीति की बजाय अपनी नीति बनानी चाहिए. साथ ही कहा कि मध्यम, लघु, कुटीर उद्योग, खुदरा व्यापारी, स्वरोजगार, कृषि और इनफॉर्मल इकॉनमी की वजह से ही हम आर्थिक भूचालों में सुरक्षित रहे. इसलिए आर्थिक सुधार करते वक्त यह ध्यान रखना होगा कि यह सुरक्षित रहें. उन्होंने कृषि का जिक्र करते हुए कहा कि कोई भी नई तकनीक लाने से पहले उसके परिणाम सोचने चाहिए. जो तकनीक दूसरे देश अपने वहां तो बंद कर रहे हैं लेकिन भारत में बेच रहे हैं उनसे सावधान रहने की सलाह भी दी. उन्होंने कहा कि किसानों के बच्चें खेती नहीं करना चाहते क्योंकि गांवों में उन्हें सुविधा नहीं मिल रही है. सरकार से इस तरफ भी ध्यान देने की बात कही.

नोटबंदी और फिर जीएसटी के बाद सरकार की आर्थिक नीतियों पर सवाल उठने लगे हैं. कई छोटे और मझोले व्यापारियों ने विरोध जताया. संघ परिवार के संगठनों ने भी इन व्यापारियों के समर्थन में सरकार का विरोध किया. नाराजगी इस बात को लेकर है कि लोगों के रोजगार छिने हैं और व्यापारियों को भारी नुकसान हुआ है, साथ ही दिक्कतों का भी सामना करना पड़ रहा है. बीजेपी के अंदर से भी आर्थिक नीतियों को लेकर सवाल खड़े हुए हैं. संघ की हाल ही में हुई एक उच्च स्तरीय मीटिंग में भी नोटबंदी और जीएसटी को लेकर लोगों में सरकार के खिलाफ असंतोष की बात सामने आई. भागवत ने यह कहकर मोदी सरकार को नसीहत दी है कि वह आर्थिक नीतियों में इस बात का ख्याल रखे. स्वदेशी जागरण मंच बीटी को लेकर विरोध कर रहा है. सरकार से लगातार यह कह रहा है कि विदेशियों के दबाव में न आएं. भागवत ने उनकी चिंता से खुद को जोड़ा. संघ की तरफ से पहली बार इस तरह आर्थिक मोर्चे पर सरकार को नीतियां सुधारने की सीख दी गई है. साथ ही किसानों की तरफ ज्यादा ध्यान देने की सलाह भी संघ ने दी, क्योंकि सरकार किसानों और आर्थिक मसलों पर ही विपक्ष के निशाने पर है.

भागवत जी ने कहा कि कहीं गाय के नाम पर कुछ हिंसा हो जाती है तो उसका संबंध गोरक्षकों से जोड़ना गलत है. गाय की रक्षा करने वालों की भी हत्या हुई है. यूपी में सिर्फ बजरंगदल के लोग ही नहीं बल्कि मुस्लिम गोरक्षक भी शहीद हुए हैं. गोरक्षा को सांप्रदायिकता और हिंसा से नहीं जोड़ना चाहिए. उन्होंने कहा कि जब शासन में ऊंचे पदों पर बैठे लोग कुछ कहते हैं तो शब्दों का आधार लेकर उसे बिगाड़ा जाता है. इसकी चिंता गोरक्षकों को नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह उनके लिए नहीं है. गोरक्षक कानून का पालन करते हैं और उसकी निगरानी भी करते हैं. संघ प्रमुख ने कहा कि आजकल विजिलांटे शब्द को गाली जैसा बना दिया और गाय शब्द का उच्चारण करने वाले पर यह शब्द चिपका देते हैं. संविधान बनाने वाले मार्गदर्शन देने वाले वे भी विजिलांटे थे क्या. ऊंचे पदों पर बैठे लोग और सुप्रीम कोर्ट ने जो कहा उसकी चिंता वे लोग करेंगे जो लोग गुनहगार होंगे. गोरक्षकों को उसकी चिंता करने की जरूरत नहीं है.

पीएम मोदी कई मौकों पर गोरक्षकों की हिंसा के खिलाफ अपना गुस्सा जता चुके हैं और राज्य सरकारों से गोरक्षा के नाम पर होने वाली हिंसा से सख्ती से निपटने का निर्देश दे चुके हैं. सुप्रीम कोर्ट ने भी हाल ही में निर्देश दिए कि गोरक्षा के नाम पर हिंसा रोकने के लिए हर जिले में नोडल अफसर तैनात किए जाएं. ये सुनिश्चित करें कि कोई भी विजिलेंटिजम ग्रुप कानून को अपने हाथ में ना लें. इसके बाद संघ के संगठनों की ओर से नाराजगी जताई जा रही थी कि गोरक्षकों को बदनाम करने की कोशिश हो रही है. भागवत का यह संदेश है कि वह गोरक्षकों के साथ खड़े हैं.

भागवत जी ने कहा कि हम ७० साल से आजाद हैं, लेकिन पहली बार दुनिया को और हमको थोड़ा-थोड़ा अनुभव हो रहा है कि भारत है और उठ रहा है. भारत की अंतरराष्ट्रीय समुदाय में प्रतिष्ठा बढ़ी है. डोकलाम में धैर्यतापूर्वक और संयम के साथ अपना गौरव न खोते हुए जिस तरह डील किया उससे हमारी प्रतिष्ठा बढ़ी. अब दुनिया भारत को गंभीरता से ले रही है और भारत में दखल देने से पहले १० बार सोचती है. आर्थिक विकास की दिशा में भारत तेजी से बढ़ा है, गति मंद हो रही है लेकिन ठीक हो जाएगी. जानकार इसे मोदी सरकार की विदेश नीति को संघ के पूरे समर्थन के तौर पर देख रहे हैं. विपक्ष मोदी सरकार पर विदेश नीति को लेकर आरोप लगाता रहा है.

कुल मिलाकर वर्तमान सरकार की आर्थिक नीति जिससे लोगों के रोजगार पर असर पड़ा है, उसपर श्री मोहन भागवत ने उचित ही चिंता व्यक्त की है. इस पर मोदी सरकार अवश्य सोचेगी, शायद सोच भी रही है. बाकी लगभग सभी नीतियों पर वे सरकार के साथ हैं और उसके लिए शाबाशी भी दे रहे हैं. ■

(पृष्ठ २८ का शेष) **टॉयलेट व ताजमहल**

समान मुल्क का ख्याल किया होता। विदेशी पर्यटक भारत में आपके बनाये गये टॉयलेट देखने के लिए थोड़ी ही आते है! वे तो आते हैं ताज के सफेद दूधिया स्तननुमा संगमरमर से तराशे गये गुंबद को जी-भरके निहारने और अपने दिल के कैमरे में कैद करने के लिए। आपने जब से पर्यटन पुस्तिका में से ताजमहल को हटा दिया है, हमें तो भयंकर अतिसार के कारण टॉयलेट आ रही है। सरकार को अब तो समझ लेना चाहिए ये टॉयलेटनुमा फैसले देश की एकता और धरोहर के भविष्य के लिए खतरा बन रहे हैं। ■

ये तमाम उम्र गुजारी है तेरे खयालों में
बची है जितनी गुजर जाएगी सवालों में
गम ए तन्हाई के अंधेरों ने छुपाया है मुझे
ये राज है के हम मिलते नहीं उजालों में
एक मोहब्बत के अलावा कुछ जरूरी नहीं
दिल ए नादां रहा उलझा इन्हीं बवालों में
उन्हें खबर क्या जहरे-जुबां जान लेवा है
जिगर जो चाक करे दम कहां कटारों में
मैं दुआ बनकर तेरे नसीब में उतर जाऊँ
सोच लो मिलता है मुझ-सा कहीं हजारों में
रहें न हम गर तुमको मलाल होगा सुनो
यकीं है ढूँढ़ोगे हमको यूं कहीं सितारों में
फासले और करो लेकिन याद ये रखना
न झरोखा रहे बाकी दिल की दीवारों में
हम हैं खामोश 'जानिब' न कुछ कहा मैंने
दर्द रिसता हैं मगर आंखों की दरारों में

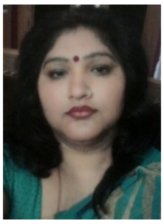

-- पावनी दीक्षित 'जानिब'

कितने सैलाब थे तूफान थे इन आँखों में
ये बता तू मेरी इन आँखों में ठहरा कैसे?
इसमें कुछ तेरी खता का भी बड़ा हाथ रहा
मेरी आँखों में न चढ़ता तो उतरता कैसे?
मेरे कंधों की तरफ देख मुझे दाद तो दे
फिर बताऊँगी तुझे जिन्दगी ढोया कैसे?
पूछती फिरती हूँ हर एक से सवाल यही
हाथ जब थाम लिया उसने तो बिछड़ा कैसे?
देखती रहती हूँ दिन-रात तुम्हीं को मैं सनम
बन्द आँखों से उतर जाता है पर्दा कैसे?
कई रुसवाइयाँ तेरे इश्क में देखी मगर
खुदा का घर भी तू करूँ न मैं सजदा कैसे?

-- नीरू श्रीवास्तव 'निराली'

कोई हंसती हुई सूरत नहीं देखी जाती
अब तो इस शहर की हालत नहीं देखी जाती
रश्क करते हैं सभी मेरी लिखी गजलों पर
उनसे जख्मों की इबारत नहीं देखी जाती
दिल में जलता है पर हंस के गले मिलता है
ऐसे कमजर्फ की फितरत नहीं देखी जाती
दिल के बदले में सर पेश किया जाता है
इश्क के सौदे में कीमत नहीं देखी जाती
टूट जाने की मगर फिर भी दिल लगाने की
दिले-खुशफहम की आदत नहीं देखी जाती
आह भरते हैं कभी दिल पे हाथ रखते हैं
शोख नजरों की शरारत नहीं देखी जाती

-- अंकित शर्मा

अभिसार में किसी के खनकती हैं चूड़ियाँ
परिणय की सेज पर तो महकती हैं चूड़ियाँ
जिनके कई हैं रंग, और रूप भी कई
प्रियतम नहीं हैं पास, बिलखती हैं चूड़ियाँ
आये बलम विदेश से तो खिल उठे अधर
तो तोड़ सारे बंध, मचलती हैं चूड़ियाँ
जब रात में नयन से नींद दूर रहे तब
यादों में संग नेह, बहकती हैं चूड़ियाँ
जब रैन हो मिलन की,गीत जब जगे नया
हंसती हैं, मुस्कराती, किलकती हैं चूड़ियाँ
प्यासी निगाहें खोजती, कोई हमसफर मिले
मिलता है मन का मीत, तो हंसती हैं चूड़ियाँ
अबला समझ के कोई जो डाले बुरी नजर
अस्मत पे अगर वार, बिफरती हैं चूड़ियाँ
नारीत्व का वरदान हैं, लज्जा भी हैं 'नीलम'
श्रंगार के लिए ही तो, संवरती हैं चूड़ियाँ

-- डॉ नीलम खरे

हसरतों को पूरा हो जाने दे
घड़ी भर को खुद में खो जाने दे
कर लूंगी मैं मेरा इश्क मुकम्मल
दिल का दर्द तो मुझे सुनाने दे
बैठ मेरे पास मेरे शरीके हयात
मौत को जरा खता बताने दे
मिली जो उम्र पल भर के लिए
उसमें आरजू मेरी पूरी हो जाने दे
ढूंढ़ेगा वक्त गुजर जाने के बाद
सरे राह दस्तूर तो निभाने दे
लोग कहते हैं कातिल है तू
कत्ल का इल्जाम मुझे लगाने दे
इश्क गुनाह है जमाने के लिये
गुनहगार हूं मुझे ये बताने दे
चला कहां मुझे छोड़कर हमसफर
खता कर और सजा दिलाने दे
घड़ी दो घड़ी के लिए ये उम्र भी
वक्त है मेहरबां जलवा दिखाने दे

-- प्रीती श्रीवास्तव

तुमने जब आना जाना छोड़ दिया
मैंने भी मुस्कुराना छोड़ दिया
पहले मिलता जुलता था लोगों से
अब तो मिलना मिलाना छोड़ दिया
पूछती हैं मयखाने की दीवारें
क्या हुआ क्यूं आना-जाना छोड़ दिया
चांद करता रहा मनुहार मुझसे
मैंने लिखना लिखना छोड़ दिया
इश्क से कर लिया तौबा मैंने
गजल अब गुनगुनाना छोड़ दिया

-- राजेश सिंह

जब कलम को थामती, मेरी गजल है
खूब कहना जानती, मेरी गजल है
पूर होता जब गले तक सब्र-सागर
तब किनारा लाँघती, मेरी गजल है
दीन-दुखियों, बेबसों का हाथ गहकर
हक में उनके बोलती मेरी गजल है
अंधविश्वासों की परतों को परे कर
रूढ़ियों को रौंदती, मेरी गजल है
नफरतों की बाढ़ से बिफरी नदी पर
नेह का पुल बाँधती, मेरी गजल है
हौसले हारे जनों के हिय जगाकर
दुख के कंटक काटती, मेरी गजल है
देशद्रोही, ठग लुटेरों की हरिक नस
'कल्पना' पहचानती मेरी गजल है

-- कल्पना रामानी

मैंने गीत गाये हैं कई, तारों को दिल के छेड़कर
मुझे स्वरों का तो पता नहीं, जो गीत मैं अपने भी गा सकूँ
तन्हा-तन्हा हो रही है मेरी जिंदगी, कोई साथ भी न मेरे चल सका
ऐ खुदा तू रहम कर जरा, कि मैं बोझ गम का उठा सकूँ
वो खुदी में अपनी खुदा बनकर, मेरी राहों से अलग तो हो गया
अपनी शामों को शाद करके मैं, उन लम्हों को तो जरा बढ़ा सकूँ
लिख-लिखकर रखती रही जो मैं, अफसाने अपने प्यार के
जज्बात जो दिल में हैं खौलते, कभी उनको भी तो मैं सुला सकूँ
किस घड़ी उनसे मुलाकात हुई कि बेखुदी-सी दिल पे छाने लगी
बन गये थे जो सपनों के महल, कम-से-कम उन्हें तो ढहा सकूँ
दुश्मनी तो बढ़ा लेते हैं हम, खुद अपनी ही नादानियों से
रब ऐसा रिज्क अब देना मुझे कि मैं, विश्व-मैत्री तो बढ़ा सकूँ
कोई होता नहीं गरीबों का, वो जो अँधेरे में भूखे ही रहते हैं
दे मुझको इतनी हिम्मत कि मैं, शमा उनके दर पे जला सकूँ
सारी कायनात हो जाये मेरी ही, और मेरी मर्जी चलती चले
पैदा हो गई ऐसी ललक मुझमें कि कुनबा दोस्ती का बढ़ा सकूँ
कितनी खाते हैं ठोकरें दर-दर की, जो कई बदनसीब यहाँ
भूले-भटकों को मैं ही ऐ खुदा, सही राह पर तो ले जा सकूँ
चलती ही जा रही हूँ यारब अपनी ही, बेखुदी में 'रश्मि' मैं
मुझे मंजिलों का पता नहीं, जो कदम मैं अपने बढ़ा सकूँ

-- रवि रश्मि 'अनुभूति'

क्यों पिलाते हो मुझे जाम कोई
और फिर देते हो इलजाम कोई
खौफे रुसवाई से डर जाता हूँ
जब भी लेता है तेरा नाम कोई
मेरा अंदाज अलग है तुमसे
चाहिये मुझको नई शाम कोई
जिन्दगी जब से बसी है अपनी
न कोई सुख है न आराम कोई
उसके बिन मैं हूँ अधूरा कब से
उनको पहुंचा दे ये पैगाम कोई
मसअला होगा तभी हल 'राज'
ढूँढ़ ले फिर से नया काम कोई

-- राज सिंह रघुवंशी

अनजाना डर

बिटिया को बैंकिंग की परीक्षा देने नवी मुंबई जाना था। सुबह उठकर तैयार होकर जाने लगी तब अचानक याद आया कि आज तो लोकल ट्रेनों का मेगा ब्लॉक है। 'आज तो मेगा ब्लॉक है कैसे जाओगी?'

'मेगा ब्लॉक ११ बजे के बाद है। अभी तो निकल जाऊंगी, लौटते समय हो सकता है थोड़ी परेशानी हो।'

इतने में पतिदेव जो कि ऑफिस जाने के लिए तैयार हो रहे थे बोले- 'एक काम करना नवी मुंबई से ऐसी बस भी चलती है तुम बस पकड़कर आ जाना लोकल ट्रेन में चक्कर में मत पड़ना

बस का नाम सुनते ही अनजाना डर मन में बैठ गया। आंखों के आगे दिल्ली की वह घटना घूम गयी और कांप गयी रूह तक, क्योंकि वह उस समय निकल रही थी तो मैंने कुछ बोलना सही नही समझा।

पतिदेव काम पर गए, बेटी परीक्षा देने। पर मन में उथल-पुथल चलती रही आखिरकार जब मन न माना तो उसे फोन किया- 'बस में देखकर चढ़ना अगर थोड़ी भीड़ हो तभी चढ़ना, वरना टैक्सी पकड़कर आ जाना।' वह हंसने लगी- 'आपको पता है टेक्सी के कितने पैसे लगेंगे? मैं अपने जेब खर्च से तो नही दूंगी। आप दोगी?' 'हाँ मुझसे ले लेना, पर तुम बस में मत चढ़ना टैक्सी पकड़ कर आ जाना।'

अपनी बिटिया से उस डर को कह न पायी शायद वो डर साझा करने में भी डर लग रहा था। उसके घर लौट आने तक यह सोचने लगी मैं अनजाने डर की आशंका से ही मैं इतनी व्यथित हो रही हूं, तो उस माँ और बच्ची पर क्या बीती होगी जिन्होंने इस दुख को सहा।

-- प्रिया वच्छानी

स्वार्थ के रिश्ते

पिछले कई दिनों से शहर की अलग-अलग जगहों पर स्वच्छता अभियान चल रहा था। आज सुबह भी मंत्री जी अपने टीम के साथ, वार्ड पार्षद के साथ भी कुछ लोग आने ही वाले थे, अखबार मीडिया की टीम, युवाओं की टोली और अनेक संगठन-संस्था के सदस्य, स्थानीय लोग अभियान स्थल पर पहुंचे और स्थल से कचरा ही गायब! खलबली-भदगड़ मच गई।

'हद है! कैसे कचरा उठ सकता है! नगर निगम वालों को कुछ तो सोचना चाहिये था। अब मंत्री जी आएंगे तो क्या होगा?'

'मंत्री जी के आगमन की बात सुन, घबराहट में ऐसा हो गया होगा।'

'अरे फोन करो... फोन करो...' ट्रिन ट्रिन!

'हेलो!' 'इतनी सुबह सवेरे?'

'आपने बिना मंत्री जी के आये कचरा कैसे उठवा लिया?' 'हमें भी तो जबाव देना पड़ता है!'

'भिजवाईये आयोजन-स्थल पर कचरा!'

'ऐसा कैसे हो सकता है? तिहरा मेहनताना देना होगा। कचरा उठाया, फिर गिरायेगा, फिर उठाएगा।'

'वो सब हमलोग बाद में मिल बैठकर सलटा लेंगे। आखिर हमलोग मित्र हैं।' 'आपकी खुशी में ही हमारी खुशी है।'

-- विभा रानी श्रीवास्तव

सब्जी मेकर

इस दीपावली वह पहली बार अकेली खाना बना रही थी। सब्जी बिगड़ जाने के डर से मध्यम आंच पर कड़ाही में रखे तेल की गर्माहट के साथ उसके हृदय की गति भी बढ़ रही थी। उसी समय मिक्सर-ग्राइंडर जैसी आवाज निकालते हुए मिनी स्कूटर पर सवार उसके छोटे भाई ने रसोई में आकर उसकी तंद्रा भंग की। वह उसे देखकर नाक-मुंह सिकोड़कर चिल्लाया, 'ममा! दीदी बना रही है, मैं नहीं खाऊंगा आज खाना!' सुनते ही वह खीज गयी और तीखे स्वर में बोली, 'चुप कर पोल्यूशन मेकर, शाम को पूरे घर में पटाखों का धुँआ करेगा।'

उसकी बात पूरी सुनने से पहले ही भाई स्कूटर दौड़ाता बाहर चला गया और बाहर बैठी माँ का स्वर अंदर आया, 'दीदी को परेशान मत कर, पापा आने वाले हैं, आते ही उन्हें खाना खिलाना है।' लेकिन तब तक वही हो गया था जिसका उसे डर था, ध्यान बंटने से सब्जी थोड़ी जल गयी थी। घबराहट के मारे उसके हाथ में पकड़ा हुई मिर्ची का डिब्बा भी सब्जी में गिर गया। वह और घबरा गयी, उसकी आँखों से आँसू बहते हुए एक के ऊपर एक अतिक्रमण करने लगे और वह सिर पर हाथ रखकर बैठ गयी।

उसी मुद्रा में कुछ देर बैठे रहने के बाद उसने देखा कि खिड़की के बाहर खड़ा उसका भाई उसे देखकर मुंह बना रहा था। वह उठी और खिड़की बंद करने लगी, लेकिन उसके भाई ने एक पैकेट उसके सामने कर दिया। उसने चौंक कर पूछा, 'क्या है?'

भाई धीरे से बोला, 'पनीर की सब्जी है, सामने के होटल से लाया हूँ।' उसने हैरानी से पूछा, 'क्यूँ लाया? रूपये कहाँ से आये?'

भाई ने उत्तर दिया, 'पटाखों के रुपयों से। थोड़ा पोल्यूशन कम करूंगा। और क्यूँ लाया!' अंतिम तीन शब्दों पर जोर देते हुए वह हँसने लगा।

-- डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

बिखेरती मुस्कान

'रोशनी??'

'मेमसाहब, मैं बस बर्तन साफ करके आती हूँ, कुछ काम जो बाकी है, जो जल्दी ही खत्म करके ही घर जाऊँगी।

'हाँ और कुछ कपड़े हैं वो लिए जाना। रिया को पसन्द थे सो उसने तुम्हारी बेटी रुचि को देने को बोला है।' ये बोलकर भारती अपने बेडरूम में चली गयी।

'मेमसाहब'

'हाँ बोलो' फोन में व्यस्त भारती ने ऐसे बेपरवाह होकर जबाव दिया। 'क्या है बोलो कोई बात आज कुछ उदास हो क्या बात है।'

'मैडम आप तो मेरे पति रमेश को जानती हो। बहुत दारू पीता है। लाख समझाने से भी नही मानता। आज रुचि को बुखार में छोड़कर आयी हूँ। कुछ पैसे मिल जाते तो उसकी दवा ले आती।'

भारती- 'कितनी लापरवाह हो तुम! पहले बताती ये सब अरे काम इतना भी जरूरी नही था।आज तो छुट्टी भी थी मेरे अ फिस में। मैं सब काम कर लेती। और अब घर जाओ बच्ची को संभालो जाके। और ये लो दो हजार रूपये ।और कम पड़े तो मुझे बताना।'

'मेमसाहब' ये कहके उसकी आंखें भीग गयी।

भारती- 'पागल मत बनो कोई एहसान नहीं कर रही हूँ। तुम भी तो कितनी मेहनत करती हो।'

'आपका ये एहसान कभी नही भूलूंगी मेमसाहब!' ये बोलकर रोशनी घर चली गयी अपने।

भारती मन ही मन मुस्कुराई कि उसने दीवाली में कितना अच्छा तोहफा दिया रोशनी को। ये सोचकर बाकी काम में जुट गयी वो।

-- उपासना पाण्डेय

तेजाब

होंठो पर झूठी मुस्कान लिए रीना ने सास-ससुर का स्वागत किया। रवि सब जानता था पर घर में कलेश से डरते कुछ न कहता, पर ये बात उसे तेजाब की तरह जलन देती थी कि जब रीना के मम्मी पापा रहने आते तो महीना रह भी जाएं, तो भी रीना उन्हें जाने नहीं देती थी और रवि के मम्मी पापा हफ्ते के लिए भी आएं, तो रीना दुखी हो जाती।

रीना का कहना था आपके मम्मी पापा का स्वभाव मुझे पसंद नहीं, वो रोक-टोक करते हैं। ऐसे मुझे समझाते हैं जैसे मैं कोई बच्ची हूँ! मुझे यह सब पसंद नहीं, आएं और चुपचाप चले जाएं बस!

रीना के मम्मी-पापा को अपने मम्मी-पापा की तरह इज्जत देने वाले रवि को भी अपने सास-ससुर की कई बातें पसंद नहीं थीं, पर रवि का मानना था कि मम्मी-पापा तो मम्मी-पापा होते हैं ना...!

-- कामनी गुप्ता

वामपंथ : अब रावण और महिषासुर का सहारा

कुमार गौरव अजीतेन्दु

रावण की पूजा कहीं-कहीं होने के समाचार नये नहीं हैं और न ही महिषासुर को माननेवालों का अंत हुआ है। नगण्य ही सही लेकिन इनसे जुड़ाव रखनेवाले लोग हमारे देश में हैं। जैसे मध्यप्रदेश, कर्नाटक, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान और उत्तरप्रदेश में कुछेक स्थानों पर रावण को पूजने की परंपरा है। इन स्थानों की गिनती की जाए तो हमारे देश के क्षेत्रफल में उनका योगदान न के बराबर मिलेगा। यहाँ ध्यान देनेवाली बात यह भी है कि राक्षसों की भारी-भरकम टोली में रावण की ही पूजा क्यों? कारण स्पष्ट है कि राक्षस कुल का होने के साथ-साथ रावण में ब्राह्मणों के गुण भी थे।

अपने ननिहाल की राक्षसी प्रवृत्ति के प्रभाव में आने के कारण रावण में तामसिक आदतों का विकास हो गया था। रावण को आदर तो श्रीराम ने स्वयं दिया था क्योंकि रावण एक विद्वान होने के साथ-साथ महान शिवभक्त भी था। यही कारण है कि कुछ लोगों के मन में रावण के प्रति सम्मान का भाव है, अन्यथा आपने कभी बकासुर, लवणासुर, शुंभ-निशुंभ, रक्तबीज आदि की पूजा होते देखा या सुना है? कदापि नहीं। रावण की पूजा इसलिए नहीं होती कि वह राक्षस था और राक्षस यहाँ के मूलनिवासी हैं (जैसा कि वामपंथी प्रचारित करने में लगे हुए हैं) और बाहर से आए हुए आर्यों के प्रति विरोध जताना है तो रावण को पूज लिया जाए।

अब रही बात महिषासुर के पूजन की तो ये तो बिल्कुल लेंस से ढूँढ़ के निकाला गया मुद्दा है। आदिवासी इलाकों में भी दुर्गापूजा मनाई जाती है। कोयलांचल के आदिवासी भी दुर्गापूजा करते हैं। वे दुर्गा की आराधना तांत्रिक विधि से करते हैं। समूह बनाकर नाचते-गाते हुए अन्न संग्रह करते हैं। यहां के सिमल गढ़ा, पलमा, मुर्गाबनी, तुलसीडाबर, संतालडीह के आदिवासी सदियों से दुर्गापूजा करते आ रहे हैं। समूह बनाकर मां की उपासना एवं मंत्र सिद्धि के लिए भगवती मां की आराधना करते हैं। झारखंड के पीरटांड़ प्रखण्ड के ऐतिहासिक गांव पालगंज में बीते आठ सौ वर्षों से राजकीय परंपरा अनुसार दुर्गा पूजा मनाई जाती है। इस दुर्गापूजा से इलाके के आदिवासियों का गहरा संबंध है। पालगंज स्टेट में दुर्गा पूजा मनाने के पीछे वंश प्राप्ति से लेकर अन्य मनोकामना पूरी होने की मान्यता है।

दुर्गा पूजा हिंदुओं के सबसे बडे धार्मिक त्योहारों में से एक है, लेकिन मेघालय की पनार जनजाति भी शक्ति की देवी की उपासना करने में पीछे नहीं है, वह भी इस त्योहार को भक्ति और उत्साहपूर्वक मनाती है। सैकडों की संख्या में पनार समुदाय के लोग जिन्हें जैंतिया भी कहा जाता है और पर्यटक नरतियांग के प्राचीन मंदिर में पांच दिनों तक चलने वाले इस दुर्गा पूजा के लिए एकत्र होते हैं।

हाँ एक असुर नामक जनजाति अवश्य है जो खुद को महिषासुर का वंशज मानती है। यह उनकी निजी मान्यता है। सीधी सी बात यह कि हर किसी का कोई न कोई समुदाय, जाति, वर्ण, योनि आदि तो होगा ही! मुख्य बात यह है कि हर जीव की छवि उसके कर्मों से निर्धारित होती है न कि उसकी जाति या योनि से। जो जैसे कर्म करेगा वैसा ही फल पाएगा।

आज हमारी सेना कभी नक्सलियों को मारती है तो कभी आतंकवादियों को। नक्सली और आतंकवादी भी किसी धर्म, जाति के होते हैं। आप स्वयं सोचिए कि अगर उन धर्म और जाति के लोगों ने नक्सलियों और आतंकवादियों को अपने धर्म, जाति का प्रतीक मानना शुरू कर दिया तो क्या होगा? और ऐसा होता भी है ही। विभिन्न निम्न स्तर की राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति के लिए समय-समय पर ऐसी बातें उठाई भी जाती हैं। कभी किसी नक्सली को जनता का हीरो बनाने का दुष्प्रयास होता है तो कभी किसी आतंकवादी की मौत पर लंबी-लंबी यात्राएँ निकलती हैं, भाषण दिये जाते हैं। आप-हम उन नेताओं को किस दृष्टि से देखते हैं? हमारा हृदय उन नेताओं को धिक्कारता ही है न?

अच्छाई और बुराई की परिभाषा सबकी अपनी-अपनी हो सकती है लेकिन समय उनको ही अच्छा कहता है जो निर्माण करते हैं। बुराई केवल ध्वंस में विश्वास रखती। आज विश्वविद्यालयों में आग लगवाने वाले सनकी सुल्तानों से लेकर महिलाओं को जौहर करने के लिए विवश करने वाले जालिम बादशाहों के भी वकील बहुत सारे मिल जाएँगे आपको, तो क्या हम उन हत्यारों को पूजना आरंभ कर दें? सत्य को छिपाया नहीं जा सकता। सत्य ही जनभावनाओं का आधार होता है। चार लोग उठें और कह दें कि हम इसको नहीं मानते, ये बंद कर दो। आप उस चीज को बंद कर दीजिए। कल फिर चार लोग उठेंगे और बोलेंगे कि हम उस चीज को नहीं मानते, हमारी भावनाएँ आहत हो रही हैं, उसको भी बंद कर दो। आप उस चीज को भी बंद कर दीजिएगा। यही बंद करने का सिस्टम चलता रहेगा और सारी व्यवस्था एक तमाशा बन जाएगी।

रही बात श्रद्धा की तो किसी के कहने या बरगलाने से श्रद्धा का जन्म नहीं होता बल्कि वह एक छलावा मात्र होता है। श्रद्धा अपने-आप जन्म नहीं लेती। उसके ठोस कारण होते हैं जिनका अनुभव हर श्रद्धावान को समय-समय पर होता रहता है जो उसकी श्रद्धा को और भी सबल करता जाता है। जनता का बहुमत जहाँ श्रद्धा रखता है सत्य भी वहीं होता है। लोकतंत्र का आधार भी तो बहुमत ही है! बहुमत को हम व्यक्तिगत मान्यताओं के आगे झुठला नहीं सकते। यह संभव ही नहीं है। इसकी अवहेलना होने पर प्रलय आ जाएगा। हाँ, व्यक्तिगत मान्यताओं का एक अपना स्थान है। उन्हें वहीं अपनी सीमाओं में रहना चाहिए। बहुमत कभी उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाता। यही व्यवस्था पूरे संसार को चला रही है। जहाँ-जहाँ इसको तोड़ने का प्रयास हुआ है, वहाँ-वहाँ परिणाम भयंकर हुए हैं।

अंत में जो बात कहना सबसे महत्वपूर्ण है। वह यह कि रावण और महिषासुर को लेकर बचे-खुचे वामपंथी जो आजकल बहुत सक्रिय दिख रहे हैं, वे केवल अपनी दोगली मानसिकता का ही एक और प्रमाण दे रहे हैं। वे तो धर्म को ही नहीं मानते और न ही ईश्वर के किसी रूप में विश्वास रखते हैं। ऐसे में सोचनेवाली बात यही है कि जब राम उनके अनुसार काल्पनिक हैं तो रावण सत्य कैसे हो गया? माँ दुर्गा के अस्तित्व को नकारनेवाले महिषासुर को वास्तविक कब से मानने लगे? कार्ल मार्क्स जो धर्म को अफीम बताते थे, उनके अनुयायी कब से किसी की धार्मिक मान्यताओं, जिनमें रावण और महिषासुर पूजित हो रहे हैं, के लिए लड़ने लगे?

दरअसल यहाँ भी वामपंथ को किसी की आस्था से कुछ लेना-देना नहीं है। वह केवल अपना अस्तित्व बचाने की अंतिम लड़ाई में हाथ-पैर मारने के क्रम में ये रावण और महिषासुर के मुद्दे पर भ्रम पैदा कर के उन गिने-चुने समुदायों को अपनी ओर खींचना चाहता है जो इस तरह की चीजों से किसी न किसी रूप में जुड़े हैं। ये कैसा दोहरापन है कि एक ओर राम को नकली कहानी का नायक मात्र बताकर राम मंदिर के निर्माण का विरोध हो और दूसरी ओर रावण को असली बताकर उसके कथित आराधकों की ओर से मैदान में उतरा जाए? है कोई उत्तर? कोई उत्तर नहीं, केवल कुतर्क ही सामने आएँगे। इस प्रकार की घटिया राजनीति करनेवाले लोगों का हम जितना बहिष्कार करेंगे, उतना ही हमारे लिए अच्छा रहेगा। ■

ग़ज़ल

हसीन रातों से भरा हुआ तुम्हें मंजर दिखाऊंगा
फुर्सत मिले तो आना मैं अपना घर दिखाऊंगा
बहारों में सूख जाया करते होंगे वो तेरे शहर में
पतझड़ में खिला मैं गाँव का शजर दिखाऊंगा
मेरी आँखों की नमी तुमको दिखावा लगती है
तन्हाई में आसुओं से भरा समुंदर दिखाऊंगा
वो आफताब कैसे लेकर आता है मेरे लिए शब
घुट घुट कर मरती साँसों की सहर दिखाऊंगा
लाश पड़ी है मेरी बरसों से तेरे दीदार के लिए
सूनी गली इंतजार में तड़पती नजर दिखाऊंगा
ऐतबार कर इंतजार कर तेरी मर्जी है 'आकाश'
मैं तो अजल हूं, मैं बस अपना असर दिखाऊंगा

-- आकाश राठोड़

ग़ज़लें

बहरा भी सुन रहा है, गूंगा भी गा रहा है
जब कान्हा सुनी बंसी मन बुला रहा है
वो जोश दोस्ती की पल पल घटा रहा है
अनजान हो ज्ञान प्रभु को भुला रहा है
उम्मीद सुबह लू की, सूरज उगा रहा है
कोई बड़ा वहाँ जो, दुनिया चला रहा है
इक उम्र हुई लुभाया है सादगी में इरादा
रातों की आज भी
वो नींदें सुला रहा है
किसने किसे लुटा
सच्चाई वही दिखाता
झूठा नजर झुकाये
सबकुछ चला रहा है

-- रेखा मोहन

कविताएं

एक जमाना था/चिट्ठियाँ खुशियों का सबब बनती थीं
दुखों के पहाड़ भी/टूट पड़ते थे पत्र पढ़कर
संदेसा देस से आये या परदेस से
चेहरे पर चिंता की किरण उभरे, या
प्रसन्नता की लहर दौड़ जाए
चिट्ठियों का इंतजार रहता था
घुड़सवार या डाकिया रखते थे/एक महत्वपूर्ण स्थान
चिट्ठी भेज कर पहुँचने की प्रतीक्षा,
पहुँचने पर उत्तर का इंतजार
चिट्ठी न हुई, कोई अभिन्न अंग हुआ परिवार का!
सरहद से बेटे, भाई या पति का पत्र
जीवन-मरण का प्रश्न हुआ करता था,
आज भी है,/किन्तु माध्यम बदल गए
एसएमएस, ईमेल ने हथिया लिया चिठ्ठी का स्थान
गुम हो गए वो एहसासात के पल
जो दर्ज हो चिट्ठी में, बन जाते थे जीवन भर का खजाना
कभी आँसुओं से भीग जाता था खत
कभी शर्म के दुपट्टे में लिपट महक जाता था
पाती पिया की हो या मित्र की
अपनों की हो या अपनों के लिए
जीवन की थाती थी
आज वो स्थान रिक्त है
आज चिट्ठी कहीं खो गयी
डाकिया औपचारिकता निभाता है
पार्सल, किताबें, कागजात तो दे जाता है
चिट्ठियाँ जाने कहाँ भूल आता है...

-- डॉ पूनम माटिया

झटकूँ जब अपनी ही जुल्फों को
भीगीं बूँदें जब इधर उधर उड़ती हुई/करती स्पर्श मुझे!
कुछ चेहरे को, कुछ ओठों को, कुछ बदन को
पर जैसे ही वो बूँद
दिल को छूती हैं
मेरा मन शांत हो जाता है!
जैसे तुमने बूँदों का रूप लेकर
मुझे दिल से लगा लिया हो
कभी ना दूर जाने के लिए!

-- कुमारी अर्चना

मैं तेरी पनाह में रहू मुझे बस इतना प्यार दे दे
ऐ यार मेरे मुझे इतना खूबसूरत संसार दे दे
नही है ख्वाहिश ऊंची उड़ान की अब कहीं
बस तुझसे मिल जाये वो खुशियां हजार दे दे
हम तो मशहूर हो गये शहर में तेरे आकर
बस अपने दिल में बसने को घर बार दे दे
तेरे कूंचे से निकलेंगे हर कर्म मेरे साक्ष्य बनकर
मुझे बस फकत इतनी
सी महकी बहार दे दे
हो वेदना अगर हृदय
को किसी अफसाने से
तो जी भरकर बस
तू मुझे प्यार दे दे

-- एकता सारडा

तेरे मन की भाषा जानूँ, खड़ी खड़ी मुस्काऊँ
जुल्फों की जंजीर न बाँधूं, आओ इसे लहराऊँ
कुन्दन कुन्दन देह सजी है, केसरिया है बाना
चन्दन जैसी महकी साँसें, पल पल को महकाऊँ
रंग हिना का चढ़ा गजब है, हरएक मुझको टोके
तेरी प्रीत हृदय बसी है, कैसे इसे जताऊँ
गालों पर बिखरे गुलाब हैं, अधरों पर अगवानी
हया हुई है आज हवा सी, खुद से ही शरमाऊं
नयनों में एक नशा चढ़ा है, पलकें बोझिल बोझिल
हवा करे है अगर शरारत, बहकी बहकी जाऊँ
कर्ण सुने पदचाप जरा सी, मन बेकल होता है
वक्त यों ही काटे ना
कटता, कैसे दिल बहलाऊँ
कदमताल होती है प्रतिपल,
ऐसी एक हलचल है
दरवाजे पर दस्तक पाकर,
खुशी से मैं लहराऊँ

-- बृज व्यास

जरा सी जिंदगी के वास्ते क्या-क्या गँवाया है
कभी रातों जगाया है कभी रातों सुलाया है
जरा बैठो तसल्ली से तुम्हें धड़कन सुनानी है
मगर सुनने से पहले क्यूँ समुंदर झिलमिलाया है
गुजारिश है मेरी तुमसे कि ये ताकीद मत करना
मुझे इसने बुलाया है मुझे उसे उसने बुलाया है
खुदा के वास्ते अपने जिगर पे हाथ रख लेना
जमाने भर के जुल्मों ने मुझे इतना सताया है
बहुत से दर्द झेले हैं जिगर पे चोट खाई है
कहीं जाकर तभी ये फन उतर कागज पे आया है
अकेला हूँ मगर तन्हा नहीं वो साथ है हरदम
मेरे भीतर ये लगता है कि कोई गुनगुनाया है
समुन्दर का भँवर उलझा हुआ तूफान की जद में
बढ़ाकर हाथ साहिल ने
मुझे यारो बचाया है
किसी का हाथ पकड़ो तो
झटक देना मरुस्थल में
जमाने ने जमाने को
फकत इतना सिखाया है

-- संजय 'सरस'

चांदनी रातों में अहसास भी करीब होते हैं
चाँद के नजारे भी जैसे रकीब होते हैं
पिघल रही है शमा देखो चाँद के नूर से
बेवक्त बेहिसाब गमों के दौर होते हैं
भूल जाओ अतीत को कहना आसान है
नए दौर के फसाने भी आज मजाक होते हैं
छलक जाते हैं अक्सर आंसू महफिल में
भीड़ में होकर भी हम अकेले होते हैं
फिक्रमंद कौन है आज के दौर में इश्क का
इश्क को खाली वक्त
का जाम कहते हैं
गुजार दी तमाम उम्र
अनजानी खुशियों में
वीरान सांझ को वो
बुढ़ापे का दौर कहते हैं

-- वर्षा वार्ष्णेय

विषैली हवा चली मेरे शहर में
दम तोड़ रही पीढ़ी मेरे शहर में
कारखानो की चिमनियाँ देखिये
जहर उगलने लगी मेरे शहर में
कटने लगे हैं सभी शजर शहर में
सिर्फ धुँआ ही बचा मेरे शहर में
बस्तियाँ बीमार है मेरे शहर में
गंदगी फिर पनपी मेरे शहर में
दवा और दुआ ही शेष रही अब
हर शख्स ठगा सा मेरे शहर में

-- राजेश पुरोहित

खता मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
सजा मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
वतन के वास्ते जीना, वतन के वास्ते मरना
वफा मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
नशा ये देश-भक्ति का, रखे चौड़ी सदा छाती
अना मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
रहे चोटी खुली मेरी, वतन में भूख है जब तक
शिखा मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
गरीबों के सदा हक में, उठा आवाज जीता हूँ
सदा मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
रखूँ जिंदा शहीदों को, निभा किरदार मैं उनका
अदा मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
मेरी मर्जी तो ये केवल, बढ़े ये देश आगे ही
रजा मेरी अगर जो हो, तो हो इस देश की खातिर
रहे रोशन सदा सब से, वतन का नाम हे भगवन
दुआ मेरी अगर जो हो,
तो हो इस देश की खातिर
चढ़ाते सीस माटी को,
'नमन' वे सब अमर होते
कजा मेरी अगर जो हो,
तो हो इस देश की खातिर

-- बासुदेव अग्रवाल 'नमन'

यदि पर्यावरण के लिए सही हो तो कोई समस्या नहीं

महेश तिवारी

दीपावली पर आतिशबाजी हमारी परंपरा रही है, लेकिन समाज और देशहित में अगर कोई पहल हो, तो उस पर सामाजिक और धार्मिक स्तर पर मतभेद उत्पन्न होना सही नहीं। किन्तु दीपावली के पहले जिस तरीके से पटाखों पर पाबंदी की बात की गई, उससे कई सवाल खड़े होते हैं। क्या किसी एक चीज पर पाबंदी लगा देने से उस समस्या का समूल विनाश हो सकता है? और उत्तर अगर हां में है, तो ऐसे में फिर पटाखे बेचने पर महज दिल्ली और एनसीआर में ही पाबंदी क्यों? क्या देश के अन्य शहर प्रदूषण मुक्त हैं? क्या देश के अन्य शहरों में आतिशबाजी से होने वाले प्रदूषण से लोगों को परेशानी नहीं होती? क्या पटाखों की बिक्री पर रोक से ही दिल्ली के आस-पास के क्षेत्रों में प्रदूषण पर काबू पाया जा सकता है?

पटाखा प्रदूषण का कारक तो सीमित समय के लिए है, लेकिन दिल्ली के आस-पास के वायुमंडल में धुएँ का कारण पराली जलाना भी है। क्या आज तक उसके निपटान का कोई तरीका ईजाद किया जा सका? पराली जलाने के कारण दो मुख्य समस्याओं से जूझना पड़ता है। एक, प्रदूषण का स्तर बढ़ता है, दो, जमीन का उपजाऊपन भी नष्ट होता है। वास्तव में यदि पटाखे पर पाबंदी ही हर समस्या की मर्ज है, तो क्या बाद में यह घोषणा की जाएगी कि यह पाबंदी कितनी सफल सिद्ध हुई? या फिर ओड-ईवन की भांति इसके भी सार्थक नतीजों से आम जन अनजान रहेंगे।

सुप्रीम कोर्ट के सामने इसके पहले वर्ष २०१५ में आतिशबाजी पर प्रतिबंध लगाने की सिफारिश की गई थी। तब अदालत ने इसे नकार दिया था। उसके बाद दीपावली के समय जब दिल्ली की हवा जहरीली हो गई, तो अदालत ने इसे गैस का चैंबर कहा था। उसके बाद २०१६ में अदालत ने पहली बार दिल्ली के आसपास के क्षेत्रों में पटाखों की बिक्री पर पाबंदी लगाई थी। इसके साथ ही अदालत ने केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड को तीन महीने के भीतर इस पाबंदी से दिल्ली के वायुमंडल में होने वाले परिवर्तन की रिपोर्ट सौंपने को कहा था। वह रिपोर्ट आज तक नहीं आ सकी। तो मात्र पटाखे को प्रदूषण के लिए दोष देना उचित नहीं। सुधरने को तैयार तो आज के दौर में हमारी राजनीतिक और लोकतांत्रिक व्यवस्था के लोग भी नहीं हैं, जो अधिकार के प्रति समर्पित और वातावरण के प्रति अपने दायित्वों को भूल जाते हैं। सबसे बड़ी समस्या यही है। सुप्रीम कोर्ट ने पटाखे पर प्रतिबंध की बात की, तो उसमें भी कहीं न कहीं साम्प्रदायिक भाव पैदा हो रहा है। यदि देश की यह स्थिति है, तो सुधार की उम्मीद धूमिल ही रहेगी।

रही बात परम्परा की तो अगर सुप्रीम कोर्ट भी मान रहा है, कि पटाखों पर पाबंदी अनिश्चित काल के लिए नहीं बल्कि इसे एक प्रायोगिक रूप से पटाखों से होने वाले अध्ययन के रूप में लिया जाए। फिर तो जनमानस का विरोध नहीं होना चाहिए। क्या पटाखों पर बैन ही हर मर्ज का इलाज है? अगर यही आखिरी रास्ता है, तो उस पर अमल होना चाहिए। लेकिन दिल्ली के आसपास के वातावरण में वायु प्रदूषण में बढ़ोतरी का कोई एक कारण नहीं। गाड़ियां और पराली जलाना भी समस्या को बढ़ाते हैं। त्यौहार में गाड़ियों की संख्या सड़कों पर बढ़ती है, वह भी समस्या को बड़ी बनाती है। फिर मात्र पटाखे पर लगाम से ही प्रभाव नही पड़ने वाला। दिल्ली में दीपावली के इतर शादी-ब्याह में पटाखों का जमकर इस्तेमाल किया जाता है। फिर इस रोक से सवाल भी काफी उठेगें, क्योंकि इससे एक ओर जहां लोगों की पटाखा जलाने की आजादी पर प्रहार हो रहा है, वहीं पटाखों की बिक्री पर रोक से करोड़ों की पटाखा इंडस्ट्री से जुड़े हजारों लोगों की आजीविका पर भी संकट पैदा हो जाएगा। आखिर नोटबन्दी और जीएसटी जैसे दंश तो देश के कारोबारी पहले से झेल रहे थे। ऐसे में अगर यह फैसला कुछ समय पहले लिया जाता, तो ज्यादा सार्थक हो सकता था।

पटाखों से निकलने वाले धुएं में हानिकारक गैसों के साथ भारी धातुओं जैसे लेड, क्रोमियम, जिंक आदि के छोटे-छोटे कण होते हैं। जो हवा में घुलकर उसे जहरीला बना देते हैं। पटाखों के जलाने से वातावरण में सल्फर डाई ऑक्साइड की मात्रा भी बढ़ जाती है। इससे श्वास नलिकाएं सिकुड़ने लगती हैं और सांस लेने में तकलीफ होती है। जो पुरुष और महिलाएं सांस संबंधी समस्याओं जैसे अस्थमा, साइनोसाइटिस, एलर्जी, सर्दी, न्यूमोनिया या एलर्जिक ब्रोंकाइटिस से पीड़ित हों उनके लिए यह स्थिति ज्यादा विकटता उत्पन्न करती है। सिर्फ धुआँ ही नहीं पटाखों से निकलने वाली तेज आवाज भी हमारे स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होती हैं। डॉक्टरों के मुताबिक ८० डेसिबल से अधिक की ध्वनि हमारे कानों को नुकसान पहुंचाती है। ऐसे में कई पटाखों की ध्वनि लगभग १४० डेसीबल तक होती है। जो मानव शरीर के लिए थकान, सिरदर्द, धुंधला दिखाई देना, भूख कम लगना जैसी समस्याओं की वाहक बन सकती है।

आज के समय प्रदूषण एक गंभीर समस्या है, लेकिन क्या सिर्फ दिवाली के पहले पटाखों पर बैन करने से पर्यावरण शुद्ध हो जाएगा? इसके अलावा सवाल उठने की गुंजाइश तो फैसले से ही होती है कि जब मात्र खरीदने पर प्रतिबंध है, फिर बाहर से लाकर या पहले से खरीदे पटाखों से दिल्ली को कौन बचाएगा, क्योंकि दिल्ली में पटाखों का कारोबार हफ्तों पहले से चालू हो जाता है, और दिल्ली से उत्तरप्रदेश ज्यादा दूर नहीं। जहां से पटाखे लाये न जा सकें। फिर क्या यह फैसला कहीं कम सकारात्मक असर वाला तो नहीं होगा?

और अगर फैसला आया भी, तो पूरे देश से ही नए इतिहास की कथा लिखी जाती तो ज्यादा बेहतर होता, क्योंकि प्रदूषण से अछूता कोई प्रदेश तो है नहीं। तो क्या अब इस बात का इंतजार होगा कि दिल्ली की स्थिति अन्य राज्यों में निर्मित हो, और लोग प्रदूषण से मरे, फिर हम चेतेंगे? आज प्रदूषण वैश्विक समस्या बन गई है, इसलिए इसके सभी कारणों को खोजकर एक स्वच्छ और स्वस्थ समाज बनाने के लिए हमें तत्पर रहना होगा। व्यर्थ बवंडर उत्पन्न करने से कोई लाभ नहीं। वैसे भी दीपावली दीपों का त्यौहार है, जो प्रकाश फैलाने का काम करता है, किसी के जीवन में अंधकार नहीं। ■

हम और हमारा प्रदूषण

ओम प्रकाश प्रजापति

दिल्ली और उसके आसपास के क्षेत्रों में पटाखों की बिक्री पर सुप्रीम कोर्ट की पाबंदी प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई सहायक बनेगी। प्रदूषण के खिलाफ लड़ाई तब सफल होगी जब हम और आप यह समझने के लिए तैयार होंगे कि उत्सवों के नाम पर स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले कार्यों को बंद करना होगा। दिल्ली-एनसीआर की जनता इससे अनभिज्ञ नहीं है कि बीते वर्ष दीपावली पर ऐसे हालात बने कि सांस लेना भी दूभर हो गया था। देश के सबसे बड़े उत्सव यानी दीपावली के अगले ही दिन ऐसी स्थिति बनी कि लोगों की सेहत पर बन आई। देश की राजधानी में दीपावली पटाखे दागने का पर्याय बन गया है और इसमें कहीं अधिक शोर और विषाक्त धुएं वाले पटाखों की संख्या बढ़ गई है।

हमें अब यह महसूस होना चाहिए कि कष्टकारी साबित होने वाले इस अधिक शोर और विषाक्त धुएं वाले चलन को रोकना होगा। इससे दीपावली की महत्ता ही बढ़ेगी। सामाजिक क्षेत्र के अग्रणी लोग आम जनता को इसके लिए प्रेरित-प्रोत्साहित करें कि सुख- समृद्धि के पर्व को पटाखे दागकर ध्वनि और वायु प्रदूषण बढ़ाने का उत्सव न बनाया जाये।

दिल्ली-एनसीआर में पटाखों की बिक्री पर प्रतिबंध के फैसले पर असहमति के भी स्वर भी उठे हैं। इसका अवसर तो खुद सुप्रीम कोर्ट ने ही दिया है। उसने पटाखों की बिक्री रोकने के पिछले वर्ष के अपने आदेश में करीब एक माह पहले संशोधन कर कुछ शर्तों के साथ पटाखे बेचने की आज्ञा दे दी थी। अच्छा हो कि भविष्य के लिए पटाखों के निर्माण और उनकी बिक्री के नियमन की जरूरत दीपावली से पहले ही समझी जाए। समाज को जागरूक करने का यह काम दिल्ली-एनसीआर के साथ-साथ देश के अन्य हिस्सों में भी होना चाहिए। ■

खूँटा और विकास

विनय कुमार तिवारी

मेरी समस्या बड़ी अजीब है! वह यह कि विकास कराने और इसकी देखभाल करने वालों के हत्थे चढ़ चुके विकास को क्या कहूँ? मेरे लिए विकास अदृश्य टाइप की चीज नहीं है। कुछ लोग विकास को दुधारू गाय की तरह मानते हैं, ऐसा मैंने लोगों को कहते सुना है और इसी बात पर मुझे एक बात याद आती है।

बात मेरे बचपन की है, तब विकास-उकास से मैं नासमझ था, अपने गाँव के प्राइमरी स्कूल में पढ़ने जाना शुरू ही किया था। उन दिनों मेरे घर में एक गाय हुआ करती थी और शायद गौसेवा के नाम पर वह खूँटे से बँधी रहती थी। कभी-कभार जब वह खूँटा तुड़ाकर स्वतंत्र विचरण करना चाहती, तो मेरे बाबा दौड़ाकर उसे पकड़ते और खूँटे से बाँधने के बाद अपने सोंटे से उसकी खूब धुनाई करते।

छटांक भर दूध देने वाली वह गाय, ऊपर से दूध दुहते समय लात भी चला देती थी। इस पर भी उसकी धुनाई होती और उस पर पड़ते प्रत्येक सोंटे के वार के साथ बाबा के मुँह से 'ही-है' का ठेक निकलता। खैर, उस गाय का दुधारू न होना भी उसमें एक खोट था। तब ज्यादातर देशी गायें इसी तरह की होती थीं, यह तो अब जाकर विदेशी नस्ल का प्रचार हुआ है और इन विदेशी नस्ल की गायों को पिटते हुए मैंने कभी नहीं देखा है।

वैसे तो, आजकल देशी गायों की नस्ल-सुधार का जमाना है और अब बाल्टी भर-भरकर दूध दुहा जाने लगा है। दूध देती इन गायों का स्वयं दूध पिया जाता है और मार्केट में भी बेचा जाता है और विकास का भरपूर एहसास किया जाता है! जो ऐसा नहीं कर पाते उनकी नजरों से विकास ओझल टाइप का होता है। हम अपने शुद्ध देशी टाइप के विकास को, शुद्ध देशी गाय की तरह अब या तो उसे गो-रक्षा दल के हवाले कर धर्मानुभूति करते हैं या फिर इसे बहेतू या अन्ना पशु की तरह लावारिस विचरण करने के लिए छोड़ देते हैं।

कुल मिलाकर अब अपने देश की आबोहवा बदल चुकी है विकास का मतलब व्यापार, जिससे नोट और वोट दोनों मिलते हों। इसीलिए विकास की खींच-तान बहुत मची हुई है। हर कोई विकास को डंडे के बल पर अपने ही खूँटे से बाँधना चाहता है, खूँटा तुड़ाया नहीं कि डंडा लेकर अपने-अपने तरीके से लोग इस पर पिल पड़ते हैं, या फिर डंडे के बल पर इसे दौड़ाने लगते हैं। अंत में मेरा-तेरा से शुरू होकर विकास की छीछालेदर हो चुकी होती है।

अब इसके बाद भी चैन नहीं पड़ता तो, विकास को पगलाया हुआ घोषित कर दिया जाता है। तात्पर्य यह कि, जो विकास को अपने खूँटे से बाँधने में सफल नहीं होता वही विकास के बारे में अनाप-शनाप बोल रहा है। यह बेचारा विकास इस चक्कर में अब राजनीतिक-पशु की तरह हो चला है। इसीलिए विकास को जब भी देखता हूँ, इस छीछालेदर के बीच इसे खूँटे से बँधे, हांफते हुए ही देखता हूँ।

जनता की तो कुछ पूछो मत, उसे फ्री में विकास नहीं मिलता। इसके लिए उसे वोट की कीमत चुकानी पड़ती है, और चुनाव दर चुनाव विकास के खूँटा-बदल में ही भ्रमित होती रहती है। उसके लिए तो खूँटा-बदल ही विकास है। एक बार विकास को लेकर मैं जनता को इसकी असलियत समझाने के चक्कर में पड़ गया कि विकास क्या चीज होती है, इसे समझो!

इस चक्कर में मैंने विकास को उसकी सही जगह दिखाने की कोशिश की, तो ऊँचे स्थान पर विराजे ऊँची कुर्सी वाले ने मेरे इस प्रयास को 'कुत्सित-प्रयास' कह डाला! मैं डर गया, मैंने समझ लिया, 'भइया जो चल रहा है उसी को विकास मान लो, इसमें अपनी टांग मत अड़ाओ!' और मैंने यही समझा कि विकास को लेकर ज्यादा 'ही-है...ही-है' नहीं करनी चाहिए नहीं तो, इसे हिंसक कृत्य मानते हुए ऐसा करने वाले को ही विकास से वंचित कर दिया जाता है। ■

आधुनिक भारत की चौथी ऋतु

दिपेन्द्र सिंह चौहान

आज नींद मुर्गे ने नहीं एक लाउडस्पीकर के शोर ने खोली, जो सप्ताह भर बाद की एक चुनावी रैली का आव्हान कर रहा था।

कॉलेज जाते वक्त देखा कि शहर की जिन जर्जर सड़कों के गड्ढों में हिचकोले खाना लोगों की आदत बन गयी थी, उन पर काली चमकीली डाबर का मरहम लगाया जा रहा था। किनारे बने सरकारी भवनों पर रंग-रोगन किया जा रहा था।

आगे गया तो चौराहे पर कभी ईद के चाँद से दिखने वाली ट्रैफिक पुलिस बड़ी मुस्तैदी से तैनात थी, और सालों से शहर की शोभा बने बड़े-बड़े कचरे के ढेरों को नगर परिषद के कर्मचारी बड़ी कर्तव्यपरायणता से बाहर फेंकने का काम कर रहे थे और गजब की बात तो ये कि डॉक्टरों के दर्शन का पिपासु सरकारी अस्पताल आज डॉक्टरों और स्टाफ के होने से जगमगा रहा था।

पहले तो हमें ऐसा मालूम हुआ कि हम हम कोई दिवास्वप्न देख रहे हैं, परंतु सामने के मैदान में बज रहे भोंपू की आवाज सुनकर ये भ्रम भी टूट गया। जाकर देखा तो वो कुछ दूध से श्वेत वस्त्रधारियों और कोट-पेंट वाले प्रशासनिक मुलाजिमों की एक आम जन सभा थी जिसमें हर आदमी के दुःख दर्दों और सालों अटके कामों को एक छोटा सा हस्ताक्षर करके जादुई तरीके से सुलझाया जा रहा था। इनमें कुछ वे भी थे जिनको पिछले हफ्ते ही मैंने अपना एक काम निपटाने के लिए मिठाई की रस्म अदा की थी। आज वे सब बिना कोई रस्म लिए कार्यरत थे। यह नजारा देख तो हमने तो दाँतो तले उंगली दबा ली कि अच्छे दिन आखिर आ ही गए।

सप्ताह भर बाद आलाकमान के बड़े नेताजी हमारे क्षेत्र में आये और उन्होंने घोषणा की कि पानी को तरसते लोगों को पानी के साथ-साथ आरओ उपलब्ध कराया जायेगा, जिन सड़कों पर कालू का टैम्पू भी सही से नहीं निकलता है, उनको फोरलेन के साथ चमकीला बनाया जायेगा, तथा पन्द्रह सौ छात्रों पर पांच शिक्षकों वाले स्कूल को डिजिटल बनाया जायेगा, बेरोजगारी को फांसी की सजा दी जायेगी, किसान को राजगद्दी पर बैठाया जायेगा, उद्योगों का बीज बोया जायेगा आदि।

आलाकमान के दे धुंआधार दौरे-पचौरे और उद्घाटनों और शुभारम्भों की मानो झड़ी सी लग गयी थी। अब आपको क्या बतायें हमारी कपड़े की दुकान से इतने लाल फीते बिके कि टर्न ओवर आठ गुना होने से सरकारी एजेंसी ने छापा मार डाला। इन घोषणाओं द्वारा तो नेताजी कुबेर का सारा खजाना ही जनता की जेब में जबर्दस्ती ठूसने का सा यत्न कर रहे थे।

ऐसे में मचती लूट में हमने अपनी बाटियाँ सेंक ली कि मतदाता सूची में नाम जुड़ने से पहले ही वृद्धावस्था पेंशन सूची में अपना नाम जुड़वाकर अपनी मुट्ठी गरम कर ली। इन दिनों तो हमारा गंगा मैया में डुबकी लगाकर स्वर्ग जाने का सपना भी इस रामराज्य के सामने बौना नजर आने लगा था। ठगदान सम्पन्न हुआ, क्या रहमत का बहुमत दिया था हमने भी नेताजी को, वो भी याद करेंगे, नेताजी और उनकी टोली का राज्य में राज्याभिषेक हुआ।

लेकिन बहुमत के बाद तो माहौल बिलकुल विपरीत था। सारे वादों और दावे खोखले के साथ अपरिग्रही भी महसूस हुये। नेताजी ने तो अपनी खटिया पर अपना मुँह तो छोड़िए पैर तक हमारी ओर करके सोना ही छोड दिया था।

इस रहस्य के समाधान में, हमारे एक प्रबुद्ध ने हमें मूर्ख और ज्ञानहीन की संज्ञा देकर बताया कि 'चुनाव आधुनिक भारत की चौथी ऋतु है, जिसमें झूठे वादों और लालच की बौछार होती है, जिसमें प्रबुद्ध और महाज्ञानियों एवं तुम जैसे कलम घसीटों को अँगूठाछापों द्वारा ठगा जाता है।'

उन्होंने बताया कि इसमें 'विकास' पर्व का समय चार माह होता है। हम उनसे इस ऋतु से बचने के कपड़ों की पूछने ही वाले ही थे कि उन्होंने हमें टरका दिया। ■

वामपंथ और मीडिया का अनूठा गठजोड़

राजीव चौधरी

राजनीति और पत्रकारिता की दुनिया में इस पर कोई एकराय नहीं है कि आतंकवाद क्या है या एक आतंकवादी गतिविधि में क्या-क्या शामिल होता है. आतंकी शब्दों का इस्तेमाल लोग अकसर अपने नजरिए और समझ के हिसाब से करते हैं. मसलन आतंकवादी कौन है, और उसका किस विचाधारा, मत और मजहब से सीधा सम्बन्ध है. हाल ही में अमेरिका के लास वेगास में संगीत समारोह में हुए हमले में ५८ लोगों की जान लेने और ५०० से ज्यादा लोगों को घायल करने वाले हत्यारे स्टीफन पैडक को लेकर मीडिया में एक बहस जोर पकड़ रही है, पैडक ने एक समारोह में संगीत सुनने आई भीड़ पर पड़ोस के होटल की ३२वीं मंजिल से गोलियां बरसाई थीं. उसके लिए हत्यारा, हमलावर, बंदूकधारी, लोन वुल्फ, जुआरी और पूर्व अकाउंटेंट जैसे शब्द इस्तेमाल हो रहे हैं, लेकिन किसी ने अभी तक उसे आतंकवादी नहीं बुलाया. पश्चिमी मीडिया ने इस घटना के लिए अमरीका के गन कल्चर को भी जिम्मेदार ठहराया है. जबकि यह हमला अमरीकी इतिहास में सबसे भयावह गोलीबारी कांड है.

हालाँकि गोलीबारी की यह अमरीका में कोई पहली घटना नहीं है. ऐसा अतीत में होता रहा है. पिछले वर्ष ऑरलैंडो के एक नाइट क्लब में हुई गोलीबारी में ४६ लोग मारे गए थे. इससे पहले दिसंबर, २०१५ में कैलिफोर्निया में हुई ऐसी ही एक घटना में १४ लोगों ने अपनी जान गंवाई थी. लेकिन इस बार सवाल उठ रहे हैं हत्यारे के मजहब को लेकर? सोशल मीडिया पर कुछ लोग लिख रहे हैं कि अगर पैडक अन्य धर्म से होता तो उनके लिए तुरंत 'आतंकवादी' शब्द लिख दिया जाता. लेकिन कोई गोरा और ईसाई ऐसा हमला करे, तो उसे अचानक मानसिक रूप से बीमार बता दिया जाता है और सब कुछ सामान्य रहता है.

इसे भाषा की निष्पक्ष पत्रकारिता के सिद्धांत का जरूर दोहरा असर कहा जा सकता है और इसमें समस्त विश्व की मीडिया को आइना दिखाया जा सकता है. क्योंकि २००७ में अजमेर दरगाह विस्फोट में भावेश पटेल और उसके साथी को आजीवन कारावास की सजा सुनाये जाने के बाद अगले दिन हिंदुस्तान टाइम्स की हेड लाइन में लिखा था 'अजमेर दरगाह विस्फोट केस में दो हिन्दू आतंकियों को आजीवन कारावास' मतलब कि मात्र एक घटना से भावेश पटेल के साथ हजारों लाखों वर्ष पुरानी सनातन परम्परा को आतंक शब्द से लपेटने वाले यही पत्रकार बन्धु थे, जिन्हें आज ५८ लोगों का हत्यारा पेड़क जुआरी नजर आ रहा है.

पश्चिमी मीडिया को अलग रखकर यदि बात अपने देश की मीडिया की करें, तो यहाँ हर रोज मीडिया कर्मी किसी भी इस्लामिक व्यक्ति के किसी हिंसक कृत्य पर बड़े विश्वास से कहते नजर आते हैं कि आतंक का कोई मजहब नहीं होता, लेकिन देश को जिहादी आतंकवादी कृत्यों से बचाव के लिए देश के सुरक्षा बलों ने जब मजहब विशेष के आरोपियों को बंदी बनाना आरंभ किया, तब मुसलमानों में असंतोष बढने लगा. तब इस असंतोष को दूर करने और उन्हें खुश करने के लिए देश में 'हिन्दू आतंकवाद' की परिभाषा गढ़ी गयी. इस षड्यंत्र के एक भाग के रूप में मालेगांव बम विस्फोट प्रकरण में कई लोगों को फंसाया गया. इसके बाद इस वर्ष एक घटना कश्मीर में जब संदीप शर्मा उर्फ आदिल की गिरफ्तारी होती है वह न केवल कट्टर इस्लामिक था बल्कि पांच वक्त का नमाजी भी था. तब भी पूरे देश की मीडिया ने उसके साथ 'हिन्दू आतंकवादी' शब्द का बेशर्मी से इस्तेमाल किया था.

पिछले कुछ वर्षो में देखे जब दिल्ली में कुछ ईसाई गिरिजाघरों में हुई छूटपुट चोरी की घटनाओं को अल्पसंख्यक ईसाई समाज पर हमला और उसके विरुद्ध दिल्ली, बैंगलोर से लेकर कोलकाता तक ईसाईयों द्वारा प्रदर्शन को मीडिया द्वारा बढ़ा चढ़ाकर प्रदर्शित किया गया था, जबकि उसी काल में दिल्ली के मंदिरों में करीब २०६ और गुरुद्वारों में ३० चोरी की घटनाएँ हुई थी लेकिन वह सब छिपा दी गयीं. कहने की आवश्यकता ही नहीं है कि मीडिया अपने बौद्धिक आतंकवाद द्वारा व्यर्थ की सहानुभूति बटोर लेता है. ये बुद्धिजीवी यह कार्य हर एक क्षेत्र में करते दिखाई देते हैं. जब देश के पूर्वोत्तर इलाकों में ईसाई संस्थाओं द्वारा किये जा रहे धर्मान्तरण को लेकर मीडिया छाती ठोककर उनका समर्थन करता रहा है, उसे सेवा एवं उसे जायज ठहराता है, जबकि यही मीडिया २०१५ में आगरा में हुई घर वापसी की घटना को लेकर हिंदूवादी संगठनों के विरुद्ध मोर्चा खोलकर उन्हें अत्याचारी, लोभ-प्रलोभन देकर हिन्दू बनाने का षड़यंत्र करने वाला सिद्ध करने में लगा था.

पत्रकारिता का स्वच्छ अर्थ होता कि पत्रकार जाति, धर्म, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर बिना किसी रंगभेद और क्षेत्रवाद के बिना समाज में अपनी आवाज उठाये, लेकिन फिलहाल पूरे विश्व में पत्रकारिता के ये सिद्धांत उलटे हो गये हैं. ये केवल इस मामले की बात नहीं है फ्रांस के शहर नीस में ट्रक से सैकड़ों लोगों को कुचलने वाला मुस्लिम ट्रक ड्राइवर मानसिक रोगी बता दिया जाता है और लंदन में हमला करने वाले खालिद मसूद को यह कहकर बचाया जाता कि वह कुछ समय से चरमपंथ के प्रभाव में आ गया था. ऑरलैंडो के नाइट क्लब में हमला करने वाले उमर मतीन का यही पश्चिमी मीडिया होमोसेक्शुअलों से नफरत करने वाला इंसान कहकर बचाव करती है. आखिर क्या कारण है कि अजमेर दरगाह में ब्लास्ट होने पर पूरे हिन्दू समुदाय को भगवा आतंकी कहा जाता है और इतने बड़े हत्याकांड होने पर सिर्फ मानसिक रोगी, जुआरी, भेड़िया? क्या यह वामपंथ और मीडिया का गठजोड़ है? ■

सीखना तो जीवनभर है!

अनिल विद्यालंकार

यावज्जीवम् अधीते विप्रः अर्थात् बुद्धिमान व्यक्ति जीवन भर अध्ययन करता है। यह कथन प्राचीन ऋषियों की प्रसिद्ध उक्ति है जो उनकी जीवन-दृष्टि का परिचायक है। मनुष्य और पशु में सबसे बड़ा अंतर उनके सीखने की क्षमता का है। कितना ही प्रयास क्यों न करें, पशुओं को हम एक सीमा से आगे नहीं सिखा सकते। पर मनुष्य के सीखने की क्षमता असीम है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य ही शिक्षार्थी को सीखने में सहायता देना है, पर आज हमारी शिक्षा बच्चों को सीखने के लिए उतना प्रोत्साहित नहीं करती, जितना रटने के लिए। फलस्वरूप हमारे विद्यार्थी एक के बाद एक डिग्रियाँ प्राप्त कर लेते हैं, उनकी जानकारी बढ़ती जाती है, पर विचारशील मनुष्य के रूप में जीवन जीने की उनकी क्षमता में बहुत ही कम विकास होता है।

अशिक्षित मनुष्य भी कुछ न कुछ सीखते ही हैं। शिक्षा की प्रक्रिया उन्हें नई-नई जानकारी देने में मदद करती है। पर हमारी शिक्षा सीखने के लिए बच्चों को प्रोत्साहित नहीं करती, न उन्हें सीखने के लिए अवसर ही प्रदान करती है। कुछ उदाहरण दिए जा सकते हैं-

कलाएँ- अधिकतर विद्यालयों में माध्यमिक स्तर पर चित्रकला एक विषय के रूप में निर्धारित होती है, पर अन्य कलाओं के लिए वहाँ बहुत ही कम स्थान है। भारत में संगीत की बहुत प्राचीन और व्यापक परम्परा है। हमारी शिक्षा-संस्थाओं में इसकी उपेक्षा हो रही है। टीवी ने संगीत को और बिगाड़ दिया है। बड़े-बड़े इनामों के लालच में छोटे-छोटे बच्चों को संगीत-प्रतियोगिता के नाम पर फूहड़ गाने गाने और उन पर नाचने के लिए प्रोत्साहित किया जाता और उनके माता-पिता समेत आम जनता पूरी पीढ़ी को संस्कारहीन होते हुए देखकर तालियाँ बजाती है। महानगरों को छोड़कर कहीं भी संगीत के स्वतंत्र रूप से सीखने की व्यवस्था नहीं है।

हमारे गाँवों में लोक-कलाओं की लंबी और समृद्ध परम्परा रही है। उनमें से किसी को भी विद्यालयों में स्थान नहीं है। पहले हर लड़की ढोलक बजाना सीख लेती थी। परन्तु आज घरों से ढोलक गायब होती जा रही है, इसी के साथ जीवन से लय भी।

भाषाएँ- भाषा मनुष्य के आन्तरिक और बाह्य जीवन को जोड़ती है, और जीवन को समझने के लिए माध्यम का काम करती है। मातृभाषा तो बच्चे अपने आप सीख लेते हैं यद्यपि उसके साहित्यिक पक्ष का ज्ञान उन्हें अधिकतर विद्यालय में ही होता है। मातृभाषा के बाद अंग्रेजी का स्थान है जो हमारी शिक्षा-व्यवस्था में

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

एक फैसला

राजकुमार कांदु

रहमान आज सुबह से ही परेशान था। नशे की सनक में उसने अपनी प्यारी सी बेगम सलमा को रात में न आव देखा न ताव तलाक दे दिया था। सुनकर सलमा सन्न रह गयी थी। दहाड़ें मारकर रोने लगी। घर के सभी लोग उसके कमरे में जमा हो गए थे।

पल भर में ही उसके तलाक की खबर मोहल्ले भर में फैल गयी। यह धर्मभीरु गरीब मुस्लिमों का मोहल्ला था। मोहल्ले के लोग एक स्वर से रहमान को उसके शराब की लत के लिए कोसने लगे। पल भर में ही रहमान का नशा काफूर हो गया। हकीकत पता चलने पर वह अपना सिर धुन कर रह गया। बड़ा पछताया लेकिन अब क्या हो सकता था? वह अपनी बीवी को बहुत पसंद करता था और उसे छोड़ना नहीं चाहता था। बड़े बुजुर्गों से सलाह मशविरा किया।

सबने एक स्वर में उसे मोहल्ले की मस्जिद के बांगी साहब से मशविरा लेने की सलाह दी। कुछ बुजुर्गों को साथ लिए रहमान बांगी साहब से मिला। पूरा वाकया सुनने के बाद उन्होंने चेहरे पर बनावटी क्रोध लाते हुए रहमान को फटकारा 'तौबा! तौबा! ये क्या कुफ्र कर दिया तुमने रहमान!' रहमान खुशामदी लहजे में बोला 'गलती हो गयी बांगी साहब! अब आप ही कोई रास्ता बताइए कि मेरी सलमा मेरे साथ ही रहे।'

अपनी लंबी दाढ़ी पर हाथ घुमाते हुए साठ बरस के बांगी साहब के आंखों की चमक बढ़ गयी। बोले 'रास्ता अब सिर्फ एक ही है। अब तुम्हारी बेगम का निकाह-ए-हलाला करना होगा।' धर्म के कायदे कानूनों से अनभिज्ञ मोहल्लेवाले पूछ बैठे- 'ये निकाह ए हलाला क्या होता है?'

'रहमान के तलाक दे देने के बाद इसकी बेगम अब इसके लिए हराम हो गयी है। अगर यह फिर से अपनी बेगम को अपने साथ रखना चाहता है तो इसे किसी पाक ईमानवाले शख्स से बेगम का निकाह करवाना होगा और वह शख्स इसकी बेगम के साथ एक रात शौहर की तरह गुजारे और फिर इसकी बेगम को तलाक दे दे तब कहीं जाकर यह फिर से अपनी बेगम से निकाह कर सकता है।' सुनकर और समझकर रहमान के पैरों तले जमीन खिसक गई थी। लेकिन अब वह कर भी क्या सकता था?

रहमान ने 'निकाह ए हलाला' के लिए बांगी साहब से ही निवेदन किया क्योंकि उसे डर था कि अगर किसी दूसरे परिचित से निकाह करवाता है और उसने तलाक नहीं दिया तो उसकी सलमा हमेशा के लिए उससे दूर चली जायेगी। उसके मुकाबले बांगी साहब बुजुर्ग और पाक ईमान वाले खुदा के बंदे थे।

उसकी बात का समर्थन साथ में आये बुजुर्गों ने भी किया। मौलाना दाढ़ी पर हाथ फेरते हुए बोले 'यूं तो निकाह-ए-हलाला के लिए मैं पचास हजार से कम रुपये नहीं लेता लेकिन तुम्हारी कम उम्र और गरीबी देखकर मैं सिर्फ बीस हजार रुपये में ही तुम्हारी बेगम से निकाह-ए-हलाला कर लूंगा। दस हजार निकाह पढ़ते वक्त और दस हजार सुबह तलाक होने के बाद दे देना।'

सुनकर रहमान तो सकते में रह गया। अब वह क्या करे? कहाँ से लाये बीस हजार? लेकिन और कोई चारा भी नहीं था। पैसे जुटाकर कल मिलने की बात कहकर वह मोहल्ले वालों के साथ घर वापस आ गया। सलमा ने पूरा वाकया सुना। उसने इस हलाला प्रथा का पुरजोर विरोध किया। रोते हुए अपनी सास से बोली 'अम्मी जान! मेरा क्या कसूर है? तलाक मैंने तो नहीं दिया था। फिर मेरा ही हलाला क्यों?'

उसकी सास ने उसे दिलासा देते हुए भी अपनी मजबूरी का हवाला देते हुए शरीयत के कानूनों को खुदा का फरमान बताते हुये उस पर अमल करने की सलाह दे डाली। खुदा के फरमानों की हुक्मउदूली दोजख की आग में जलने को मजबूर कर देगा। यही वो डर था जिसकी वजह से आखिर सलमा मन मसोसकर हलाला के लिए तैयार हो गयी। वह खुदा को नाराज भी नहीं करना चाहती थी। अशिक्षित लोगों के लिए मुल्ला और पंडितों की कही बात ही ऊपरवाले की मर्जी बन जाती है। सलमा और रहमान भी इसके अपवाद न थे।

दोपहर के खाने के बाद सलमा टीवी खोलकर बैठ गयी और समाचार देखने लगी। समाचारों में ब्रेकिंग न्यूज आ रहा था 'सुप्रीम कोर्ट ने ट्रिपल तलाक पर छह महीने के लिए रोक लगाई।' खुशी से चीखते हुए सलमा अपनी सास के पास भागी और खींचकर उसे टीवी के सामने खड़ा करके बोली, 'देखो अम्मीजान, सुप्रीम कोर्ट ने ट्रिपल तलाक पर रोक लगा दी है। अब यह गैरकानूनी है।' फिर अपनी सास के गले से लिपटकर चीख पड़ी- 'अब हमें हलाला नहीं कराना पड़ेगा, अम्मीजान! अब हमें हलाला नहीं कराना पड़ेगा।'

उसके सास की भी आंखें खुशी से भर आयी थीं। दोनों हाथ ऊपर उठाकर उसने खुदा का शुक्र अदा किया 'या खुदा! तेरा लाख लाख शुक्र है। ऐन वक्त पर तुने हमारी शान रख ली।' ■

संस्मरण

मित्रता की एक तस्वीर

कादम्बरी मेहरा, लंदन

हम अपने मित्र दम्पत्ति से मिलने लॉन्ग बीच कैलिफोर्निया गए। उनका घर एक गोल परिधि में बनी कोठियों में एक था। एक जैसी करीब बीस इमारतें। बहुत सुन्दर आवासीय संरचना। बीच में गोल घास का घेरा। उसके चारों तरफ गोलाई में चौड़ी सी सड़क। सड़क से निकलते सभी घरों के पक्के रास्ते। एक तरफा ट्रैफिक के सुदर्शन निशान। हर घर की अपनी दीवार और गेट। इन दीवारों के सामने एक-एक व्यक्तिगत घास का टुकड़ा जिसके पक्के किनारे थे। इन पर बिजली के खम्भे थे। करीब करीब सबने इन्हें फूलों से सजा रखा था। अनेक सुन्दर सदाबहार झाड़ियां लगाईं थीं।

यहां न नौकर होते हैं, न माली। सबको अपना शौक निभाना है, तो खुद मेहनत करनी पड़ती है। हफ्ते भर हमें रहना था। सुबह उठकर बाहर के ताजा मौसम का आनंद उठाते हुए मैंने पूछा कि बाग बगीचे का शौक आपने कब से पाल लिया। दीनू भाई बोले कि अंदर की झाड़ियाँ आदि भानु बेन ने लगाई हैं। बाहर का टुकड़ा किसी ने गोद ले लिया है।

हमें जिज्ञासा हुई तो उन्होंने बताया कि दस वर्ष पहले उनके मोहल्ले में एक शरणार्थी कम्बोडियन महिला उनके साथवाले घर में रहने आई थी। अकेली थी। एक पोस्ट ऑफिस में छोटी-मोटी नौकरी करती थी। वह केवल किरायेदार थी। उसे भाषा नहीं आती थी। मकान मालिक से भी वह लिखकर जरूरी संवाद किसी तरह कर लेती थी। शक्ल सूरत से विदेशिन होने के कारण कोई उससे बात नहीं करता था।

लोगों ने उसका नाम लूसी डाल दिया। मगर कोई उसे बुलाता नहीं था। एक बार उसने शायद अपने मकान मालिक से पूछा कि क्या वह बगीचा संवार दे, तो उसने उसे अनजान समझकर साफ मना कर दिया।

लूसी खुरपा लेकर सरकारी घासवाले टुकड़े की जुताई में लग गयी। चुपचाप अपना काम करती रही। दो दिन बाद उसने करीने से कई पौधे उसमें लगा लिए। गरम मौसम में महीने भर में उसका नन्हा सा बगीचा रंगदार हो गया। सबने उसकी सराहना की। भानु बेन को बहुत कम बागबानी आती थी मगर उसकी देखादेखी वह भी रुचि लेने लगीं। दोनों में मूक वार्ता चलने लगी। लूसी बीज और कलम लगाने का गुर जानती थी। उसकी बगीची की शोभा सबको भा गयी। अतः सभी ने अपने घर के सामने फूल आदि लगाने शुरू कर दिए।

कालान्तर में लूसी के मित्रों की संख्या इतनी बढ़ी कि स्थानीय अखबारों में उसका नाम और फोटो छपा। एक पत्रकार उसका साक्षात्कार करने आया। अपने संग वह एक अनुवादक को भी लाया, जिससे वार्तालाप में कोई दिक्कत न हो। लूसी ने बहुत झिझकते हुए अपनी कहानी सुनाई। कम्बोडिया में जब विपदा आई तब वह अनेक आपद्ग्रस्त लोगों के संग वहां से भाग निकली। उसके साथ उसका पति और बच्चे भी थे। मगर नाव यूरोप पहुँचने से कुछ पहले गच्चा खा गयी। इटली से सहायक जहाजों ने आकर उनको बचाया। फिर भी

(शेष पृष्ठ ३१ पर)

टीपू सुल्तान : इंसान या हैवान

बिपिन किशोर सिन्हा

पता नहीं कर्नाटक के कांग्रेसी मुख्यमंत्री सिद्धरमैया को शान्त कर्नाटक में अशान्ति उत्पन्न करने और अलगाववाद को हवा देने में कौन सा आनन्द आता है। कभी वे हिन्दी के विरोध में वक्तव्य देते हैं तो कभी कर्नाटक के लिए जम्मू कश्मीर की तर्ज पर अलग झंडे की मांग करते हैं। आजकल उन्हें टीपू सुल्तान को राष्ट्रीय नायक और स्वतन्त्रता सेनानी घोषित करने की धुन सवार है। वे राजकीय स्तर पर १० नवंबर को टीपू सुल्तान की जयन्ती मनाने की घोषणा कर चुके हैं।

इसमें कोई दो राय नहीं कि टीपू सुल्तान ने इस्ट इंडिया कंपनी के खिलाफ युद्ध लड़ा था जिसमें वह मारा गया था। वह युद्ध उसने अपने हितों की रक्षा के लिए लड़ा था, न कि भारत की स्वतन्त्रता के लिए। उस समय भारत एक राजनीतिक इकाई था ही नहीं। मात्र इतने से वह राष्ट्रीय नायक नहीं बन जाता। उसने अपने शासन काल में अपनी प्रजा, विशेष रूप से हिन्दुओं पर जो बर्बर अत्याचार किए थे, उन्हें नहीं भुलाया जा सकता। उसके कार्य बाबर, औरंगजेब, तैमूर लंग और मोहम्मद गजनवी से तनिक भी कम नहीं थे।

कर्नाटक का कूर्ग जिला दुर्गम पहाड़ियों से घिरा हुआ एक सुंदर और रमणीय पर्यटन स्थल है। इसी जिले के तल कावेरी से पवित्र कावेरी नदी का उद्गम होता है। इस जिले में हजारों मन्दिर थे। कई रमणीय जलप्रपात इसे दर्शनीय बना देते हैं। यहां के निवासी अत्यन्त धार्मिक और संपन्न थे। यहां के निवासियों को कोडवा कहा जाता है। कर्नाटक सरकार द्वारा टीपू सुल्तान की जयन्ती मनाने का यहां सर्वाधिक विरोध होता है क्योंकि टीपू सुल्तान ने वहां के निवासियों के साथ जो बर्बर अत्याचार किए थे, उसके घाव अभी भी नहीं सूखे हैं। टीपू का पिता हैदर अली था जिसने धोखे से मैसूर की सत्ता हड़प ली थी। उसने कूर्ग के हिन्दुओं का सामूहिक नरसंहार किया था। ब्रिटिश इतिहासकार लेविन बावरिंग लिखते हैं- हैदर ने कुर्ग के एक कोडवा के सिर के लिए पांच रुपए का ईनाम घोषित किया था, जिसके तुरन्त बाद उसके सामने सात सौ निर्दोष कोडवा हिन्दुओं के सिर प्रस्तुत किए गए।

हैदर अली बहुत दिनों तक कूर्ग को अपने नियंत्रण में नहीं रख सका। १७८० में कूर्ग फिर आजाद हो गया। लेकिन १७८८ में टीपू सुल्तान ने इसे श्मशान बना दिया। नवाब कुर्नूल रनमस्त खान को लिखे अपने एक पत्र में टीपू ने यह स्वीकार किया है कि कूर्ग के विद्रोहियों को पूरी तरह कुचल दिया गया है। हमने विद्रोह की खबर सुनते ही तेजी से वहां के लिए प्रस्थान किया और ४० हजार कोडवाओं को बंदी बना लिया। कुछ कोडवा हमारे डर से जंगलों में भाग गए जिनका पता लगाना चिड़ियों के वश में भी नहीं है। हमने वहां के मन्दिर तोड़ डाले और सभी ४० हजार बंदियों को वहां से दूर लाकर पवित्र इस्लाम में दीक्षित कर दिया। उन्हें अपनी अहमदी सेना में भर्ती भी कर लिया। अब वे अपनों के खिलाफ हमारे लिए लड़ेंगे।

टीपू सुल्तान ने कूर्ग के लगभग सभी गांवों और शहरों को जला दिया, मन्दिरों को तोड़ दिया और हाथ आए कोडवाओं को इस्लाम में धर्मान्तरित कर लिया। इतना ही नहीं, उसने बाहर से लाकर ७००० मुस्लिम परिवारों को कूर्ग में बसाया ताकि हमेशा के लिए जनसंख्या संतुलन मुसलमानों के पक्ष में रहे। वहां के हिन्दू आज भी टीपू सुल्तान से इतनी घृणा करते हैं कि गली के आवारा कुत्तों को 'टीपू' कहकर पुकारते हैं। १९७०-८० में सेकुलरवादियों ने टीपू को सेकुलर और सहिष्णु घोषित करने का काम किया। इस तरह इतिहास को तोड़ा-मरोड़ा गया। उसके पहले कोई मुसलमान भी अपने बच्चे का नाम 'टीपू' नहीं रखता था।

टीपू सुल्तान ने अपने १७ वर्ष के शासन-काल में हिन्दुओं पर असंख्य अत्याचार किए। हिन्दुओं को वह काफिर मानता था, जिनकी हत्या करना और इस्लाम में लाना, उसके लिए पवित्र धार्मिक कृत्य था जिसे वह जिहाद कहता था। कर्नाटक के कूर्ग जिले और केरल के मालाबार क्षेत्र में उसने हिन्दुओं के साथ जो बर्बरता की वह ऐतिहासिक तथ्य है, जिसके लिए किसी नए प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। उसने कालिकट शहर को जो मसालों के निर्यात के लिए विश्व-प्रसिद्ध था जलाकर राख कर दिया और उसे भूतहा बना दिया। लगभग ४० वर्षों तक कालिकट गरीबी और भूखमरी से जूझता रहा क्योंकि टीपू सुल्तान ने वहां की कृषि और मसाला उद्योग को बुरी तरह बर्बाद कर दिया था। टीपू सुल्तान ने अपने मातहत अब्दुल दुलाई को एक पत्र के माध्यम से स्वयं अवगत कराया था कि अल्लाह और पैगंबर मोहम्मद की कृपा से कालिकट के सभी हिन्दू इस्लाम में धर्मान्तरित किए जा चुके हैं। कोचिन राज्य की सीमा पर कुछ हिन्दू धर्मान्तरित नहीं हो पाए हैं, लेकिन मैं शीघ्र ही उन्हें इस्लाम धर्म कबूल कराऊंगा, ऐसा मेरा दृढ़ निश्चय है। अपने इस उद्देश्य को मैं जिहाद मानता हूं।

टीपू सुल्तान ने जहां-जहां हिन्दुओं को हराया वहां के प्रमुख शहरों के नामों का भी इस्लामीकरण कर दिया। जैसे ब्रह्मपुरी- सुल्तानपेट, कालिकट- फरुखाबाद, चित्रदुर्गा- फारुख-यब-हिस्सार, कूर्ग- जफराबाद, देवनहल्ली- युसुफाबाद, दिनिगुल- खलीलाबाद, गुट्टी- फैज हिस्सार, कृष्णगिरि- फल्किल आजम और मैसूर- नजराबाद। टीपू सुल्तान की मौत के बाद स्थानीय निवासियों ने शहरों के नए नाम खारिज कर दिए और पुराने नाम बहाल कर दिए। टीपू सुल्तान ने प्रशासन में भी लोकप्रिय स्थानीय भाषा कन्नड़ को हटाकर फारसी को सरकारी भाषा बना दिया। सरकारी नौकरी में भी उसने केवल मुसलमानों की भर्ती की, चाहे वे अयोग्य ही क्यों न हों।

दक्षिण भारत में हिन्दुओं पर टीपू सुल्तान ने अनगिनत अत्याचार किए। उसने लगभग पांच लाख हिन्दुओं का कत्लेआम कराया, हजारों औरतों को बलात्कार का शिकार बनाया और जनता में स्थाई रूप से भय पैदा करने के लिए हजारों निहत्थे हिन्दुओं को हाथी के पैरों तले रौंदवा कर मार डाला। उसने करीब ८००० हिन्दू मन्दिरों को तोड़ा। उसके शासन-काल में मंदिरों में धार्मिक क्रिया-कलाप अपराध था। हिन्दुओं पर उसने जाजिया की तरह भांति-भांति के टैक्स लगाए।

प्रसिद्ध इतिहासकार संदीप बालकृष्ण ने अपनी पुस्तक 'टीपू सुल्तान : मैसूर का तानाशाह' (Tipu Sultan : The Tyrant of Mysore) में स्पष्ट लिखा है कि इसमें कोई दो राय नहीं कि टीपू सुल्तान दक्षिण का औरंगजेब था। जिस तरह औरंगजेब ने १८वीं शताब्दी की शुरुआत में दिल्ली और उत्तर भारत में हिन्दुओं पर अमानुषिक अत्याचार किए, उनके हजारों मंदिर गिराए, उसी तरह १८वीं सदी के अन्त में टीपू सुल्तान ने दक्षिण में औरंगजेब के कार्यों की पुनरावृत्ति की। जो काम औरंगजेब ने अपने ५० साल के लंबे शासन-काल में किया, वही काम टीपू सुल्तान ने धार्मिक कट्टरता और हिन्दू-द्वेष से प्रेरित होकर अपने १७ साल की छोटी अवधि में कर दिखाया। यह बड़े अफसोस और दुःख की बात है कि कर्नाटक की कांग्रेसी सरकार ने तमाम विरोधों के बावजूद टीपू सुल्तान जैसे घोर सांप्रदायिक और निर्दयी शासक की जयन्ती मनाने का निर्णय किया है। इसकी जितनी भी निन्दा की जाय, कम होगी। ■

कविता

राम से ही संसार है

राम से ही ये सागर अम्बर, राम से ये संसार है
राम हमारी जीवन शैली, राम ही तो संस्कार है
राम हमारे उद्गम है वो, ब्रह्म ज्ञान है ज्योत है
राम हमारे इस जीवन के, कर्म ज्ञान का स्त्रोत है
राम हमारे परमेश्वर है, योगेश्वर, परमात्मा है
राम हमारा पंचतत्व है, राम हमारी आत्मा है
राम हमारे जीवन दाता, राम हमारी श्वांस है
राम हमारा निश्चय है औ,राम नाम विश्वास है
राम हमारे जीने का आधार हमारा जीवन है
राम नाम है अटल सत्य और राम ही तो संजीवन है
राम नाम प्रत्यक्ष धरा पे सत्य है और ज्वलंत है
राम धरा पे सर्व व्याप्त है राम नाम अनंत है
राम हवा है राम धरा है नभ है सूर्य है पानी है
राम को जो भी मिथ्या
कहता परम मूर्ख अज्ञानी है
राम नाम के बिना ये
मानो जीवन ही बेकार है
राम से ही ये सागर अम्बर,
राम से ये संसार है

-- मनोज डागा 'मोजू'

बाल नाटक

परमाणु बिजली घर

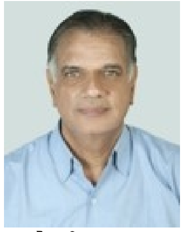

दिलीप भाटिया

कैलाश ने माँ की स्मृति में बालिका स्कूल में स्टेशनरी वितरित की। संचालक मेडम ने जब छात्राओं को कैलाश का परिचय 'परमाणु वैज्ञानिक' बताया, तब कई छात्राऐं अपनी शंकाओं का समाधान पूछने लगीं।

मीनाक्षी- सर, आजकल प्रतिदिन चार छः घंटे पावर कट रहता है, इसका क्या कारण है?

कैलाश- मीनाक्षी, हमारे देश में बिजली की मांग एवं उत्पादन में गहरी खाई है। उत्पादन कम होने से पावर कट करना होता है।

सरोज- सर, बिजली का उत्पादन कम होने के क्या कारण है?

कैलाश- कोयले के भंडार सीमित हैं, पर्याप्त वर्षा न होने से पनबिजली घर भी पूर्ण क्षमता से उत्पादन नहीं कर पाते, सौर ऊर्जा मंहगी है, गैस से चलने वाले बिजली घरों को भी पूरा ईंधन नहीं मिल पाता, परमाणु बिजली का योगदान भी ३ प्रतिशत ही है।

शिप्रा- सर, परमाणु बिजली घर हर प्रदेश में क्यों नहीं लगाए जा रहे?

कैलाश- राजस्थान, उत्तरप्रदेश, गुजरात, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक में २२ परमाणु रिएक्टर ६७८० मेगावाट बिजली उत्पादन की क्षमता रखते हैं। केन्द्र सरकार ने १० नए रिएक्टर लगाने की स्वीकृति दे दी है। गोरखपुर (हरियाणा) एवं चुटका (मध्य प्रदेश) में शीघ्र ही निर्माण कार्य प्रारम्भ हो जाएगा। इन राज्यों में भी यूरेनियम से बिजली बनने लगेगी।

रवीना- सर, रेडियेशन से हमें हानि भी होती होगी?

कैलाश- रेडियेशन से सुरक्षा हेतु डिजाइन प्रचालन में पूरी सावधानी रखी जाती है। हर कर्मचारी की रेडियेशन मात्रा का रिकार्ड रखा जाता है एवं सुरक्षा की दृष्टि से अनुमत सीमा का लक्ष्मण रेखा के समान पालन होता है।

प्राचार्या- सर, इन्हें रेडियेशन के बारे में कुछ विस्तार से बताइए, इन छात्राओं की विज्ञान में विशेष रुचि है।

कैलाश- रेडियेशन की यूनिट मिली रेम है। बिजली घर में काम करने वाले कर्मचारी को प्रति वर्ष ३००० मिलीरेम रेडियेशन दिया जा सकता है। दैनिक वेतन भोगी हेतु यह सीमा १५०० मिलीरेम वार्षिक है।

सीमा- सर, इतने रेडियेशन से स्वास्थ्य पर कोई प्रतिकूल प्रभाव तो नहीं पड़ता?

कैलाश- सीमा, बिल्कुल नहीं, देखो मैंने स्वयं ३८ वर्ष परमाणु बिजली घर में काम करते हुए हजारों मिलीरेम विकिरण लिया है, पर आज ७० वर्ष की आयु में भी मैं पूर्ण स्वस्थ हूँ। नियंत्रित अनुमत सीमा में रेडियेशन से कोई हानि नहीं होती।

मोनिका- सर, रेडियेशन क्षेत्र में काम करते समय आप क्या सावधानी रखते थे?

कैलाश- पूरी तैयारी से काम करने जाते थे, प्लास्टिक सूट बायलर सूट में जाते थे, स्वास्थ्य भौतिकी विभाग उस क्षेत्र में रेडियेशन सर्वे कर हमें जितने समय की अनुमति देता था, उतने ही समय वहां रहते थे। फ्रेश एयर लाइन सप्लाई से शुद्ध वायु से ही सांस लेते थे।

साधना- सर, फिर पर्यावरण सर्वेक्षण प्रयोगशाला की क्या भूमिका है?

कैलाश- प्रत्येक परमाणु बिजली घर स्थल पर यह प्रयोगशाला वायु, जल, भूमि, खाद्य एवं कर्मचारियों का निरीक्षण करती है एवं कर्मचारियों, आस-पास रहने वाली जनता एवं वातावरण की सुरक्षा सुनिश्चित करती है।

उपमा मेडम- सर, फिर इतने विरोध क्यों हो रहे हैं?

कैलाश- अधूरी एवं गलत जानकारी के कारण, कुछ असामाजिक संस्थाऐं कुप्रचार कर रही हैं। विषय के विशेषज्ञ एवं काम करने वाले कर्मचारी के अनुभव स्वतरू ही सही संतुलित जानकारी दे सकते हैं। भ्रम, संदेह, शंका को दूर कर सही व्यक्ति से जानकारी लेने से सभी प्रश्नों के उत्तर मिल सकते हैं।

स्तुति- सर, भविष्य में क्या परमाणु बिजली घर पावर कट समाप्त करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाऐंगे?

कैलाश- निश्चय ही, शनैः शनैः जब परमाणु बिजली घरों का योगदान वर्तमान ३ प्रतिशत से बढ़कर ५-१०-२० प्रतिशत तक पहुंचेगा, तो कई अंधेरे घरों को रोशनी मिलेगी। राजस्थान एवं गुजरात में ४ रिएक्टर का निर्माण कार्य प्रगति पर है एवं इनके पूरे होने पर २८०० मेगावाट अतिरिक्त बिजली मिलने लगेगी। (सभी बच्चे करतल ध्वनि करते हैं।)

प्राचार्या- स्कूल प्रबंधन कैलाश सर का कृतज्ञ है कि उन्होंने नन्हे भामाशाह की भूमिका में छात्राओं को स्टेशनरी भी दी, साथ ही परमाणु ऊर्जा से सम्बन्धित छात्राओं की जिज्ञासाओं का सरल शैली में समाधान किया। धन्यवाद, सर।

(कैलाश एवं सभी शिक्षिकाऐं जलपान हेतु प्राचार्या कक्ष में जाते हैं।) ■

बाल कविता

दीपावली

हम सबको बतलाए कैसे, यह कितनी हमको प्यारी हैं
आते हैं सभी पर्व एक दिन, यह सबसे लगती न्यारी है
घर-घर प्रकाश फैलाकर, अंधकार को दूर भगाती है
झूठ पे सच की विजय दिखा
सत्पथ पर आगे बढ़ाती हैं।
हर घर सुन्दर दीप सँजाने
प्रत्येक वर्ष यह आती है
झिल मिल- झिल मिल कर
हम सबको यह भाती है

-- **शशांक मिश्र भारती**

बाल कविताएं

धक्का-मुक्की रेलम-पेल, आयी रेल-आयी रेल
इंजन चलता सबसे आगे, पीछे-पीछे डिब्बे भागे
हार्न बजाता, धुआँ छोड़ता, पटरी पर यह तेज दौड़ता
जब स्टेशन आ जाता है, सिग्नल पर यह रुक जाता है
जब तक बत्ती लाल रहेगी, इसकी जीरो चाल रहेगी
हरा रंग जब हो जाता है,
तब आगे को बढ़ जाता है
बच्चों को यह बहुत सुहाती
नानी के घर तक ले जाती
छुक-छुक करती आती रेल
आओ मिल कर खेलें खेल

-- **डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'**

एक प्रतिज्ञा आज करें हम, मिलकर कदम बढ़ाएंगे
कड़वे सच से दूर रहें हम, झूठ कभी नहीं मुख से बोलें
एक प्रतिज्ञा आज करें हम, कुसंगति से दूर रहें
सुसंगति से नाता जोड़ें, औरों का हम भला करें
एक प्रतिज्ञा आज करें हम, कक्षा को हम साफ रखें
विद्यालय को साफ बनाकर, विद्यालय का मान रखें
एक प्रतिज्ञा आज करें हम, तन-मन-धन से जुट जाएं
मान करेंगे गुरुजनों का, सच्ची शिक्षा हम पाएं
एक प्रतिज्ञा आज करें हम, कहा बड़ों का हम मानें
उनके श्रेष्ठ अनुभवों से हम,
इस दुनिया को पहचानें
एक प्रतिज्ञा आज करें हम,
सुनागरिक बन दिखलाएंगे
राष्ट्र-एकता सुदृढ़ करके,
निज कर्तव्य निभाएंगे

-- **लीला तिवानी**

शिशु गीत

१. चालाक चूहा

घर में एक चूहा है आया, कुतर-कुतर सब उसने खाया
देख-देख सबकी परेशानी, पापा लाए चूहेदानी
माँ ने झट से ब्रेड मँगाया, टुकड़ा उसका एक फँसाया
चूहेदानी वहीं लगाकर, सोये हम कमरे में जाकर
खुश थे, भाग नहीं पाएगा, चूहा अब पकड़ा जाएगा
हाय! सुबह को जब मैं जागा, देखा, चूहा ब्रेड ले भागा

२. चिड़ियाँ आईं लीची खाने

मेरी बगिया आज सजाने, चिड़ियाँ आईं लीची खाने
प्यारी-प्यारी सी चीं-चीं कर, लगीं मारने चोंच फलों पर
थोड़ा सा ही मुँह में जाता, बाकी डालों पर मुस्काता
मैंने जरा दिमाग लगाया
दालमोठ घर से ले आया
झट से नीचे उसे बिखेरा
सब चिड़ियों ने मुझको घेरा
उनकी भूख मिटी तब पूरी
घटी हमारी उनसे दूरी

-- **कुमार गौरव अजीतेन्दु**

बाल कहानी

बहस न करो

कुमार गौरव अजीतेन्दु

लम्पू खरगोश ने स्कूल से लौटते ही बस्ता एक ओर पटका और अपने कमरे में जाकर मुँह लटका के बैठ गया। मम्मी दौड़ी-दौड़ी आयी।

'क्या हुआ बेटे? क्यों उदास हो?' लेकिन कोई जवाब नहीं। मम्मी ने चेहरा ऊपर करवाया तो देखा कि लम्पू रो भी रहा था।

'अरे बेटा, कुछ बताओगे नहीं तो मैं तुम्हारी परेशानी दूर करने का उपाय कैसे करूँगी?' मम्मी चिंतित होते हुए बोली।

लम्पू मम्मी की गोद में लेट गया, 'मम्मी मैं क्या बताऊँ? स्कूल में मेरे साथ पढ़ने वाले कोई गलत बात कहते हैं और जब मैं उनका विरोध करता हूँ, तो उल्टा बहस करने लग जाते हैं। मैं कितने भी सही बिन्दु दिखा दूँ, पर मानते ही नहीं। मैं तंग आ गया हूँ।'

'ओ हो बेटा, बस इतनी सी बात! चलो छोड़ो उसे, मैं तुम्हें ये कहने वाली थी कि टीवी एकदम बेकार चीज होती है, शोरगुल, ड्रामा बस, है न?'

'आँय! ये क्या बात हुई? टीवी पर बहुत कुछ अच्छे प्रोग्राम भी तो आते हैं!'

'नहीं बेटे, उस पर अच्छा कुछ भी नहीं आता केवल बोर करने वाली फिल्में, बकवास क्रिकेट मैच, फालतू कार्टून यही सब तो दिखाते हैं।'

'अरे मम्मी उस पर ज्ञान की भी तो कई बातें आती हैं!'

'क्या फायदा बेटा? वह सब तो हम किताबों से भी पढ़ के सीख सकते हैं! टीवी बेकार चीज है तो है।'

'मम्मी अब तुम भी मेरे उन्हीं सहपाठियों की तरह अपनी गलत बात को सही साबित करने के लिए जबरदस्ती करने लगीं!' लम्पू झल्ला उठा।

मम्मी मुस्कुरा उठी। 'हाँ अब समझे? जो लोग कोई गलत बात कह के उसको सही साबित करने के लिए अड़ जाएँ, तो वैसी परिस्थिति में हम कुछ नहीं कर सकते। इसलिए हमें वहाँ बहस करनी ही नहीं चाहिए। बहस करने से उनका तो कुछ नहीं बिगड़ेगा, लेकिन हमारा मन जरूर खराब हो जाएगा, जैसे कि आज तुम्हारा हुआ।'

'सही कहा मम्मी, आगे से मैं इस बात का ध्यान रखूँगा' खुश होता हुआ लम्पू मम्मी से लिपट गया। ■

पुस्तक समीक्षा

सराहनीय कविता संग्रह

मनोज चौहान पेशे से इंजीनियर होते हुए भी साहित्य के क्षेत्र में पूरी तरह सक्रिय हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में साहित्य रचना की है और आकाशवाणी से भी अपनी कविताओं का प्रसारण किया है।

उनका पहला कविता संग्रह 'पत्थर तोड़ती औरत' मेरे सामने है। इस संग्रह की कविताओं को पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि रचनाकार बेहद सरल शब्दों और भाषा में साधारण व्यक्ति की भावनाओं का प्रकटीकरण कर रहा है। प्रत्येक कविता गहराई लिये हुए है। एक उदाहरण देखिए-

रिश्तों के नाजुक धागों में
पड़ जाती हैं गिरहें
अक्सर/गलतफहमी की
या फिर अहम के
हावी हो जाने से।

एक और लीजिए-

मैं करता रहा हर बार वफा
दिल के कहने पर
मुद्दतों बाद ये महसूस हुआ
कि नादां था मैं भी/और मेरा दिल भी
परखता रहा हर बार जमाना
हम दोनों को
दिमाग की कसौटी पर

लगभग सभी कवितायें इसी तरह सरल और प्रचलित शब्दों में गहरा भाव लिये हुए हैं।

इस संग्रह में लगभग ४५ कवितायें हैं, जो सभी विभिन्न सामाजिक विषयों या रिश्तों पर हैं। प्रत्येक कविता पठनीय ही नहीं, मननीय और रोचक भी है। कहीं भी बोझिलता अनुभव नहीं होती। इससे यह स्पष्ट हो जाता है कि रचनाकार समाज से बहुत गहरे तक जुड़ा हुआ है, जिसकी भावनाओं को वह अपनी कविताओं में प्रकट करता है। कहीं भी कृत्रिमता नजर नहीं आती।

संग्रह में प्रूफ की गलतियाँ बिल्कुल नहीं हैं। छपाई और कागज अच्छा है। मुखपृष्ठ सरल होते हुए भी आकर्षक है। हार्डकवर और पृष्ठ संख्याओं के अनुसार मूल्य उचित ही रखा गया है। कुल मिलाकर यह संग्रह पठनीय, मननीय और संग्रहणीय है।

-- विजय कुमार सिंघल

कविता-संग्रह : पत्थर तोड़ती औरत
लेखक : मनोज चौहान
प्रकाशक : अंतिका प्रकाशन, गाजियाबाद
पृष्ठ संख्या : ११२, मूल्य : रु. २५०

(पृष्ठ ३ का शेष)

लक्ष्मी पूजन का अर्थ

लक्ष्मी के नाम से संबोधित किया गया है। ये हैं आदिलक्ष्मी, धान्यलक्ष्मी, धैर्यलक्ष्मी, गजलक्ष्मी, संतानलक्ष्मी, विजयलक्ष्मी, विद्यालक्ष्मी, एवं धनलक्ष्मी। इससे स्पष्ट होता है कि लक्ष्मी का प्रभाव क्षेत्र केवल धन तक ही सीमित नहीं है। लक्ष्मी की उत्पत्ति समुद्र मंथन के समय मानी गई है। विभिन्न देवताओं की भिन्न-भिन्न शक्तियों का मूल स्त्रोत भी माता लक्ष्मी ही हैं।

पुराणों के अनुसार माता लक्ष्मी ने अग्निदेव को अन्न का वरदान दिया, वरुण देव को विशाल साम्राज्य का, सरस्वती को पोषण का, इन्द्र को बल का, बृहस्पति को पांडित्य का इत्यादि-इत्यादि। इससे सिद्ध होता है कि माता लक्ष्मी की कृपा जिसपर भी हो जाए उसे नाना प्रकार के ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है।

माता लक्ष्मी के हाथ में कमल है। शास्त्रों में कमल को ज्ञान, आत्म साक्षात्कार एवं मुक्ति का प्रतीक माना गया है। हमारा दर्शन हमें जलकमलवत् रहने की शिक्षा देता है। इसका अर्थ है कि समस्त ऐश्वर्य के बीच रहते हुए भी मन को निर्लिप्त रखना। माता के दोनों ओर दो गज शक्ति के प्रतीक हैं।

माता लक्ष्मी का वाहन उल्लू है जो अँधेरे में भली-भाँति देखने में सक्षम है। इसका अर्थ है कि जब चहुँ ओर दुख का अँधकार छाया हो, तो माता की कृपा से हम हमारी दृष्टि सम्यक रहती है एवं हम अपना मार्ग सरलता से ढूँढ सकते हैं।

माता लक्ष्मी के हाथ से हमेशा धनवर्षा होती रहती है जो इस बात की सूचक है कि हमें केवल धन का संग्रह नहीं करना है, बल्कि वंचितों को उनकी आवश्यकता के अनुसार दान भी करना है।

माता लक्ष्मी ने भगवान् विष्णु को पति रूप में वरण किया है जो सर्वश्रेष्ठ हैं। माता सदा उनके चरणों में रहती हैं। यह इस बात का द्योतक है कि धन आदि ऐश्वर्य सदा उत्तम पुरुषों के पास ही टिकता है। अधम पुरुषों को इसकी प्राप्ति नहीं होती यदि संयोगवश प्राप्ति हो भी जाए तो वो टिकती नहीं है।

कलियुग में लक्ष्मी का वास नारी में कहा गया है। इसीलिए कन्या के जन्म पर कहा जाता है कि लक्ष्मी जी पधारी हैं, परंतु विद्वानों का यह भी कहना है कि यदि हम कन्या के अवतरण पर निराश हो जाते हैं, तो लक्ष्मी उल्टे पाँव लौट जाती है। जिस घर में नारी का आदर होता है, वहाँ माता लक्ष्मी की विशेष कृपा होती है एवं जहां नारी का अनादर होता है, वहाँ से लक्ष्मी का पलायन हो जाता है। माता लक्ष्मी की कृपादृष्टि हेतु समस्त नारी जाति का सम्मान करना अत्यावश्यक है।

चूंकि माता लक्ष्मी समस्त प्रकार के ऐश्वर्य की प्रदात्री हैं इसलिए माता लक्ष्मी को केवल धन की देवी मानने की भूल न करें। इस बार लक्ष्मी पूजन के अवसर पर आइए हम सब माता लक्ष्मी से प्रार्थना करें कि वे अपने अष्ट रूपों में हमारे गृह में विराजमान हों और हमें सन्मार्ग पर चलने का आशीर्वाद दें। ■

गोरक्षा व गोसंवर्धन का महत्व

मनमोहन कुमार आर्य

गो की महिमा वेदों सहित समस्त धार्मिक ग्रन्थों में गायी गई है। महर्षि दयानन्द ने भी गोकरुणानिधि पुस्तक लिखकर गो की ओर देश व विश्व के शासकों एवं मनीषियों का ध्यान आकर्षित किया है। गो पालन को जीवन में सद्कर्म के रूप में मान्यता प्राप्त है। पौराणिक बन्धु तो यहां तक मानते हैं कि मृत्यु होने पर प्रत्येक व्यक्ति को वैतरणी नदी पार करनी होती है जिसे गो की पूंछ पकड़ कर ही पार किया जा सकता है। अलंकारिक रूप से इस वर्णन को समझने से स्पष्ट है कि गो की पूंछ अर्थात् गोसेवा से ही मनुष्य जीवन का कल्याण होता है।

गोरक्षा व गोसेवा करते हुए हम मानवता की ही सेवा करते हैं। मानवता दूसरे प्राणियों की रक्षा को ही कहते हैं। जो मनुष्य दूसरे प्राणियों को पीड़ा देता है या उनको मार व मरवाकर उनके मांस का भोजन कर तृप्त होता है उसे मनुष्य कदापि नहीं कह सकते। वह मूर्ख मनुष्य यह नहीं सोचता कि उसे तो सुई चुभने पर भी दुःख होता है, उस पीड़ा से वह हमेशा बचता है तब वही व्यक्ति किसी दूसरे प्राणी की गरदन पर छुरा कैसे चला व चलवा सकता है? मांसाहारी मनुष्यों के कारण देश व विश्व में लाखों पशुओं को अकारण अपनी जान से हाथ धोना पड़ता है जिसका पाप उन मांसाहारियों व कसाईयों के सिर पर ही होता है। अतः सभ्य व कुलीन मनुष्यों को यह पाप नहीं करना चाहिए और दूसरों से इस पाप को रुकवाने सहित जो लोग पशु व गो रक्षा के कार्य करते हैं उन्हें पूर्ण समर्थन व सहयोग करना चाहिए।

अहिंसा धर्म है और हिंसा पाप है। हिंसा तभी जायज हो सकती है जब वह किसी प्राणी के प्राणों की रक्षा में की जाये व पागल व विषैले प्राणियों से रक्षा के लिए की जाये। मांस खाने के लिए की जाने व करायी जाने वाली हिंसा महापाप एवं अक्षम्य है। विचार करने पर यह भी ज्ञान होता है कि अहिंसक पालतू प्राणियों को यदि पाला जाये और उनकी हिंसा न की जाये तो इससे प्रकृति का सन्तुलन बना रहता है और इसके पोषक परिवारों व मनुष्यों को भी धार्मिक व आर्थिक लाभ प्राप्त होते हैं। इसकी गणना स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपनी विश्व विख्यात पुस्तक गोकरुणानिधि में की है। यजमान पशुओं गो, बकरी, भेड़, मुर्गी, मुर्गा, सूअर आदि की किन्हीं भी परिस्थितियों में हत्या व उनके मांस का सेवन उचित नहीं है न ही यह धर्म सम्मत है। यह पूर्णतः निन्दनीय व अनुचित है तथा ऐसा करने वाले मनुष्य इस सृष्टि को बनाने व चलाने वाले तथा मनुष्य सहित पशुओं आदि को उत्पन्न करने वाले परमात्मा के अपराधी व दण्डनीय होते हैं।

हम पालतू पशुओं के प्रतिनिधि रूप में गाय से होने वाले लाभों पर साधारण दृष्टि से विचार करते हैं। मनुष्यों की तरह परमात्मा ने ही गाय को भी उत्पन्न किया है। परमात्मा ने ही गाय के लिए मनुष्यों से भिन्न भोजन घांस व वनस्पतियों आदि को उत्पन्न भी किया है। गाय के भोजन के पदार्थों से हमारे किसी स्वार्थ को हानि नहीं पहुंचती। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि गाय से हमें ज्ञानवर्धक, बुद्धिवर्धक व शरीर का पोषक अमृततुल्य दुग्ध मिलता है। संसार में इसके समान अन्य कोई पोषक पदार्थ नहीं है। बिना दांत वाला बच्चा व बूढ़ा भी गोदुग्ध पीकर स्वस्थ व सुखी जीवन व्यतीत कर सकता है। गोदुग्ध से अनेक पदार्थ बनते हैं जिनका मनुष्य के पोषण, स्वाद एवं भोजन आदि में उल्लेखनीय महत्व व योगदान है। दुग्ध से दही, मक्खन, छाछ, घृत, पनीर, मट्ठा, मिल्ककेक, मावा आदि पोषक पदार्थ बनते हैं जो हमें अन्यथा व वैकल्पिक रूप से कहीं से प्राप्त नहीं होते। गाय की सेवा करने से मनुष्य को परिश्रम करना पड़ता है जिससे वह निरोग व स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होता है। गाय को भोजन रूप में हमें घांस व भूसा आदि देना होता या फिर पानी पिलाना होता है जो परमात्मा ने संसार में सर्वत्र बड़ी मात्रा में उपलब्ध कराया है।

गोमूत्र व गोबर का भी मनुष्य जीवन में अनेक प्रकार से उपयोग होता है। गोमूत्र अनेक रोगों की औषध है। यहां तक की कैंसर के रोग में भी यह उपयोगी सिद्ध होता है और अनेक रोगी इसके सेवन से स्वस्थ हुए हैं। गोमूत्र त्वचा रोगों की भी एक महत्वपूर्ण औषधि है। अन्य अनेक रोगों में भी इसका उपयोग बनता है। गोमूत्र का पंचगव्य में भी उपयोग होता है जो स्वयं में एक महौषधि है।

इसी प्रकार से गोबर भी कीटाणुनाशक होने के साथ अन्न उत्पादन में सर्वोत्तम औषधि के रूप में काम आता है। गोबर की खाद से उत्पन्न अन्न सर्वाधिक पौष्टिक एवं रोगाणुरहित होता है। गोबर से ही आजकर बायोगैस भी बनती है जिससे रसोईगैस के रूप में प्रयोग किया जा सकता है। बायोगैस के बाद गोबर का जो अवशिष्ट बचना है वह उत्तम खाद होता है। गोबर से उपले भी बनते हैं जो एक प्रकार का ईंधन होता है। इसकी सहायता से ग्रामों में चूल्हे का प्रयोग कर सभी प्रकार का भोजन बनाया जा सकता है।

गाय लगभग डेढ़ वर्ष में बछड़ी व बछड़े के रूप में हमें अपनी सन्तानें देती है जो बड़े होकर गाय या बैल बनते हैं। बड़ी होकर बछड़ी से गाय बनने पर उस गाय से होने वाले सभी लाभ प्राप्त होते है तो बैल हमारे खेत जोतते हैं जिससे हमें भोजन के प्रायः सभी पदार्थ मिलते हैं। बैलों द्वारा खेत जोतने सहित बैलगाड़ी व अन्य गाड़ियों में भी माल ढुलाई आदि में इनका उपयोग लिया जाता है। इनक मल व मूत्र भी किसान के खेत में खाद का काम करता है। बैलों व गाय से हमें चर्म मिलता है जो हमारे जूतों के निर्माण में काम आता है।

बैलों व गाय से प्राप्त होने वाले पदार्थों के गुणों पर भी वैज्ञानिक एवं चिकित्सकीय अनुसंधान किये जाने की आवश्यकता है। स्वामी दयानन्द ने अपनी गोकरुणानिधि पुस्तक में बैलों से खेतों की जुताई में होने वाले लाभों को गणित की दृष्टि से गणना करके अनुमान लगाया है कि एक बैल के जीवन से खेतों की जुताई व बुआई से जो अन्न उत्पन्न होता है वह लाखों लोगों का एक समय के भोजन के बराबर होता है जबकि एक बैल के मांस से सौ व कुछ अधिक लोग ही एक बार में तृप्त हो सकते हैं। हानि यह होती है कि मांस खाने वाले की बुद्धि प्रदुषित, विकृत व विषाक्त होती है जिससे उसी की हानि होती है। इसी प्रकार एक गो की एक पीढ़ी के दूध से भी लाखों मनुष्यों (४ लाख से अधिक) का एक समय का भोजन होना सिद्ध होता है जबकि मांस से कुछ लोग ही एक समय में तृप्त होते हैं। अतः गोहत्या व इसी प्रकार से भैंस, ऊंटनी, बकरी, भेड़, घोड़ा, गधा, खच्चर आदि से भी अनेक लाभ होते हैं। अतः इन्हें मारना व इनका मांस खाना निषिद्ध होना चाहिए।

गाय से मनुष्यों को इतने लाभ होते हैं तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम उनका लालन-पालन सावधानी व श्रद्धा से करें। उनकी नस्ल सुधार करने तथा दूध की मात्रा व गुणों में सुधार के भी उपाय करें। इसके लिए विज्ञान की सहायता लें। इन्हीं सब पर विचार करने व उसे क्रियान्वित करने के लिए ही प्राचीन समय में 'गोवर्धन पूजा' का पर्व नियत किया गया प्रतीत होता है। वेद गोरक्षा व गोपूजा की प्रेरणा करते हैं और गो को अवध्य घोषित करते हैं। वेद सृष्टि के आरम्भ में ईश्वर द्वारा दिया गया ज्ञान है। वेद में मनुष्यों के कर्तव्यों व अकर्तव्यों का ज्ञान कराया गया है। ईश्वर हमारे पूर्व जन्मों व परजन्मों को जानता है। इसी कारण उसकी आज्ञायें हमारे लिए धर्म हैं। उसका वह ज्ञान केवल वेदों में ही उपलब्ध है।

वेदों में बताये गये कर्तव्य व अकर्तव्य ईश्वर की मनुष्यों को आज्ञायें हैं। इनका हमें पालन करना है व देश देशान्तर में प्रचार करना है। ऋषि दयानन्द ने भी अपने जीवन में यह कार्य किया। उन्होंने अपने समय के बड़े-बड़े अंग्रेज अधिकारियों को भी गोरक्षा रोकने की प्रेरणा की थी, उन्हें सहमत भी किया था और करोड़ों हस्ताक्षर कराकर उसे इंग्लैण्ड की महारानी विक्टोरिया को भेजने का अभियान चलाया था। आक्समिक मृत्यु के कारण यह अभियान सफलता प्राप्त नहीं कर सका।

वर्तमान में देश में हमारी स्वदेशीय सरकार है। सभी देशवासियों को गोहत्या रोकने के लिए आगे आना चाहिए। यह पुण्य का कार्य है। इससे हमारा इहलोक व परलोक दोनों सुधरेगा। गाय बचेगी वा रहेगी तभी हमें गोघृत मिलेगा, हम यज्ञ कर सकेंगे और वैदिक धर्म व संस्कृति भी सुरक्षित तभी रह पायेगी। गाय के प्रति अपने कर्तव्य का विचार करें। किसी मिथ्या प्रचार से प्रभावित न हों। गाय हमारी माता है और उसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। गोहत्या राष्ट्र हत्या है। राष्ट्र हत्या न करें न होने दें। ■

आसमान भी रोता होगा

कल्पना रामानी

सुविधा नन्हें सुजान को गोद में लिए कमरे की खिड़की से एकटक आसमान को निहार रही थी कि अचानक एक तारा टूटकर शून्य में विलीन हो गया. घबराकर सुविधा ने बेटे को अपनी बाँहों में भींच लिया और उसे बेतहाशा चूमने लगी.

माँ के फोन करके बताने पर कि उसके पिताजी की तबियत अचानक बिगड़ गई है और वह अस्पताल में भर्ती हैं, सुविधा अपने कार्यालय से एक सप्ताह की छुट्टी लेकर इंदौर अपने पिता को देखने चली आई थी.

दो दिन में पिताजी की तबियत में तो सुधार था, लेकिन सुजान को कल से हल्का सा बुखार आ गया था. एक तो 'बेबी सिटिंग सेंटर' भेजने के बाद वह कुछ कमजोर भी हो गया था, ऊपर से बुखार. अतः माँ के कहने पर वह सुजान को शिशु-विशेषज्ञ के पास ले गई.

डॉक्टर ने बच्चे की नब्ज देखकर सुविधा से पूछा- 'बच्चे को कब से बुखार है?'

'कल से ही सर!'

'पहले भी इसे बुखार आता रहता है क्या और इसके अलावा कोई अन्य समस्या तो नहीं इसके साथ?'

'नहीं, बुखार तो कभी नहीं आता सर, लेकिन जब छुट्टी के दो दिन घर पर रहता है तो बहुत अनमना सा रहता है और दिन में ठीक से सोता भी नहीं है. मैं नौकरीपेशा हूँ और अपने पति के साथ मुंबई की एक सोसायटी में रहती हूँ. सुजान सुबह नौ बजे से शाम आठ बजे तक बेबी केयर सेंटर में रहता है' सुविधा ने अपने और सुजान के बारे में जानकारी देते हुए कहा.

'अच्छा, इसे बेबी सेंटर में रहते हुए कितना समय हो गया है?'

'लगभग एक साल हो चुका है सर, यह एक साल का था जब इसे हमने वहाँ भरती किया था. उससे पहले हम इंदौर में ही रहते थे और सुजान की देखभाल दादा-दादी ही करते थे.'

'क्या यह जन्म से ही कमजोर है?'

'नहीं सर, जब से इसे शिशु सेंटर भेजना शुरू किया है तब से धीरे-धीरे यह कमजोर होता गया है. लेकिन हमने इस पर गौर इसलिए नहीं किया कि बढ़ते हुए बच्चों के लिए यह स्वाभाविक क्रिया होगी.'

'लेकिन उम्र के हिसाब से इसका सही विकास नहीं हो रहा है, आपने कभी बेबी केयर सेंटर जाकर इसकी दिनचर्या पर दृष्टिपात किया है?'

'सर, सेंटर की संचालक मेरी कालेज के दिनों की विश्वसनीय सहेली तारा है, अतः मैंने शुरुआत में सेंटर की गतिविधियों के बारे में जानकारी लेने के बाद फिर कभी इसकी आवश्यकता नहीं समझी. सेंटर में एक से तीन साल तक के बच्चे ही हैं, उनकी प्रति सप्ताह उनके द्वारा तैनात शिशु रोग विशेषज्ञ से जाँच करवाई जाती है, लेकिन वहाँ के कुछ नियम हैं. बच्चों से हमें दिन में मिलने नहीं दिया जाता, क्योंकि दिन में उन्हें स्नान के बाद दूध-भोजन वगैरह देकर सुला दिया जाता है और हाँ जब भी मुझे कहीं जाना होता है, तो मैं दिन में ही सुजान को लेने चली जाती हूँ, पर यह मेरी गोद में सोता रहता है और शाम को ही जागता है.'

'बस, यहीं कुछ गड़बड़ लगती है जब बच्चा सेंटर में दोपहर से शाम तक गहरी नींद सोता रहता है तो छुट्टी में घर पर दिन में क्यों नहीं सो पाता? बच्चे की वहाँ के डॉक्टर की रिपोर्ट है आपके पास?'

'यहाँ साथ में तो नहीं लाई, पर उसमें सुजान को पूरी तरह स्वस्थ करार दिया हुआ है. लेकिन इन सवालों का बच्चे के बुखार से क्या सम्बन्ध है सर?'

'मुझे शंका है कि बच्चे को भोजन में कोई नशे की चीज मिलाकर सुला दिया जाता होगा, इसी कारण घर पर वह सो नहीं पाता होगा, इसकी शारीरिक कमजोरी का कारण भी यही हो सकता है. अभी तो मैं इसका बुखार उतरने के लिए दो दिन की दवाई दे देता हूँ, लेकिन बच्चे की पूरी जाँच यानी इसके रक्त-परीक्षण के बाद ही सही निर्णय पर पहुँचा जा सकता है.'

सुविधा तड़पकर बोली- 'सर, आप इसके रक्त का नमूना लेकर अच्छी तरह पूरी जाँच करके रिपोर्ट बना दीजिये. अगर आपकी शंका सही निकली, तो मैं सेंटर पर तो कानूनी कार्यवाही करूँगी ही और अब सुजान को कभी अपने से दूर नहीं करूँगी.'

सुविधा की अनुमति पाकर डॉक्टर ने सुजान के रक्त का नमूना लिया और अगले दिन रिपोर्ट ले जाने के लिए कहा.

सुविधा शंकाओं के भँवर में डूबती उतराती हुई घर पहुँची.

जैसे तैसे वह दिन गुजर गया, दवाई से सुजान का बुखार कम हो गया, तो उसके मन को कुछ शांति मिली और वह अगले दिन रिपोर्ट लेने डॉक्टर के पास चली गई. डॉक्टर का शक सही था. सुजान के रक्त में नशे की दवा की मात्रा पाई गई थी.

रिपोर्ट देखते ही सुविधा फफककर रो पड़ी. इसका मतलब सेंटर का डॉक्टर भी उनसे मिला हुआ है. उसे याद आ गया कि जब भी वह दिन में सेंटर से सुजान को लेने जाती थी तो तारा हमेशा अपने दो वर्षीय बच्चे के साथ खेलती हुई मिलती थी और बाकी बच्चे गहरी नींद में सोए हुए मिलते थे.

एक बार उसने पूछा भी था- 'तारा, तुम अपने बच्चे को दिन में क्यों नहीं सुलाती? तो तारा हँसकर कहती- 'सुविधा डियर, मुझे यही तो समय मिलता है न अपने बच्चे के साथ खेलने का, इसे मैं शाम को बाकी बच्चों के उठने के बाद सुलाती हूँ ताकि सबकी देखभाल ठीक से हो सके.'

'देखिये, आपको विवेक से काम लेना चाहिए, अच्छा हुआ आप सही समय पर यहाँ पहुँच गईं. मैं १५ दिन की दवाइयाँ दे देता हूँ आपका बच्चा बिलकुल स्वस्थ हो जाएगा. लेकिन १५ दिन बाद फिर निरीक्षण करवाने यहाँ आना पड़ेगा और आगे भी आपको बच्चे की पूरी सावधानी से देखभाल करनी होगी.' डॉक्टर ने उसे रोते देखकर कहा.

सुविधा दवाइयाँ लेकर भारी मन से घर पहुँची. माँ के पूछने पर सारी बात बताई, लेकिन सुधीर को यह सब फोन पर कैसे बताए? वह तो सारा दोष यह कहकर उसी के माथे मढ़ देगा कि कि मैंने पहले ही कहा था कि बच्चे को बेबी केयर सेंटर भेजने का रिस्क मत लो. सोचते-सोचते उसका सिर भारी होने लगा. उसे इस समय सुधीर के साथ की आवश्यकता होने लगी. माँ के बहुत कहने पर दो-चार कौर खाना खाया फिर सुजान को दवा देकर उसके साथ ही लेट गई.

विचार थमने का नाम नहीं ले रहे थे और समाधान सूझ नहीं रहा था. सच ही तो कहा था सुधीर ने, तीन साल पहले की ही तो बात है, कितनी सुखी गृहस्थी थी उसकी.

सुधीर और वह इंदौर के एक ही कार्यालय में जॉब करते थे. वहीं दोनों का एक दूसरे से परिचय हुआ और धीरे-धीरे परिचय प्यार में बदल गया. फिर उनके विवाह में एक ही जाति के होने के कारण कोई बाधा नहीं आई और वह सुधीर के साथ सात फेरे लेकर ससुराल आ गई. सास-ससुर बहुत परिष्कृत विचारों और सरल स्वभाव के थे. एक साल के अन्दर ही वह एक बेटे की माँ बन गई. सुजान सारी सुख-सुविधाओं के बीच दादा-दादी के साए में प्यार दुलार के साथ पलने लगा.

अभी वह एक साल का ही हुआ था कि अचानक सुधीर का तबादला कंपनी ने मुम्बई में कर दिया, तो सुविधा ने भी आवेदन करके अपना तबादला मुम्बई करवा लिया. तय हुआ कि आवास की व्यवस्था होते ही माँ-पिता को भी मुम्बई बुला लेंगे.

कुछ दिन कंपनी द्वारा बुक किये हुए होटल में गुजारने के बाद उन्होंने एक उच्चस्तरीय सोसायटी में फ्लैट किराए पर ले लिया और व्यवस्थित होते ही सुधीर माँ-पिता को लेने गया था, लेकिन उन्होंने उसे सदैव सुखी रहने का आशीर्वाद देकर अपना घर और शहर छोड़कर मुम्बई जाने से साफ इनकार कर दिया था.

सुधीर ने वापस आकर सारी बात बताते हुए कहा था- 'सुविधा, सुजान को नौकरी के साथ-साथ कैसे सँभाल पाओगी? उचित यही होगा कि तुम नौकरी छोड़ दो. वैसे भी मेरी आय हमारे परिवार के लिए काफी है. हम आराम से अच्छी जिन्दगी गुजार सकते हैं.'

'यह तुम क्या कह रहे हो सुधीर? मैंने दिन रात एक करके यह नौकरी हासिल की है. अब वह जमाना नहीं रहा कि पत्नी पति की गुलाम बनकर और हर तरह के जुल्म सहकर घर में पड़ी रहे.'

(शेष अगले अंक में)

(भाग ६ अंतिम)

दिव्यांगों के आदर्श - श्री बच्चू सिंह

विभाजन के समय आंतकवादियों पर कड़ाई और जरूरतमंदों का सहयोग करने से बच्चू सिंह की लोकप्रियता बढ़ती गई, इससे नेहरू और माउण्टबेटन को खतरा लगने लगा। नेहरू ने पटेल को पत्र लिखकर बच्चू सिंह के खिलाफ कार्यवाई की मांग की। गाँधी हत्या के बाद जब भरतपुर के राजा बृजेन्द्र अपने सहयोगियों के साथ रियासती क्षेत्रों को भारत के साथ मिलाने के लिए दिल्ली आए, तो नेहरू और माउण्टबेटन ने उनको गांधी वध का दोषी बताकर नजरबंद कर दिया और बच्चू सिंह को गिरफ्तार करने का निर्देश दिया।

पटेल ने बृजेन्द्र और उनके समर्थकों से समझौता करके उनके हितों को बचा लिया तथा बच्चू सिंह के इंग्लैंड चले जाने कि अफवाह उड़ाकर उनकी गिरफ्तारी नहीं होने दी। तब नेहरू के दबाव में विभाजन के विरुद्ध बच्चूसिंह का समर्थन करने पर आरएसएस पर प्रतिबन्ध लगाया गया और गाँधी हत्या में वयोवृद्ध स्वतन्त्रता संग्रामी वीर सावरकर को फंसाया गया।

पाकिस्तान के प्रश्न पर अब चूंकि भारत का एकीकरण होने लगा था, अतः भारत एकीकरण में माउंटबटन ने अपने समर्थक मेनन को पटेल का सचिव बना दिया, लेकिन गुप्त रूप से बच्चू सिंह को पटेल ने अपना सहयोगी बनाया और एकीकरण में साथ लिया। तब दक्षिण भारत में ब्रिटिश समर्थित पेरियार ने भारत की स्वतन्त्रता को काला दिवस के रूप में मनाया था और एकीकरण के विरुद्ध आंदोलन आरम्भ कर दिया था। इससे बच्चू सिंह और उनके समर्थकों की पेरियार और उसके समर्थकों से लड़ाई होने लगी।

संविधान निर्माण के समय विकलांगों और जरूरतमंदों के लिए संरक्षण हेतु अनुसूची में सुविधाएं रखी गईं, किन्तु उनके सभी प्रतिनिधियों को नेहरू ने

बंदी बनाकर अपने समर्थकों को उनके क्षेत्र का प्रतिनिधित्व दिलवाया, जैसे भरतपुर और अलवर के महाराजा को कैद करके उनकी जगह अपने आदमी राजबहादुर को नियुक्त किया। अतः संविधान सभा में विकलांगों और जरूरतमंदों का प्रतिनिधि नहीं बन सका, परन्तु संविधान सभा का चुनाव हार चुके ब्रिटिश समर्थक और लॉर्ड वेवेल के श्रममंत्री भीमराव अंबेडकर को मुस्लिम लीग की मदद से संविधान सभा पहुंचाया गया, जबकि जिस क्षेत्र का प्रतिनिधि अंबेडकर को माना गया था, वह क्षेत्र पाकिस्तान में था और वहाँ से पाकिस्तान की सभा में जोगिंदर नाथ मण्डल को चुना गया था।

विकलांगों और जरूरतमंदों के लिए संरक्षण हेतु अनुसूची में निश्चित सभी सुविधाएं प्राप्त करने की पात्रता के लिए अंबेडकर और माउंटबेटन ने अनुसूची (शेड्यूल) में ब्रिटिश शासन के समर्थक रहे समुदायों और भारत में अव्यवस्था करने वाले अपराधी गिरोहों को जाति (कास्ट) और जनजाति (ट्राइब) के रूप में नोट किया। इससे अनुसूचित सुविधाओं की पात्रता वाले अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति बने, किन्तु विकलांगों, जरूरतमंदों को कुछ नहीं दिया गया।

सर्वोच्च न्यायालय द्वारा इसको अवैध घोषित करने पर १९५१ में प्रथम संविधान संशोधन करके उसे सही ठहरा दिया। इसके बाद बच्चू सिंह सीधी राजनीति में आए। १९५२ में जहां नेहरू खुद बूथ-कैप्चरिंग करके चुनाव जीता, वहीं बच्चू सिंह जन-समर्थन से जीते। बच्चू सिंह ने विकलांगों और अन्य जरूरतमंदों के लिए कड़ाई की, तो जरूरतमंदों के लिए केलकर आयोग बनाया गया। इसके पीछे अम्बेडकर ने प्रथम एससी एसटी आयोग से मीणा, भील आदि कई मजबूत जतियों को आरक्षित समूह में शामिल करवाकर जन्म आधारित सुविधा के पक्ष में कर लिया।

लेकिन केलकर ने भी जब विकलांगों आदि की जगह जाट, राजपूत आदि जातियों और अन्य अपराधी समुदायों को नया पिछड़ा वर्ग बना कर आरक्षण देना तय किया, तब बच्चू सिंह को पता चला कि सबको छला गया है। इस धोखे पर जब बच्चू सिंह ने विरोध किया, तो अंबेडकर ने बच्चू सिंह का अपमान किया, इस पर बच्चू सिंह ने उसे गोली मार दी, और धमकाकर केलकर रिपोर्ट रद्द करा दी। १९५७ के चुनावों में आरक्षण की जातियों का वोट न मिलने से बच्चू सिंह पराजित हुए, किन्तु वे डिगे नहीं। बच्चू सिंह ने सामाजिक कार्य संभाला और उनके भाई मानसिंह ने राजनीति।

१९६७ में हाथरस के क्रांतिकारी राजा महेंद्र प्रताप के आह्वान पर बच्चू सिंह मथुरा में रिकॉर्ड मतों से विजयी हुए। उनके प्रभाव में विकलांगों और अन्य जरुरतमंदों की मांग फिर उठी, किन्तु १९६८ में उनके सहयोगी दीनदयाल उपाध्याय की हत्या और १९६९ में रहस्यमय तरीके से बच्चूसिंह की मृत्यु के बाद विकलांगों का तूफान शांत हो गया। (समाप्त)

हास्य-व्यंग्य

टॉयलेट से ताजमहल तक

देवेन्द्र राज सुथार

हमारी सरकार टॉयलेट बनाने पर आमादा है। यूं कहे कि सरकार ने टॉयलेट बनाने का ठेका ले रखा है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जहां जाते हैं, वहां शुरू हो जाते हैं- 'भाईयो और बहनो और मित्रो! टॉयलेट बनाया कि नहीं?' 'जहाँ शौच है, वहां सोच है' सरकार का जब ध्येय होगा, तो एक दिन पूरा देश शौचालय में तब्दील होते देर नहीं लगेगी। लगता तो यह भी है कि सरकार सत्ता में टॉयलेट बनवाने के लिए ही आई है।

प्रधानमंत्री के आह्वान पर सरकारी अध्यापक बच्चों को पढाना छोड़कर घर-घर टॉयलेट है कि नहीं यह पड़ताल करने में लग गये हैं। जैसलमेर जैसे इलाके में सरकार ने टॉयलेट तो बनवा दिये, लेकिन टॉयलेट की टंकी में पानी देना भूल गयी। इस कारण विवश होकर लोगों ने टॉयलेट को किराणा की दुकान ही बना डाला। सरकार की कृपा से टॉयलेट में भी दुकान अच्छी-खासी चल रही है। बहुत से टॉयलेट ऐसे हैं जिनके दरवाजे नहीं हैं, छत नहीं है। नीचे से आदमी और ऊपर से भगवान देख रहा है। सरकार है, कुछ भी कर सकती है।

सत्ता में आने से पहले जो रोजगार देने, महंगाई कम करने, भ्रष्टाचार मिटाने, महिला सुरक्षा, राम मंदिर निर्माण, कालाधन भारत लाने जैसे तमाम वायदे किये थे, अब लगता है सरकार ने टॉयलेट के होल में सारे फ्लश कर दिये हैं। सुबह से लेकर शाम तक, शाम से लेकर रात तक, रात से लेकर सुबह तक, सुबह से फिर शाम तक टॉयलेट निर्माण करो। सरकार का एक ही इरादा बस 'टॉयलेट बनवाओ!' यहां तक कि रात में भी नेता लोग सोते हुए भी ये रट लगाये हुए है 'टॉयलेट बनाओ।' भारत के विश्वगुरु बनने का रास्ता टॉयलेट के अंदर से ही जाता है।

कभी कभार यह भ्रम मस्तिष्क में भ्रमर की गूंज की भांति गुंजन करता है कि मोदी सरकार ने ही टॉयलेट का आविष्कार किया है! इससे पहले तो शायद सृष्टि लोक और भारतवर्ष में टॉयलेट का अस्तित्व ही नहीं था। सरकार ने 'टॉयलेट टॉयलेट' शब्द इतनी बार रिपीट किया कि सरकार के दिमाग में भी टॉयलेट घुस गया। तभी टॉयलेट सरीखी हरकतें सरकार कर रही है। कभी गांधी बनने का स्वांग रचकर चरखा चलाते हुए अपने फोटो का कैलेंडर छपवा रही, तो कभी गांधी को चतुर बनिया कहती नहीं हिचक रही है। इसका पुख्ता ज्वलंत उदाहरण यूपी के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ द्वारा ताजमहल को पर्यटन पुस्तिका से हटा देना है। गंगा-जमुनी संस्कृति की दुहाई देने वाले योगी के काले चश्मे के पीछे आंखें क्या गुल खिलाती हैं यह उदाहरण जग-जाहिर कर देता है।

हुजूर! तनिक तो देश की एकता और सर्व धर्म

(शेष पृष्ठ १४ पर)

(तीसरी किस्त)

छोटी अम्मा की बेटी

सुधीर मौर्य

वह सिर्फ एक लड़की भर नहीं थी बल्कि उसमें स्वर्ग की अप्सरा के गुण भी विद्यामन थे। अभी उसका लड़कपन उसके साथ था। बमुश्किल उसने अब तक सोलह बसन्त ही देखे थे। मेरी उम्र भी उस समय अठारह या उन्नीस होगी। उससे कोई दो या तीन साल मैं बड़ा रहा हूँगा। यानी हम दोनों उम्र के उस पड़ाव पर थे जहाँ आकर्षण प्यार के नाम से दिलो में जगह बना लेता है।

मैं जब केमिस्ट्री की बोरिंग क्लास से निकलकर आता तो गली के मोड़ पर वह अपने गुलाबी होठों पर कोई सुरीला गीत गुनगनाती हुई मेरे इंतजार में खड़ी मिलती। हम प्रायः किसी पार्क के कोने में एक दूसरे का हाथ थामे दुबक जाते और वह मेरी फरमाइश पर मुझे सुरीले गाने सुनाती रहती। मैं उसकी नाव सी आखों में तैरते हुए उसकी पत्थरों को पिघला देने वाली आवाज में गीत सुनते हुए उसके कंधे पर सर टिका देता। और फिर कुछ देर बाद वह अपनी नरम उंगलियों को मेरे बालों में फिराते हुए कहती- 'चलो तपस्वी, अब जाने दो, देखो कितनी देर हो गई है, माँ मेरा इंतजार कर रही होगी।'

मैं उसका हाथ पकड़कर इसरार करता- 'सँजोत तनिक देर और रुक जाओ।' और वह मेरी बात सुनकर मेरे कंधे पे अपना सर रखकर अपनी बोझल पलकों को झपकाकर किसी नादीदों की तरह मुझे यूँ तकने लगती जैसे उसे अगर मैं जाने से न रोकता, तो वह फिर कभी मुझे देख ही नहीं पाती। मैं सँजोत के इश्क में किसी परिंदे की तरह नीले आसमान में उड़ रहा था और सँजोत किसी नीलपरी सी मेरी इस उड़ान में अपने दुपट्टे को मेरे लिए पंख सा इस्तेमाल कर रही थी।

हालाँकि मैं सँजोत से बेपनाह प्रेम में डूबा था, पर मैंने कभी भी अपने इश्क की वजह से अपनी पढ़ाई पे कोई असर पड़ने नहीं दिया। खुद सँजोत मुझे पढ़ने के लिए हमेशा प्रेरित करती रहती थी। पिताजी भी तकरीबन हर महीने मुझसे मिलने आते थे। जब वे आते खुद अपने हाथों से कमरे में मेरी दैनिक प्रयोग की चीजें लाकर रख देते। टूथपेस्ट, साबुन, बालों का तेल, खाने के लिए नमकीन, पेड़े और बिस्किट जैसे न जाने कितने सामान पिताजी लाकर कमरे की अलमारियों में सजा देते। जब तक पिताजी शहर में रुकते वह अपने सामने मुझे बिठाकर कुछ न कुछ खिलाते ही रहते। पढ़ाई के बारे में डिस्कस करते, कई बिन्दुओ पे एडवाईस करते।

वे अक्सर शाम को तनहा घूमने चले जाते और फिर काफी देर में लौटते। मैं जानता था छोटी अम्मा इसी शहर में कहीं रहती हैं। मैं सोचता शायद पिताजी उनसे ही मिलने जाते होंगे। मेरा मन इस ख्याल से खुशी महसूस करता कि पिताजी छोटी अम्मा से मिलने गए होंगे। मैं बहुत याद करने की कोशिश करता पर छोटी अम्मा की सूरत मुझे याद नहीं आती। कभी-कभी सोचता पिताजी से कह दूँ कि अबकी जब वह छोटी अम्मा से मिलने जायें, तो मुझे भी साथ में ले चलें। पर फिर यह ख्याल मुझे ऐसा कहने से रोक लेता कि अगर पिताजी छोटी अम्मा से मिलने नहीं जाते होंगे, अगर पिताजी उनको भुला चुके होंगे, तो कहीं मेरे मुँह से छोटी अम्मा का उल्लेख उन्हें व्यथित न कर दे।

मैं बहते समय के साथ स्नातक के दूसरे वर्ष के इम्तिहान दे चुका था। गर्मियों की छुट्टियों में मैं अपने गाँव में था। न जाने क्यों मुझे पिताजी बेहद परेशान नजर आ रहे थे। वैसे जहाँ तक मैं जानता था पिताजी तो हमेशा ही परेशान रहे थे अपनी जिंदगी में। पर इस बार मैंने उनके चेहरे पे जो परेशानी देखी, वैसी परेशानी मैने उनके चेहरे पर कभी नहीं देखी थी। मेरा मन करता मैं कभी अकेले में उनसे उनकी परेशानी का सबब पूछूं। उनकी परेशानी कम करने की कोशिश करूँ। पर मैं ऐसा कर नहीं पाता। सच कहूं तो आज तक मैंने पिताजी के सामने सर उठाकर एक लफ्ज तक न बोला था। मैं उनके सामने जाकर उनसे उनकी परेशानी की वजह पूछूं, इतनी हिम्मत मैं कभी जुटा ही नहीं पाता।

पिताजी इस बार मुझसे कम ही बात करते। वह सुबह-सुबह ही हवेली से बिना कुछ कहे निकल जाते और रात गहराने के बाद आते। कभी-कभी तो अगले दिन रात ढलने पे घर लौटते। जब वे घर लौटते तो उनके कंधे मुझे पहले से ज्यादा झुके दिखाई देते और चेहरे पे निराशा के बदल नजर आते। मेरी छुट्टियां खत्म हो गईं और शहर जाने से पहले मैं अपने भीतर इतनी हिम्मत नहीं कर सका कि पिताजी से उनकी परेशानी जानने की कोशिश करूँ। मेरे शहर जाने के बाद पिताजी का भी शहर आने का क्रम बढ़ गया।

अब वे कमरे पर ज्यादा नहीं रुकते। प्रायः वे सुबह निकल जाते और देर रात गए लौटते। पिताजी की परेशानी ने मुझे भी परेशान कर दिया था। मेरी इस परेशानी से परेशान होकर सँजोत ने मेरी परेशानी जाननी चाही। पिताजी की हालत के बारे में सँजोत को बताते हुए मेरी आँखों में आंसू के कतरे झिलमिला उठे। अपने दुपट्टे पे मेरे आंसू जज्ब करके अपने नर्म हाथों से मेरा सर और चेहरा सहलाते हुए सँजोत ने मुझे दिलासा दी और मेरी हिम्मत बढ़ाते हुए उसने मुझसे कहा कि मैं तुरंत अपने पिताजी से उनकी परेशानी जानने की कोशिश करूँ। और ये एहसास दिलाऊँ कि उनका बेटा अब उनकी हर परेशानी में उनके साथ खड़ा है।

उस समय शहर में दशहरे की सजावट हो रही थी जब सँजोत के कहने से मैं अपनी पिताजी की तकलीफ जानने के लिए गाँव जाने वाली बस में बैठा था। सँजोत मुझे बस अड्डे तक छोड़ने आई थी। आज वह भी न जाने क्यों मुझे उदास लगी थी। बस चल पड़ी तो मैं खिड़की से सिर बाहर निकालकर उसे देखने लगा। तब तक देखता रहा जब तक वह नजर से ओझल न हो गई। पूरे सफर में मुझे सँजोत की उदासी और पिताजी की परेशानी ही परेशान करती रही। मैं पहले भी कई बार सँजोत से मिलने के बाद गाँव गया था, पर वह कभी यूँ उदास नहीं हुई थी जैसे वह आज उदास थी।

मैं जब घर पहुंचा तो पिताजी अपने कमरे में थे। अपना बैग एक तरफ डालकर मैं उनसे मिलने के लिए सीधा उनके कमरे की ओर गया। अमूमन पिताजी अपने कमरे का दरवाजा खुला रखते हैं, पर आज दरवाजा बंद था। मैंने सोचा शायद पिताजी सो गए, अगर अभी सोये होंगे तो उन्हें जगाना ठीक नहीं। जब जागेंगे तो उनसे आकर मिलूँगा, यह सोचकर मैं वापस जाने के लिए कमरे के दरवाजे के पास से मुड़ा ही था कि मुझे कमरे के भीतर एक तेज स्वर सुनाई दिया। अपने पिताजी की आवाज मैं एक लाख लोगों के बीच में पहचान सकता था और मुझे यकीन था यह तेज स्वर पिताजी का नहीं था। फिर यह तेज आवाज में बात करने वाला कौन है, जानने के लिए मेरे पाँव वहीं ठिठक गए।

मैंने दबे पाँव जाकर तनिक खुली खिड़की की झिर्री पर अपनी आँखें टिका दीं। अंदर का दृश्य देखकर मैं एक बारगी काँप गया। मेरी देह का रोम-रोम क्रोध से खड़ा हो गया था।

अंदर पिताजी हाथ जोड़कर खड़े धीमे-धीमे कुछ कहते और उनके सामने कमर में हाथ रखे मेरी बुआ के लड़के गुस्से में पिताजी को दुत्कारने वाले अंदाज में चिल्लाने लगते। मैं नहीं जानता था कि पिताजी की क्या मजबूरी थी जो वह बुआ के लड़के से यूँ चिरौरी वाले अंदाज में बात कर रहे थे और मेरी बुआ का लड़का जिसे पिताजी ने पढ़ाया-लिखाया था वह पिताजी को तेज आवाज में दुत्कार रहा था। गुस्से की अधिकता से मेरे कांपते पाँव कमरे के दरवाजे पे पहुँचकर भीतर घुसने ही वाला था कि किसी ने मेरा हाथ पकड़ लिया। मैने पलटकर देखा तो संजीवन लाल मेरा हाथ पकड़े हुए थे और अपना सिर हिलाकर विनती करने के अंदाज में मुझे भीतर जाने से रोक रहे थे।

संजीवन लाल प्रौढ़ उम्र के हमारे घर के नौकर थे। भले ही वह हमारे घर में नौकर थे, पर मैं उन्हें बेहद सम्मान देता था। सच कहूँ तो माँ की मौत के बाद पिताजी के आलावा पूरी हवेली में एक संजीवन लाल ही थे जिन्होंने मेरा ख्याल रखा था और मेरी माँ की वजह से मुझसे नफरत नहीं की थी, बल्कि बेहद प्यार दिया था। यद्दिप मेरा खौलता रक्त मुझसे कह रहा था कि मै अभी कमरे में घुसकर पिताजी से तेज आवाज में बात करने वाले बुआ के लड़के का मुँह तोड़ दूँ, पर संजीवन काका के मना करने से मैं ऐसा नहीं कर सका। संजीवन काका मेरा हाथ पकड़कर मुझे अपनी कोठरी में ले आये। खटिया पर बिठाकर उन्होंने मुझे पीने के लिए गिलास में पानी दिया।

(अगले अंक में जारी)

छठ पूजा : लोक आस्था का महाव्रत

मुकेश सिंह

छठ व्रत सूर्य को समर्पित एक विशेष पर्व है। भारत के कई हिस्सों में खासकर उत्तर में इसे महापर्व माना जाता है। यह पर्व आदिकाल से मनाए जाने वाले छठ व्रत में सूर्यदेव और छठी माता की पूजा की जाती है और उनसे अपनी मनोकामना को पूरा करने का वर मांगा जाता है।

लोक मान्यताओं के अनुसार हर वर्ष कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि को मनाए जाने वाले छठ व्रत की शुरुआत रामायण काल से हुई थी। कहा जाता है कि इस व्रत को त्रेतायुग में माता सीता ने तथा द्वापर युग में पांडव पत्नी द्रौपदी ने किया था।

हिन्दू शास्त्रों के अनुसार भगवान सूर्य एक मात्र प्रत्यक्ष देवता हैं। वास्तव में इनकी रोशनी से ही प्रकृति में जीवन चक्र चलता है। इनकी किरणों से धरती में फल, फूल, अनाज उत्पन्न होता है। सूर्य षष्ठी या छठ व्रत भी इन्हीं भगवान सूर्य को समर्पित है। इस महापर्व में सूर्य नारायण के साथ देवी षष्ठी की पूजा भी होती है।

छठ पूजन कथानुसार छठ देवी भगवान सूर्यदेव की बहन हैं और उन्हीं को प्रसन्न करने के लिए भक्तगण भगवान सूर्य की आराधना तथा उनका धन्यवाद करते हुए मां गंगा-यमुना या किसी नदी के किनारे इस पूजा को मनाते हैं।

इस पर्व में पहले दिन घर की साफ-सफाई और शुद्ध शाकाहारी भोजन किया जाता है, दूसरे दिन खरना का कार्यक्रम होता है, तीसरे दिन भगवान सूर्य को संध्या अर्घ्य दिया जाता है और चौथे दिन भक्त उदीयमान सूर्य को अर्घ्य देते हैं। छठ व्रत को लेकर मान्यता है कि यदि कोई निःसंतान इस व्रत को विधिपूर्वक करता है तो उसे संतान की प्राप्ति होती है तथा इस व्रत को करने वाले सभी प्राणियों को समस्त प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

कार्तिक मास की शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि भगवान सूर्य को समर्पित है। बिहार और पूर्वांचल के निवासी जहां भी हैं वे सूर्य भगवान की पूजा करते हैं। यही कारण है कि आज यह पर्व बिहार और पूर्वांचल की सीमा से निकलकर देश-विदेश में मनाया जाने लगा है। चार दिनों तक चलने वाला यह पर्व बड़ा ही कठिन है। इसमें शरीर और मन को पूरी तरह साधना पड़ता है।

पौराणिक मान्यताओं के अनुसार भगवान राम सूर्यवंशी थे और उनके कुल देवता सूर्यदेव थे। इसलिए जब वे लंका से रावण वध करके अयोध्या लौटे, तो अपने कुलदेवता का आशीर्वाद पाने के लिए उन्होंने देवी सीता के साथ षष्ठी तिथि का व्रत रखा और सरयू नदी में डूबते सूर्य को फल, मिष्टान एवं अन्य वस्तुओं से अर्घ्य प्रदान किया। सप्तमी तिथि को भगवान राम ने उगते सूर्य को अर्घ्य देकर सूर्य देव का आशीर्वाद प्राप्त किया। इसके बाद राजकाज संभालना शुरु किया। इसके बाद से आम जन भी सूर्यषष्ठी का पर्व मनाने लगे।

अन्य एक मान्यता के अनुसार महाभारत का एक प्रमुख पात्र है कर्ण, जिसे दुर्योधन ने अपना मित्र बनाकर अंग देश (भागलपुर) का राजा बना दिया था। अंगराज कर्ण के विषय में कथा है कि वे पाण्डवों की माता कुंती और सूर्य देव की संतान थे। कर्ण अपना आराध्य सूर्यदेव को मानता था। वह सदा नियम पूर्वक कमर तक पानी में खड़ा होकर सूर्य देव की आराधना करता था। माना जाता है कि कार्तिक शुक्ल षष्ठी और सप्तमी के दिन कर्ण सूर्य देव की विशेष पूजा किया करता था। अपने राजा की सूर्य भक्ति से प्रभावित होकर अंग देश के निवासी भी सूर्य देव की पूजा करने लगे। और फिर धीरे-धीरे सूर्य पूजा का विस्तार पूरे बिहार और पूर्वांचल में हो गया।

एक अन्य कथा के अनुसार एक राजा प्रियव्रत थे उनकी पत्नी थी मालिनी। राजा रानी निःसंतान होने से बहुत दुःखी थे। उन्होंने महर्षि कश्यप से पुत्रेष्ठि यज्ञ करवाया। यज्ञ के प्रभाव से मालिनी गर्भवती हुई, परंतु नौ महीने बाद जब उन्होंने बालक को जन्म दिया तो वह मृत पैदा हुआ। प्रियव्रत इस से अत्यंत दुःखी हुए और आत्म हत्या करने हेतु तत्पर हुए।

प्रियव्रत जैसे ही आत्महत्या करने वाले थे उसी समय एक देवी वहां प्रकट हुईं। देवी ने कहा प्रियव्रत मैं षष्ठी देवी हूं। मेरी पूजा आराधना से पुत्र की प्राप्ति होती है, मैं सभी प्रकार की मनोकामनाएँ पूर्ण करने वाली हूं। अतः तुम मेरी पूजा करो तुम्हें पुत्ररत्न प्राप्त होगा। राजा ने देवी की आज्ञा मानकर कार्तिक शुक्ल षष्ठी तिथि को देवी षष्ठी की पूजा की, जिससे उन्हें पुत्र की प्राप्ति हुई। उसी दिन से छठ व्रत का अनुष्ठान चला आ रहा है।

इस त्यौहार को बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश एवं भारत के पड़ोसी देश नेपाल में हर्षोल्लास एवं नियम निष्ठा के साथ मनाया जाता है। इस त्यौहार की यहां बड़ी मान्यता है। इस महापर्व में देवी षष्ठी माता एवं भगवान सूर्य को प्रसन्न करने के लिए स्त्री और पुरुष दोनों ही व्रत रखते हैं। व्रत चार दिनों का होता है पहले दिन यानी चतुर्थी को आत्म शुद्धि हेतु व्रत करने वाले केवल अरवा खाते हैं यानी शुद्ध आहार लेते हैं। पंचमी के दिन खरना होता है अर्थात इस दिन सभी व्रतधारी स्नान करके पूजा पाठ करके संध्या काल में गुड़ और नये चावल से खीर बनाकर फल और मिष्टान्न से छठी माता की पूजा करते हैं। फिर व्रत करने वाले कुमारी कन्याओं को एवं ब्राह्मणों को भोजन करवाकर इसी खीर को प्रसाद के रूप में ग्रहण करते हैं। तत्पश्चात षष्ठी के दिन घर में पवित्रता एवं शुद्धता के साथ उत्तम पकवान बनाये जाते हैं। संध्या के समय पकवानों को बड़े बडे बांस के डालों तथा टोकरियों में भरकर नदी, तालाब, सरोवर आदि के किनारे ले जाया जाता है।

फिर व्रत करने वाले भक्त उन डालों को उठाकर डूबते सूर्य एवं षष्ठी माता को अर्घ्य देते हैं। और फिर सूर्यास्त के पश्चात लोग अपने अपने घर आ जाते हैं। छठ व्रत के दौरान रात भर जागरण किया जाता है और सप्तमी के दिन सुबह ब्रह्म मुहूर्त में पुनः संध्या काल की तरह डालों में पकवान, नारियल, केला, मिठाई भर कर नदी तट पर लोग जमा होते हैं। व्रत करने वाले सभी व्रतधारी सुबह के समय उगते सूर्य को अर्घ्य देते हैं। अंकुरित चना हाथ में लेकर षष्ठी व्रत की कथा कही और सुनी जाती है। कथा के बाद प्रसाद वितरण किया जाता है और फिर सभी अपने-अपने घर लौट आते हैं। तथा व्रत करने वाले इस दिन पारण करते हैं।

इस पर्व के विषय में मान्यता है कि षष्ठी माता और सूर्य देव से इस दिन जो भी मांगा जाता है वह मनोकामना पूरी होती है। इस अवसर पर मनोकामना पूरी होने पर बहुत से लोग सूर्य देव को दंडवत प्रणाम करते हैं। सूर्य को दंडवत प्रणाम करने का व्रत बहुत ही कठिन होता है, लोग अपने घर में कुल देवी या देवता को प्रणाम कर नदी तट तक दंड देते हुए जाते हैं। दंड प्रक्रिया के अनुसार पहले सीधे खडे होकर सूर्य देव को प्रणाम किया जाता है फिर पेट की ओर से जमीन पर लेटकर दाहिने हाथ से जमीन पर एक रेखा खींची जाती है। यही प्रक्रिया नदी तट तक पहुंचने तक बार बार दुहरायी जाती है।

दिवाली के ठीक छह दिन बाद मनाए जानेवाले इस महाव्रत की सबसे कठिन और साधकों हेतु सबसे महत्त्वपूर्ण रात्रि कार्तिक शुक्ल षष्ठी की होती है, जिस कारण हिन्दुओं के इस परम पवित्र व्रत का नाम छठ पूजा पड़ा। चार दिनों तक मनाया जानेवाला सूर्योपासना का यह अनुपम महापर्व मुख्य रूप से बिहार, झारखंड, उत्तरप्रदेश सहित सम्पूर्ण भारतवर्ष में बहुत ही धूमधाम और हर्षोल्लास से मनाया जाता है। इस साल छठ पर्व २४ अक्टूबर से २७ अक्टूबर तक मनाया गया। ■

ग़ज़ल

तेरा मिलना कितना सुहाना लगता है
मुझसे रिश्ता सदियों पुराना लगता है
देखा जब से तेरे आँखों में सनम
दिल इश्क में दीवाना लगता है
फिजा में फूल बिखरे चाहत के
मौसम-ए-बहार मस्ताना लगता है
दरम्यां लाख फासले तेरे-मेरे
दिल में आशियाना लगता है
दर्द-ए-इश्क से राहत मिलती
वफा में दिखे परवाना लगता है
लब खामोश दिल परेशां साहिब
तड़प में जीते हुए जमाना लगता है
सांसो से उतर दिल में समाये
नंदिता का तुझमें ठिकाना लगता है

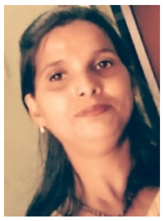

-- नंदिता तनुजा

बातों में बात

गुरमेल सिंह भमरा, लंदन

बात १९५२-५३ की होगी जब फिल्म आवारा आई थी। उसमें राजकपूर ने ऊंची पैंट पहनी हुई थी, जो कुछ ऊपर को फोल्ड की हुई थी। गाँव के कुछ लड़कों ने भी इसकी नकल करनी शुरू कर दी थी। गाँवों के लड़के उन दिनों ज्यादा पाजामे ही पहनते थे, चार पांच लड़के ही थे जो मैट्रिक की पढ़ाई के लिए फगवाड़े जाने लगे थे। यही लड़के राजकपूर की पैंट की नकल करते थे। गाँव के आम लड़के और बजुर्ग इन लड़कों को देख-कर हंसा करते थे और उनका मजाक उड़ाया करते थे।

एक दिन किसी के घर में कोई धार्मिक समागम था। इस घर के दो लड़के राज कपूर जैसी पैंटें पहने हुए इधर-उधर टौहर से घूम रहे थे। उन की तरफ देखकर एक बजुर्ग उन लड़कों से बोला, "बई जवानो, जो पैसे तुमने इन पैंटों पे खर्च किये हैं, उनसे यह दीवार ही बना लेते जो कच्ची ईंटों की बनी हुई है, जो पुरानी और खस्ता हालत में है, कभी भी बारिश से गिर सकती है और नीचे कोई आ सकता है!' बुजुर्ग की बात सुनकर सभी लोग हंस पड़े। बात गई आई हो गई।

कुछ दिन बाद जोर की बारिश हुई और उस बजुर्ग का कहना सच हो गया। दीवार जोर से गिर गई। लोग इकट्ठे हो गए, एक बच्चा उस दीवार के पास से गुजरा ही था, कुछ सैकंड देर हो जाती तो बच्चा नीचे आ सकता था। सभी ने परमात्मा का शुक्र मनाया कि बच्चा बाल-बाल बच गया।

कुछ देर पहले मुम्बई के स्टेशन के एक ओवर ब्रिज क्रॉसिंग पर २२ लोग मारे गए और बहुत से जख्मी हो गए। अब मैं भी बजुर्ग हूँ, सरकार से कहता हूँ, भाई यह बुलेट ट्रेन फिर बना लेना, पहले अंग्रेजों के छोड़े हुए क्रॉसिंग ब्रिज तो रिपेयर कर लो ताकि और किसी की जान न चली जाए। ■

(पृष्ठ ५ का शेष)

एक हृदयरोग विशेषज्ञ की खरी बातें

जा सकती है। जबकि हमें पूरे मानव शरीर को एक सम्पूर्ण इकाई मानना चाहिए और उसका पूरे का इलाज करना चाहिए। नहीं तो हम एक अंग के इलाज में प्रयोग की गयी दवा के साइड इफैक्ट को किस तरह समझा सकते हैं जिससे दूसरे अंग प्रभावित हो रहे हैं?'

४० से अधिक पुस्तकों के लेखक डॉ हेगड़े दवाओं के वैकल्पिक रूपों जैसे आयुर्वेद का भी समर्थन करते हैं। आयुर्वेद के संस्त पाठ्य का संदर्भ देते हुए वे बताते हैं कि कोई भी इलाज किस प्रकार अनिवार्य रूप से समग्र अर्थात् सम्पूर्ण होना चाहिए। वे कहते हैं- 'दुर्भाग्य से आयुर्वेद को पीछे की सीट पर धकेल दिया गया है, यद्यपि यह चिकित्सा की परम्परागत और समृद्ध प्रणाली है।'

'जिस वातावरण में आप रहते हैं उससे स्वास्थ्य बनता है और शरीर के वातावरण से मस्तिष्क बनता है। आप जो खाते हैं वह नहीं, बल्कि जो विचार आपको खाते हैं वे ही आपको मार देते हैं। मूलमंत्र यह है कि आप सकारात्मक विचारों की ही खेती करें और हमेशा सकारात्मक भावनाओं से घिरे रहें। क्वांटम हीलिंग चिकित्सा की नई पद्धति है। आपका मस्तिष्क आपकी चिकित्सा कर सकता है।' वे अमित गोस्वामी द्वारा लिखित पुस्तक क्वांटम डॉक्टर पढ़ने का सुझाव देते हैं।

डॉ हेगड़े आजकल के शहरी युवाओं में फैले हुए फिटनेस के पागलपन का विरोध करते हैं, जो इस विश्वास से चल रहा है कि फिटनेस से अच्छा स्वास्थ्य बनता है। 'स्वास्थ्य मस्तिष्क का विषय है, जबकि फिटनेस केवल माँसपेशियों की वस्तु है। ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं जिनको भ्रम से एक ही समझ लिया जाता है। यदि कोई व्यक्ति मैराथन में दौड़ने में सक्षम है, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वह स्वस्थ जीवन जीने में भी सक्षम है।'

'रोग का अभाव भी स्वास्थ्य नहीं है, क्योंकि हम सभी को रोग होते हैं। हम सबके शरीर में हर समय सौ से अधिक कैंसर कोशिकायें होती हैं, लेकिन उनसे कैंसर रोग नहीं बनता, क्योंकि वे कोशिकायें अपने आप मर जाती हैं।' आयुर्वेद का एक श्लोक सुनाते हुए डॉ हेगड़े ने स्वास्थ्य की परिभाषा 'कर्म और प्रेम के लिए उत्साह' के रूप में दी। 'स्वयं में उत्साह बनाये रखिए, सकारात्मकता को पुष्ट कीजिए और नकारात्मकता को काट-छाँट दीजिए। ऐसा करने पर आप स्वस्थ रहेंगे।' यह उनका सरल मंत्र है।

डॉ हेगड़े उस पद्धति से इलाज करते हैं जिसको वे 'समन्वित चिकित्सा' कहते हैं अर्थात् भविष्योन्मुखी और स्वयं चिकित्सा। वे कहते हैं- 'मैं विभिन्न चिकित्सा प्रणालियों से तत्व लेता हूँ। उदाहरण के लिए, आधुनिक चिकित्सा प्रणाली से मैं आपात्कालीन देखभाल और निवारक शल्य चिकित्सा लेता हूँ। मैं रोगियों को ढेर सारी दवायें नहीं देता और अनावश्यक इलाज नहीं करता।'

आधुनिक चिकित्सा प्रणाली को अनन्य और न्यूनकारी कहते हुए डॉ हेगड़े उनकी ट्रायल-एंड-एरर विधि की कठोर आलोचना करते हैं जिसमें रोगियों पर बार-बार स्कैन, दवायें और जाँच डाली जाती है। शाकाहारी होने के कारण डॉ हेगड़े परम्परागत विधि से तैयार और स्थानीय तौर पर उगाये गये भोजन को ग्रहण करने का सुझाव देते हैं। 'हमें वही खाना चाहिए, जो हमारे पूर्वज खाया करते थे। मदुराई (दक्षिण भारत का एक नगर) में भूमध्य रेखा का भोजन करना आपके शरीर के लिए अनुकूल नहीं होगा। वहीं पर उगाये गये ताजा फलों और सब्जियों को खाइए तथा पीढ़ियों से चले आ रहे पकवानों का आदर कीजिए।' ■

(पृष्ठ २२ का शेष)

मित्रता की एक तस्वीर

उसके दोनों बच्चे पानी में गिर गए। एक आठ वर्ष का और एक चार वर्ष का था। वह बेहाल चीखती रह गयी। उसका पति बच्चों को बचाने के लिए खुद भी कूद गया। बच्चे तो नहीं मिले, बाद में वह न्यूमोनिया से मर गया। लूसी अपना दिमागी संतुलन खो बैठी। अनेक देशों की राजनैतिक बहसों में उलझती-लटकती वह किसी तरह अमेरिका आ पहुंची। यहां वह सफाई आदि का काम कर देती थी। कुछ वर्षों में उसे अंग्रेजी भाषा लिखनी-पढ़नी आ गयी मगर वह किसी से भी बोलने में डरती थी, अतः अंग्रेजी भाषा में संवाद बहुत कम कर पाती थी।

भानु बेन से दोस्ती हो गयी तो उसने प्रस्ताव रखा कि वह उनके घर के बाहर वाला घास का टुकड़ा भी सजाना चाहती है। भानु ने पूछा उसे क्यों इतना कठिन काम अच्छा लगता है। वह बोली कि उसका सब कुछ भगवान् ने वापिस ले लिया मगर बदले में उसे एक नया देश और भले लोग दे दिए। अब जो मिट्टी उसका पोषण कर रही है उसका उधार भी तो उसे चुकाना चाहिए। यह शौक या स्वार्थ नहीं है यह प्रत्युपकार है। अतः उसका कर्तव्य है कि वह भी उस देश की मिट्टी को कुछ दे।

यह वर्षों पूर्व की बात है। बाद में लूसी से एक अध्यापक ने विवाह कर लिया जो अमेरिकन है। उनके दो बेटे हैं। अध्यापक ने उन दोनों बच्चों के नाम लूसी के पहलेवाले बेटों के नाम पर रखे है। और वह स्वयं भी बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया है। ■

(पृष्ठ २१ का शेष)

सीखना जीवनभर है

सबसे प्रमुख भाषा बनती जा रही है। अंग्रेजी का ज्ञान शिक्षित होने का पर्याय बनता जा रहा है। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हो रही है और उन्हें हीनभाव से देखा जा रहा है। हम यह भूल जाते हैं कि अंग्रेजी जाननेवाला व्यक्ति भी मानसिक रूप से अविकसित हो सकता है। जब ऐसे लोगों के हाथ में देश का नेतृत्व आ जाता है तो राष्ट्रीय जीवन के सभी क्षेत्रों में गिरावट अवश्यंभावी है। आज हमारा देश सभी क्षेत्रों में नकलचियों का देश बनकर रह गया है।

पचास-एक वर्ष पूर्व जे. कृष्णमूर्ति ने हताशा के स्वर में पूछा था, 'इस देश की सृजनशीलता को क्या हो गया है?' प्राचीन काल में जब संसार के अधिकांश देशों का अस्तित्व भी नहीं था, न विकास का कोई माडल विद्यमान था, हमारे पूर्वजों ने अपनी भाषा संस्कृत के माध्यम से मानव जीवन के गहनतम रहस्यों को खोज लिया था, जो आज भी मनुष्यजाति के मार्गदर्शक हैं।

एक विदेशी भाषा के अनुपातहीन महत्त्व ने हमारी अपनी भाषाओं की उपेक्षा की हुई है और फलस्वरूप भारतीय मेधा का विकास रुक गया है। अंग्रेजी पर अधिक ध्यान केन्द्रित होने के कारण हम संसार की अन्य भाषाओं की उपेक्षा कर रहे हैं। किसी भी देश की संस्कृति को उसकी भाषा के माध्यम से ही समझा जा सकता है। अन्य विदेशी भाषाएँ न जानने के कारण हम अन्य देशों से गहरे संबंध नहीं बना पा रहे हैं। ■

अवयस्क पत्नी के साथ यौन संबंध बनाना दुष्कर्म

नई दिल्ली। सर्वोच्च न्यायालय ने एक फैसले में स्पष्ट किया है कि १८ साल से कम उम्र की पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने को दुष्कर्म माना जाएगा।

इस फैसले के साथ न्यायालय ने आपराधिक कानून के उस नियम को खारिज कर दिया, जिसके तहत १५ से १८ साल की उम्र की पत्नी के साथ यौन संबंध बनाने की अनुमति दी गयी थी। सुप्रीम कोर्ट ने आईपीसी की उस धारा को असंवैधानिक बताया है, जिसके अनुसार १५ से १८ साल की बीवी से उसका पति संबंध बनाता है तो उसे दुष्कर्म नहीं माना जाएगा। हालांकि, बाल विवाह कानून के अनुसार शादी के लिए महिला की उम्र १८ साल से कम नहीं होनी चाहिए।

यदि नाबालिग पत्नी एक साल के भीतर शिकायत करती है, तो पति पर बलात्कार का मुकदमा चलेगा। सुप्रीम कोर्ट ने कहा कि सती प्रथा भी सदियों से चली आ रही थी, लेकिन उसे भी खत्म किया गया, जरूरी नही जो प्रथा सदियों से चली आ रही हो वह सही हो। ■

(पृष्ठ ८ का शेष) **प्लास्टिक कचरा...**

कैसे मिल सकती है? आज यह सबसे बड़ा सवाल है। इसका एक मात्र उत्तर यह है कि हमें चैतन्य शक्ति का जागरण करके स्वच्छ वातावरण के लिए प्लास्टिक कचरे से मुक्ति पानी है। अगर हम ऐसा कर सके तो यह तय है कि हमारा देश फिर से शुद्ध हवा प्रदान करने वाला देश बन जाएगा। इसके लिए सरकार की योजनाओं में हमें भी पूरी तरह से सहभागी बनना होगा। ■

कार्टून -- श्याम जगोता

वर्षा वार्ष्णेय सम्मानित

नई दिल्ली। दि. १० सितम्बर १७ को दिल्ली पब्लिक लाइब्रेरी में आगमन स्थापना दिवस के शुभ अवसर पर साझा काव्य संग्रह 'संदल सुंगध' का विमोचन समारोह और काव्य पाठ का भव्य आयोजन हुआ। समारोह में देश विदेश के वरिष्ठ एवं नवोदित रचनाकारों का अदभुत संगम था। इसमें अनेक रचनाकारों को सम्मानित किया गया। जय विजय से जुड़ी हुई रचनाकार सुश्री वर्षा वार्ष्णेय को भी इस समारोह में काव्य पाठ करने के साथ-साथ मंच पर सम्मानित होने का भी गौरव प्राप्त हुआ।

नई राहें तलाशकर अपनी मंजिल पर पहुंची महिलाओं का हुआ सम्मान

राजस्थान की राजधानी जयपुर में १६ सितंबर की शाम को इण्डियन ट्रेलब्लेजर वीमन अवॉर्ड समारोह तोतूका भवन में सम्पन्न हुआ, जिसमें ४१ महिलाओं को विविध क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान के लिए सम्मानित किया गया। इसके साथ ही भव्य फैशन शो भी हुआ।

इस समारोह में जय विजय की रचनाकार सुश्री वर्षा वार्ष्णेय भी 'साहित्य साधना' के लिए सम्मानित होनेवाली महिलाओं में शामिल थीं. उनको डॉ चन्द्रकला माथुर (सीनियर प्रोफेसर, एस एम एस मेडिकल कालेज) तथा सुमन शर्मा (अध्यक्ष, महिला आयोग, राजस्थान) के कर कमलों द्वारा सम्मानित किया गया। इस आयोजन के अध्यक्ष डॉ नीरज माथुर रहे । ■

कार्टून जैसा देश वैसा वेष, यह है कांग्रेस -- मनोज कुरील

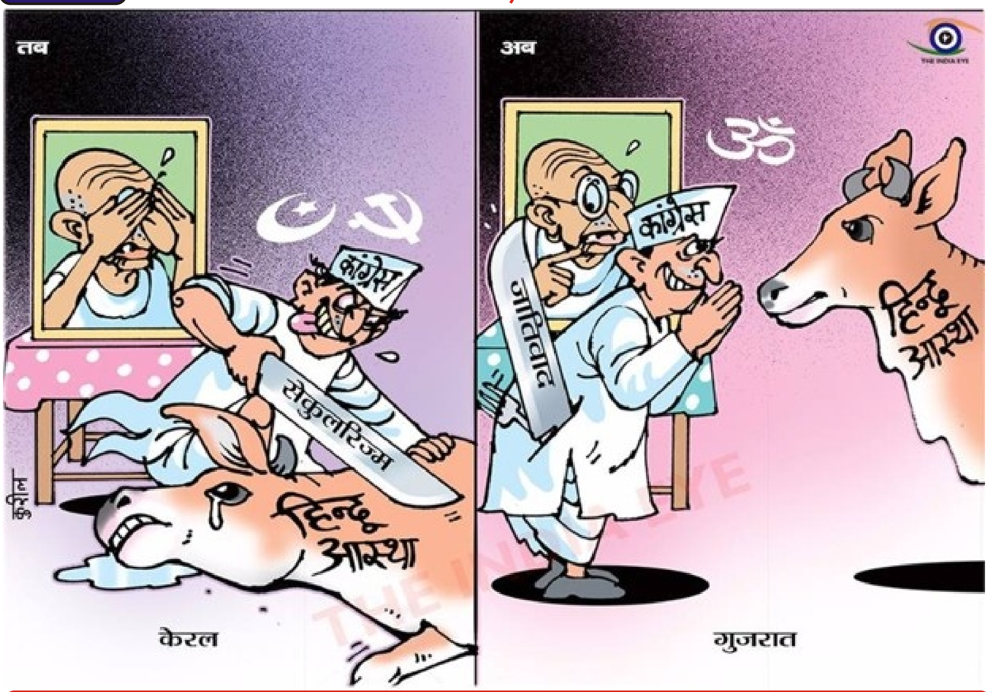

जय विजय मासिक

कार्यालय- ए-१०७, इलाहाबाद बैंक अधिकारी आवास, हजरतगंज चौराहा, लखनऊ-२२६००१ (उप्र)

मोबाइल-9919997596; ई-मेल-jayvijaymail@gmail.com; वेबसाइट-www.jayvijay.co

सम्पादक- विजय कुमार सिंघल

'जय विजय' का नेट संस्करण ई-मेल से निःशुल्क भेजा जाता है। रचनाओं में व्यक्त किये गये विचार सम्बंधित रचनाकारों के हैं। उनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।